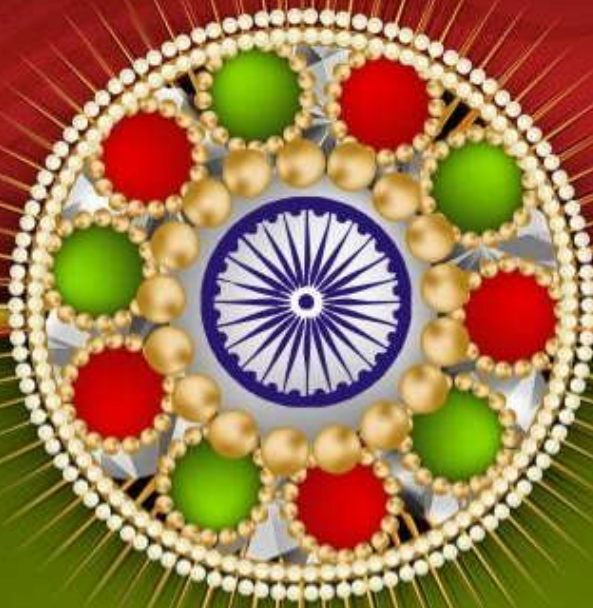


मासिक

jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

अगस्त-2015 वर्ष : 10, अंक : 3



बधाई बधाई

सौ. रुपाली नीतिन नागर

को
पुत्र रत्न
प्राप्ति
पर बधाई



शुभाकांक्षी

समस्त नागर परिवार, भाटगली

मा. भव्य नागर का सुयश

मा. भव्य (सुपुत्र-सौ. मीनाक्षी-राज नागर) कक्षा तीसरी ने इंटरनेशनल इंग्लिश ओलम्पियाड (14-15) में स्वर्ण पदक तथा नेशनल इंटरैक्टिव मेथ्स ओलम्पियाड (14-15) में भाग लेकर सिल्वर मेडल प्राप्त किया। मा. भव्य ने महात्मा गाँधी राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार संस्था द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा बोध परीक्षा में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी उपलब्धि से नागर समाज परिवार एवं विद्यालय गौरवान्वित हुआ।



चिरायु

सुपुत्र : सौ. साक्षी-हर्ष-मेहता

१० अगस्त



जन्मदिवस की बधाई

शुभेच्छु : दादा-दादी, नाना-नानी, बुआ-फुफाजी, मामा-मामी, मौसी-मौसाजी, पापा-मम्मी, सभी भाई-बहन एवं समस्त मेहता परिवार और प्यारी बहना गौरांगी मेहता, इन्दौर, मो.: 94250-59423

अंकित और मेघना

को परिणय बंधन की बधाई समाजसेवी श्री प्रमोद त्रिवेदी एवं सौ. कां. मधु त्रिवेदी के सुपुत्र चि. अंकित का शुभविवाह सौ. कां. मेघना (रतलाम) के साथ 20-4-2015 को सम्पन्न हुआ। परिवार तथा समाजजन इस मंगल अवसर पर अपनी शुभकामनाएँ तथा आशीर्वाद देते हैं। शुभाकांक्षी- त्रिवेदी परिवार उज्जैन एवं भट्ट परिवार नडियाद गुजरात

संस्थापक



श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रमा शर्मा

प्रेरणा स्रोत



श्री गोवर्धनलालजी मेहता श्री विष्णुप्रसादजी नागर

प्रेरणा स्रोत-पं. कान्ताप्रसादजी नागर (दास्ताखेड़ी)

संरक्षक

- पं श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
- पं श्री आर.के.झा, कोलकाता
- पं श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुंबई
- पं श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
- पं श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
- पं श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
- पं श्री सुभाष व्यास, भोपाल
- पं श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
- पं श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
- पं श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
- पं श्री दिनेश शर्मा, इटावा (तराना)
- पं श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रभाव संपादक

सौ.संगीता दीपक शर्मा

संपादक

सौ.दिव्या अमिताभ गंडलोई

सौ. दमिता बबील झा

-वितरण एवं शिकायत

दीपक शर्मा

94250-63129

-विज्ञापन-

पवन शर्मा

98260 95995

सम्पादक वाणी...

संस्कार की सम्पत्ति



आज भौतिक समृद्धि की दौड़ में सब भागे जा रहे हैं। यह दौड़ इतनी तेज है कि संस्कार, सिद्धांत एवं जीवन के वास्तविक लक्ष्य बहुत पीछे छूट गये हैं। पिता सोचता है कि मैं अपने बेटों के लिए इतनी सम्पत्ति छोड़ दूँ कि वे अपना जीवन सुखमय बीता सके। कहीं-कहीं ये पीढ़ियों तक की खाहिश है, आम बातचीत में कहा भी जाता है कि उन्होंने इतना कमाया है कि सात पीढ़ी बैठे-बैठे खाए। वास्तव में आज आदमी जीवन को सुखमय बनाने के चक्कर में इतनी भागदौड़ में लगा है कि वह जीवन का वास्तविक लक्ष्य भूल ही चुका है, थोड़ी देर के लिए मान लें कि शास्त्रों का यह कथन मनुष्य को भयाक्रांत करने के लिए हो कि 84 करोड़ यौनियों के बाद मनुष्य योनी प्राप्त होती है। इसी के साथ मनुष्य सात जन्म के फेर में ऐसे पड़ा रहता है कि मानो सात जन्म तो तय है। इसी प्रकार वह सम्पत्ति के मामले में सात पुश्तों की तैयारी करना चाहता है। जबकि उसे वर्तमान जीवन को आदर्श रूप से जीने का प्रयत्न करना चाहिए और वास्तव में यदि छोड़ना है तो संस्कार की सम्पत्ति अपनी पीढ़ियों के लिए छोड़ना चाहिए, जिसका नाश नहीं होता। कुछ ऐसा हो कि स्वयं का जीवन आदर्श रूप में जीया जाए तथा आगे की पीढ़ी को संस्कारों का हस्तांतरण किया जाए। चूंकि सम्पत्ति और आदर्श एक साथ नहीं कमाए जा सकते, यदि कमाए जाएं तो दोनों चीजें छोड़ जाने पर हमें कोई आपत्ति नहीं है, अपनी बात को प्रभावी बनाने के लिए यहाँ दिवंगत धीरुभाई अंबानी का उदाहरण देना चाहूंगी, उन्होंने पेट्रोल पंप की नौकरी करते-करते इतना बड़ा एम्पायर खड़ा किया कि पूरी दुनिया आज चकित है, वे अपने बेटों को सब सौंप गए, परन्तु सम्पत्ति के साथ यदि उनको संस्कार भी मिले होते तो वे आपस में झगड़ते नहीं। कहने का मतलब है कि कई बार बहुत सारी सम्पत्ति भी विवाद का कारण बन जाती है। आज प्रत्येक व्यक्ति इस बाहरी समृद्धि के फेर में पड़ा है, इतना कि उनकी संतानों की जेब तो नोटों से भरी है, परन्तु आचरण रिक्त है, खाली है, संस्कार-विहिन है। बहरहाल वे स्वयं का जीवन तो व्यर्थ गंवा ही रहे हैं, आगे की पीढ़ी को भी अर्थहीन, बना रहे हैं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य कुछ समय अवश्य निकाले, जिसमें खुद के लिए भी क्षण हो तथा संतान के लिए भी। वैसे तो जीवन इतना आदर्शवादी होना चाहिए कि संतान आचरण से ही प्रेरित हो सके। संतान क्या और भी अनेक लोग होंगे। इतना आदर्शवादी न भी हो तो मौखिक रूप से सद्गुण तो दिए ही जा सकते हैं। कोशिश यह की जाए कि हमारे सात जन्म हो या न हो, परन्तु हमारी आगामी पुश्ते संस्कारवान जरूर हो।

-संगीता दीपक शर्मा

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क : अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002

फोन : 0731-2450018, मो.94250-63129, 98260-95995, 99262-85002

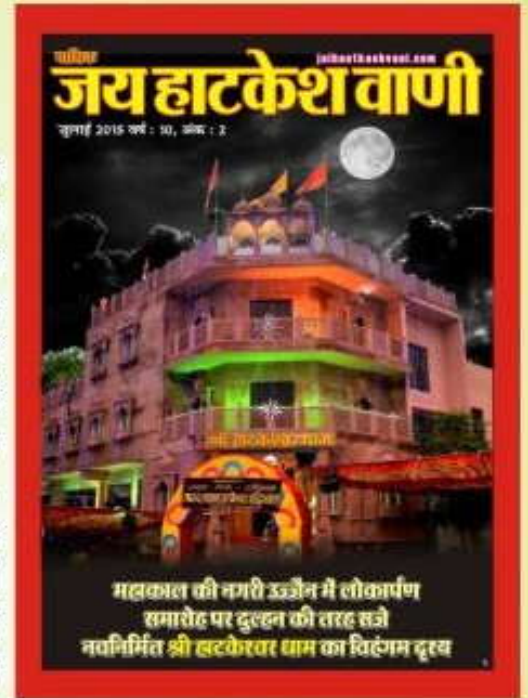
Website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

समाज के घर-घर में नहीं, दिल में...

बात की शुरुवात यूं कि अब आपकी लोकप्रिय जय हाटकेश वाणी प्रतिमाह 3 तारीख को डाक में दी जाएगी, अतः अपनी प्रकाशन सामग्री 25 तारीख के बजाय 20 तक ही भिजवाने का कष्ट करें। ज्ञातव्य है कि 'वाणी' में समाज के पाठकों द्वारा भेजी गई प्रकाशन सामग्री को ही बहुरंगी साज-सज्जा के साथ प्रस्तुत किया जाता है। शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक प्रगति से सम्बंधित सामग्री का इसमें विशेष ध्यान रखा जाता है। खास बात यह है कि सूचनाओं को सहेजने एवं प्रकाशन कर समाज में भेज देने के अलावा समाजबंधुओं से व्यक्तिगत रूप से जुड़ा रहना हमें 'विशेष' बनाता है। यहां समाज के घर-घर में पहुंचने की होड़ नहीं है, समाजजनों के दिल तक पहुंचने का लक्ष्य है। इसीलिए समाजबंधुओं में एक किताब के प्रकाशक नहीं, अपने घर का सदस्य ही मानते हैं। यही कारण है कि कहीं किसी को किसी के बारे में कोई जरूरत है तो वे हमें बताने में हिचकते नहीं हैं। वाणी में प्रकाशित वैवाहिक सूचनाओं के माध्यम से रिश्ते तय करने से पूर्व भी वे अलग से फोन पर सम्पर्क कर हमसे राय जरूर लेते हैं, यह विश्वसनीयता का प्रमाण है।

समाजजन हम पर इतना अधिकार समझते हैं कि उन्हें मौखिक चर्चा में संकोच नहीं होता। वास्तव में जय हाटकेश वाणी का प्रसार करने में इन समाजबंधुओं का ही सहयोग रहा है। हमने कभी नहीं चाहा कि समाज के घर-घर में जगह बनाएं, जहाँ तक हो सके समाजजनों के दिल में जगह बनाएं उनके सुख-दुःख में शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर जुड़े रहे। मुखपत्र, नहीं वे मौखिक रूप से हमें कुछ कहने में झिझके नहीं, शिकयत, सुझाव के लिए वे हमें अपना बंधु समझकर कह सके। हम उन्हें इसके लिए 'अधिकृत' करना चाहेंगे जब समाज संबंध कोई कार्य हो, सेवा की कोई बात हो तो वे एकमात्र हमें ही स्मरण करें, यही हमारी उपलब्धि है, सबसे बड़ा पुरु कार है।

-सम्पादक



सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित)

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूं। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चेक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूं। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड, (गोराकुण्ड) इंदौर में खाता क्रमांक- 0325201004027 में जमा किया है।



www.haatkeshvani.com

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इंदौर-452002

फोन- 0731-2450018/मो. 99262-85002/99265-63129

Email : jayhotkeshvani@gmail.com/ manibhaisharma@gmail.com

नागर रीति-रिवाजों की नदियों से भरा...सागर...

नागर समाज ना विधि-विधान नो दस्तावेज (रीति-रिवाज) गुजराती भाषा में प्रकाशित करने हेतु श्रीमती अंजनी अम्बरीश पंड्या ने स्कन्धपुराण से लेकर गौरवशाली नागर संस्कार, आपणा नागरो नागर नव्लु नजराणु, षोडस संस्कार कौमुदी, नागरबंधु अने संस्कार विधि और इलेस्ट्रेटेड विकली अक्टूबर 1972 के लेख 'द नागर ऑफ गुजरात' सहित अन्य पुस्तकों का जिस तरह उपयोग किया है, यह भागीरथी प्रयास सराहनीय है। अमेरिका में स्थायी निवास करने वाली लेखिका का मातृभूमि राष्ट्रप्रेम के साथ समाज के लिए कुछ करने की ललक प्रशंसनीय है। हम नागर समाजजन अपनी गौरवशाली परम्परा, संस्कार, संस्कृति, सौजन्य और पवित्र चारित्र्य को भूले बिसरे गीतों की कर्णप्रिय धुनों की तरह गुनगुनाते रहते हैं, परन्तु उसके अनुपालन में कंजूसी कर जाते हैं। 'कुपुत्रों जायेतद् कवचित् कुमाता न भवति' की स्तुति को भी कुछ परिवार बच्चे तो बच्चे हैं, माता को गर्भ से ही लात मारते आ रहे हैं, कहकर उनकी उच्छृंखलता को बढ़ावा देते हैं ऐसे में वह संस्कारों का अनुपालन कैसे करेगा?

लेखिका ने अपने निवेदन में गौतम धर्मसूत्र के अनुसार 48 संस्कार और अंगिरा ऋषि के 26 संस्कारों में से वर्तमान के 16 संस्कारों को ही सम्मिलित किया है, ये भी धीरे-धीरे हमारे हाथों से खिसकते नजर आ रहे हैं। शुरुआत में हम अतिउत्साह में संस्कारों को अर्थविहिन खर्चों में तब्दील कर देते हैं और कालांतर में संस्कारों को ही अर्थहीन मानकर छोड़ते जा रहे हैं। पुस्तक में नागर का इतिहास भी गोत्र, अवंटक, शाखा प्रवर वेद के साथ कलम, कड़छी, बरछी को साधने में ही 'नागर नु नागर वणु' सिद्ध किया है। संस्कारों में प्रथम दृष्टि में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णवैध उपनयन, वेदारम्भ समावर्तन, लग्न विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास और अंत्येष्टी, इन सभी संस्कारों का महत्व, उसमें उपयोग में आने वाले साधन सामग्री और रीति-रिवाज को बड़े सहज ढंग से चित्रित किया है। साथ ही सबसे आग्रह भी किया है कि कोई भूल हुई हो तो सुधार की गुंजाईश है।

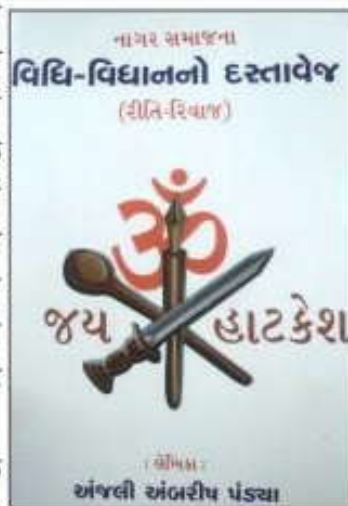
सबसे महत्वपूर्ण सन्देश अन्य पुस्तकों की तरह इसमें भी दोहराया गया है कि नागर समाज में लग्न, शिवपार्वती के लग्न के समान ही उत्सव का वातावरण बनाकर आयोजित होना चाहिए। इसमें लेन-देन का महत्व गौण है, क्योंकि हमारा संकल्प कंकू

और कन्या है लेन-देन नहीं। शादी के दूसरे दिन ससुराल की वलगणी (कपड़े रखने का स्थान) से लेकर कपड़े पहनने की परम्परा है। परन्तु आज के लोग उसे झूठा सिद्ध करने पर तुले हुए हैं। सामान्यतः कोई भी माता-पिता अपनी पुत्री को खाली हाथ विदा करना नहीं चाहते इसलिए अंजली बहन ने लग्न के समय के सामान्य व्यवहार का पूरा विवरण दिया है। कन्या के लग्न के समय मामा पक्ष (मातुल) से मामेरा (मोसाड) देने की भी सूची दी है जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि नागर समाज में दहेज प्रथा नहीं है, ठीक इसके विपरित कन्या को ससुराल में किसी संकट और कष्ट का सामना नहीं करना पड़े। इसलिए पल्ले में दागीने अथवा रकम नकदी में दी जाती है जो उसके लिए उपयोगी रहे। किसी अनहोनी परिस्थिति में तो यह जीवन बीमा का कार्य भी करती है इस पर मात्र कन्या का ही अधिकार होता है। जिसे आधुनिक युग में स्त्रीधन भी कह सकते हैं। इन सब प्रावधानों के बाद भी विघ्न संतोषी प्राणी नागर समाज की मर्यादाओं को ताक में रखकर कलंकित करने का प्रयास करते हैं उनके लिए ये समस्त लिखित प्रावधान लक्ष्मण रेखा की तरह सिद्ध होंगे। कन्या का प्रथम प्रसव पीहर में होगा, उसे जीयाणा में क्या दिया जाना है,

आदि बातें भी बारीकी से उसमें समाहित हैं। फिल्मों में 'जब तक पूरे ना हो फेरे सात...' जैसे गीतों ने लग्न में सप्तपदी के अर्थ को अग्नि के समक्ष सात फेरों से जोड़ दिया है, इसी गलतफहमी के कारण कई प्रसंगों में पंडितों की आलोचना भी की जाती है कि उसने चार फेरे ही करवाए। इस पुस्तक में चार फेरे और सप्तपदी-चावल की सात ढेरी को वधू के पैरों से हटाना बताकर स्पष्ट किया है। विधवाओं की स्थिति का वर्णन तो किया है, परन्तु लेखिका ने स्वयं स्वीकार किया है कि भेदभावपूर्ण व्यवहार को आज के युग में मान्यता नहीं मिल सकती। 282 पृष्ठों की यह पुस्तक भी अन्य संदर्भग्रंथों की तरह गुजराती भाषा में है, जबकि नागर समाज की बसाहट वैश्विक है। स्वयं लेखिका विश्व हिन्दू परिषद् ऑफ अमेरिका की पदाधिकारी होकर 42 वर्षों में 60 से अधिक देशों की यात्रा कर लोगों में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा बढ़ाकर संस्थाओं को गतिशील बनाने का संकल्प ले चुकी है, अतः इस 'रेडी रेकनर' पुस्तक को तैयार करने का जो भागीरथी प्रयास किया है, उसे वैश्विक स्वरूप देने के लिए इसका हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद करवाना प्रतिक्रियत रहेगा।

-प्रमोदराय झा, बांसवाड़ा

मो. 8003063616



राष्ट्रीय धर्म ही राष्ट्रीय पर्व है

आज सम्पूर्ण देश अपनी आजादी की 67वीं वर्षगांठ मना रहा है। आजादी के इन 68 वर्षों में हमारे देश ने अनेक क्षेत्रों में प्रगति के नवीन सोपान जोड़े हैं, परन्तु आज भी हम संसार के अनेक देशों से कई क्षेत्रों में काफी पीछे हैं। हम अपने ध्वज को राष्ट्रीय गौरव की वस्तु मानते हैं तथा उसके संवैधानिक तरीके से प्रयोग न करने पर राष्ट्रीय अपमान मान कर उसका विरोध करने में नहीं चूकते, परन्तु दूसरी ओर इतने वर्षों में हमारे राष्ट्रीय चरित्र का जो हास हुआ है उसके बारे में न तो शर्म और न ही संवेदनशील होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

इस बात की अभिव्यक्ति मैं इसलिये कर रहा हूँ कि विगत दो माह में सपत्नीक तथा ज्येष्ठ भ्राता-भाभी के साथ अमेरिका के न्यूजर्सी राज्य के एडीसन शहर में निवासित मेरे भतीजे चि.मयंक नागर के परिवार के साथ रहने तथा भ्रमण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान मैंने अमेरिका के कई शहरों जैसे- न्यूयार्क, वाशिंगटन (डीसी), डेलावर, फिलेडेल्फिया, डेट्राइट, वाल्टीमोर, सायराकुस, बफेलो, प्रिन्सटन इत्यादि शहरों का भ्रमण कर वहाँ के सामाजिक परिवेश का निकट से दृष्टीगत करने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे यह आभास हुआ कि आजादी के बाद इतने वर्षों में हमने बहुत कुछ पाया है तो बहुत कुछ खोया भी है। हमने इन विकसित राष्ट्रों की अनेक विषमताओं को जैसे- पाश्चात जीवन शैली, जंक खाद्य पदार्थों का उपयोग, संश्लेषित पेय पदार्थों की लत, विदेशी मदिरा के प्रति आसक्ति इत्यादि को सहर्ष अपना लिया, परन्तु सुदृढ़ एवं समृद्ध आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत

होने के बावजूद उन बातों को नहीं अपनाया जो कि राष्ट्र के उत्थान में मील का पत्थर साबित होती। कुछ ध्यान देने योग्य बिन्दु इस प्रकार हैं-

पर्यावरण जागरूकता- अमेरिका प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण देश है। पर्यावरण संरक्षण तथा प्रदूषण के प्रति प्रत्येक व्यक्ति अति संवेदनशील है। अकेले मिशीगन राज्य में करीब 16,000 झीलें हैं तथा इन झील किनारें आवासित



रहवासियों की झील भी निजी सम्पत्ति का भाग होती है, परन्तु कोई भी व्यक्ति झील के जल को गंदगी इत्यादि विसर्जित कर प्रदूषित नहीं करता है। व्यक्ति अपने पालतु पशु के साथ भ्रमण करते समय पॉलीथीन दस्तानें तथा थैली साथ रखते हैं ताकि पशु-उत्सर्जित मल को थैली में इकट्ठा कर निर्दिष्ट स्थान पर फेंका जा सके। वहीं दूसरी ओर हमारे देश में व्यक्ति पड़ोसी के दरवाजे के मुहाने पर अपने पालतु द्वारा की गई गन्दगी पर शर्म महसूस नहीं करता है। वहाँ सड़कों पर किसी भी प्रकार की गन्दगी दृष्टीगोचर नहीं होती है। ध्वनि तथा वायु प्रदूषण के प्रति जागरूकता अचंभित करने वाली है। सार्वजनिक शौचालयों में स्वच्छता तथा स्वास्थ्यपरक आदतों

का विपेश रूप से ध्यान रखा जाता है।

परिवहन व्यवस्था- मोटर-कार आम नागरिकों की जीवन शैली का अनिवार्य तथा महत्वपूर्ण हिस्सा है। ट्राफिक नियमों के प्रति सजगता, जागरूकता तथा स्वअनुशासन प्रशंसनीय है। प्रत्येक व्यक्ति ट्राफिक नियमों को राष्ट्रीय धर्म समझकर पालन करता है। वाहन का हार्न बजाना अपमान का द्योतक माना जाता है। सड़कों पर बने मार्गदर्शकों का पालन व्यक्तियों के जीवन शैली का भाग बन गया है। वहीं दूसरी ओर हम अपने शहर में ट्राफिक नियमों की धज्जियां बिखेरने में, पोलिस से दादागिरी या राजनीतिज्ञों से धौंस दिलाने में अपनी शौहरत समझते हैं।

शिक्षा तथा नैतिक मूल्य- अमेरिका में स्कूली शिक्षा सभी के लिये अनिवार्य है परन्तु उच्च शिक्षा न केवल महंगी वरन योग्य विद्यार्थियों के लिये ही है इसलिए वहाँ कुकुरमुत्तों की तरह न तो महाविद्यालय है और न ही विश्वविद्यालय। शिक्षा की गुणवत्ता उच्चकोटि की है। शिक्षा के साथ प्रत्येक स्कूली अथवा उच्चशिक्षार्थी के लिये सामाजिक कार्य करना पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी अपनी रुची अनुसार सामाजिक कार्य का चयन कर सकता है। सम्पूर्ण अमेरिका की मूल भाषा एक ही है जिसके कारण प्रत्येक राज्य, शहर तथा गांव का नागरिक का आपसी तालमेल बना रहता है। तकनीकी क्षेत्र में अतिउन्नत राष्ट्र होने के बावजूद लोग मोबाइल फोन का उपयोग हर स्थान पर नहीं करते हैं। बसयात्रा या रेलयात्रा हेतु टिकट स्वचलित मशीन से प्राप्त कर

शतप्रतिशत लोग टिकिट लेकर ही यात्रा करते हैं। स्वदेशी उत्पाद प्राथमिकता से क्रय करते हैं। श्रम आधारित कार्य महंगे होने के कारण अधिकांश व्यक्ति गृहकार्य में समान रूप से सहयोग करते हैं।

आर्थिक सुदृढ़ता- अमेरिका की आर्थिक सुदृढ़ता के अनेक कारणों में एक प्रमुख कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति क्रय की गई वस्तुओं पर निर्धारित कर जैसे- विक्रयकर, सेवाकर इत्यादि अनिवार्य रूप से भुगतान करता है। राजस्व वसूली के नियम तर्कसंगत हैं। जलकर जल के कुल उपयोग पर आधारित है। विद्युत विपुलता से उपलब्ध है तथा विद्युत चोरी न के बराबर है। एक विचारणीय तथ्य यह है कि भारत की आजादी के समय हमारे रुपये तथा अमेरिकी डालर का मूल्य बराबर था। सन 1970 में एक डालर बराबर आठ रुपये था, परन्तु आजादी के इन 68 वर्षों के अन्तराल में हमारा रुपया 64 गुना पीछे हो गया।

गठोर कानून व्यवस्था- स्वअनुशासन के साथ-साथ हर व्यक्ति नियमों तथा निर्देशों के प्रति प्रतिबद्ध

दृष्टिगोचर होता है। नियम का उलंघन करने पर दण्ड का प्रावधान है चाहे वह ट्राफिक नियमों का उलंघन हो अथवा पार्किंग का। किसी भी शॉपिंग सेन्टर या मॉल के शोरूम पर कोई गार्ड नहीं होता है व्यक्ति स्वप्रेरणा से ईमानदारी का परिचय देता है। अनेक स्थानों पर वाहन चालक स्वयं अपने हाथों से अपने वाहन में पेट्रोल भरते हैं। टोलप्लाजा पर टोलटेक्स वाहन पर लगे स्केनर द्वारा स्वतः ही हो जाता है।

राजनैतिक प्रतिबद्धता- कुछ अपवादों को छोड़कर अधिकांश राजनैतिक पदों पर पदेन व्यक्ति अपने निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर शहर राज्य इत्यादि के विकास में समन्वित भाव से सहयोग प्रदान करते हैं। विरोध मुद्दों पर आधारित होता है न कि व्यक्तिगत आधार पर। यह महज संयोग था कि अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस दिनांक 4 जुलाई को मैं वहाँ था तथा मुझे उल्लास को नजदीक से देखने का अवसर मिला जिसमें सार्वजनिक फिजूलखर्ची का समावेश कम था। आम जन जीवन में भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी की झलक नहीं दिखाई पड़ती है।

उपवर्णित बिन्दुओं से यह अभिप्राय नहीं है कि अमेरिकी जीवन शैली में सब कुछ अच्छा है वहाँ भी अनेक विषमताएं जैसे- मांसाहार का बढ़ता प्रचलन, मदिरापान का शौक, उन्मुक्त सेक्स, शिथिल लोक परिवहन व्यवस्था इत्यादि विद्यमान हैं वहीं दूसरी ओर हमारा देश क्षेत्रफल के लिहाज से अमेरिका से तीन गुना छोटा, जनसंख्या के लिहाज से चार गुना बड़ा है जहाँ गरीबी/बेरोजगारी प्रमुख समस्या है, परन्तु फिर भी अमेरिका के आम जनजीवन से प्रेरणा लेकर हम अपने राष्ट्र के सर्वांगीण विकास एवं उत्थान में योगदान कर, राष्ट्रीय धर्म का पालन कर, भारतमाता के चरणों में पुष्पांजली अर्पित कर गौरव की अनुभूति कर सकते हैं।

इन्हीं बातों को सन्त कबीर के शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है

‘साधु ऐसा चाहिये जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रखै थोथा देइ उड़ाय।

-प्रो.राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)

बी-40, चन्द्र नगर,

एम.आर.9 इन्दौर

सम्मान समारोह में आ सकते हैं- केन्द्रीय मंत्री और

सांसद परेश रावल (सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेता) एवं नागर बंधु

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित मेरठ, अलीगढ़, आगरा, मथुरा, हाथरस के नागरजनों का

नई दिल्ली में 'नरसी मेहता सम्मान समारोह'

मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा नवम्बर-दिसम्बर माह के दौरान नागर महाकुंभ एवं नरसी मेहता सम्मान समारोह प्रस्तावित है।

जिसमें शिक्षा, कला, साहित्य, समाजसेवा, उद्योग, व्यवसाय, चिकित्सा, विज्ञान, पत्रकारिता, अध्यात्म एवं तकनीकी क्षेत्र की हस्तियों से सम्मान हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित हैं।

नोट- हमारा प्रयास रहेगा कि उपरोक्त भव्य गरिमामय आयोजन देश की प्रख्यात हस्तियों की उपस्थिति एवं करकमलों द्वारा सम्पन्न हो। अतएव आप प्रविष्टियां एवं सुझाव दें। इस अवसर पर जय हाटकेश वाणी द्वारा क्षेत्र की निर्देशिका एवं स्मारिका प्रकाशित की जाएगी।

सम्पर्क मो. 9425063129

पुरुषोत्तम मास में सुफल की आस

हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार चन्द्रमान और सोरमान वर्ष के बीच ग्यारह दिनों का अन्तर रहता है और यह अंतर निरंतर बढ़ता नहीं रहे इसलिए प्रति तीसरे वर्ष अधिकमास की व्यवस्था की गई है। शास्त्रों के अनुसार बारह मासों के बारह अधिष्ठाता थे, जबकि अधिकमास के कोई नहीं इसलिए इसे मलमास उद्बोधित किया गया और सभी पवित्र कार्य इस माह में वर्जित किए गए। भगवान कृष्ण की शरणागति से कालान्तर में इसे पुरुषोत्तम मास और धर्ममास की संज्ञा प्राप्त हुई। इस माह में किया गया स्नान, दान, तप, उपवास से सुफल प्राप्त होता है, इसी

किनारों पर कई तीर्थ और धर्मस्थल स्थापित है यह मास न केवल स्नान बल्कि आराधना का अवसर प्रदान करता है, इसलिए नागरों के साथ पूरे वागड़ के नागरिक नतमस्तक हो उपासना करते हैं। यहां का वणेश्वर धाम माही-सोम और जोखम नदियों के त्रिवेणी संगम के लिए प्रख्यात है तो परसोलिया के सर्वेश्वर महादेव के समीप माही और चांप नदी का संगम स्थल है।

यहीं श्री केशवाश्रमजी महाराज के जल समाधी लेने से चरण चिन्ह एक बड़ी शिला पर अंकित हो गए हैं। इसी प्रकार गुड़ी रणछेड़ मंदिर भी अतिप्राचीन माही तट

नेपाल के पशुपतिनाथ पंचमुखी है। यहाँ सर्वाधिक 52 महिलाओं ने अपनी आस्था के सुमन अर्पित किए, परन्तु शिवना नदी में व्याप्त गंदगी एवं प्रदूषण के कारण वापसी में गोतमेश्वर कुंड में स्नान एवं दर्शन का लाभ लिया। घर मा काशी, घर मा मथुरा की मान्यता वालों ने केशवाश्रमजी धर्मशाला में ही गंगारूपी कूप से स्नान कर आनन्द प्राप्त किया।

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी केशवाश्रम धर्मशाला और अम्बामाता मंदिर में पुरुषोत्तम मास की कथाओं का आयोजन चलता रहा जहाँ उत्साहवर्द्धक उपस्थिति रही। इसी तरह हाटकेश्वर



अवधारणा से यह पुरुषोत्तम मास नागर बंधुओं और भगनियों के लिए अत्यंत व्यस्ततम मास बन गया। सभी के उपवास और व्रत के अलग-अलग तरीके और नियम।

समाज के सभी देवालयों में हाटकेश्वर महादेव, गोवर्द्धननाथ, देवदेवेश्वर, नीलकंठ महादेव और रुद्रेश्वर महादेव मे जल अर्पण करने वालों का तांता लगा रहा। काशी में पवित्र गंगा की तरह लोढ़ी काशी बांसवाड़ा में माही गंगा का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है, जो मध्यप्रदेश से गुजरात तक अविरल बहती है तथा उसके

पर स्थित है। सुननपुर में नीलकंठेश्वर महादेव और विशाल सती वटवृक्ष, विट्ठल देव, भीमकुंड, रामकुंड, कागदी (अंकलेश्वर) में भी स्नान और आराधना का सिलसिला चलता रहा। गंतव्य स्थान की दूरी के अनुसार टैम्पो और बस की व्यवस्था की गई थी, जिसमें महिलाओं ने मंदसौर के पशुपतिनाथ महादेव की अष्टमुखी शिवलिंग के दर्शन का कार्यक्रम सम्पन्न किया। पशुपतिनाथ के अष्टमुखों में बालरूप, वृद्धरूप, युवारूप, विकरालरूप, आनन्दरूप, शांतरूप और अर्द्धनारीश्वर स्वरूप का चित्रण है, जबकि

महादेव मंदिर में भक्त श्री नरसी मेहताजी की प्रतिभा के सम्मुख रामचरित मानस का पारायण श्री ललित किशोरजी धनपतराय झा और पुष्कर पंड्या के सानिध्य में सायं 5 से 6.30 तक चलता रहता था। यहां सभी की उपस्थिति प्रशंसनीय थी, इसके पश्चात गोवर्द्धननाथ मंदिर में हरे कृष्ण हरे राम का संकीर्तन और भजनों का आयोजन मास पर्यन्त चला, रात्रि 8 बजे से वडनगरा नागर आचार्य मंडल ने भक्तों के लिए गोपाल सहस्रनाम और विष्णु सहस्रनाम की आवृत्ति आयोजित की थी, 15 जुलाई को



विधिवत सभी समाज के लोगों को जोड़े से अथवा पृथक से व्यक्तिगत इच्छा अनुरूप बैठकर तुलसीपत्र और गुलाब की पत्तियों से पूजा आराधना करवाई और पुरुषोत्तम मास का महत्व बताया।

16 जुलाई को मास का समापन दिन

था, जब विष्णु महायज्ञ का आयोजन किया गया था, समाज के सभी लोगों ने इस आठवें विष्णु महायज्ञ में अपनी आहुतियां दी। काशी से आचार्य श्री विष्णु दत्तजी विशेष रूप से यहाँ आए। इस आयोजन में प्रथम विष्णु यज्ञ के समय का

22 वर्ष पुराने चित्र का बेनर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। जिसमें दिव्यलीन महंत श्री दीनबंधुदासजी महाराज भी आशीर्वाद स्वरूप यहां पधारे थे।

रात्रि को विष्णुयज्ञ की पूर्णाहुति पर आचार्य मंडल ने ही महाप्रसादी (जाति भोज) का आयोजन किया था, जबकि 17 जुलाई को रामचरित मानस पारायण की प्रसादी श्री ललित किशोरजी ने आयोजित की। पूरा मास व्यस्तता एवं उत्साह भरा रहा, उसके पश्चात खालीपन की पूर्ति नवरात्रि के गरबों के आयोजन से होगी। इस बीच श्रावण मास में शिवभक्ति, पिकनिक के आनन्द का सिलसिला जारी रहेगा।

-मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा मो. 919413947938

इलाहाबाद (प्रयाग) एवं आसपास के समाचार

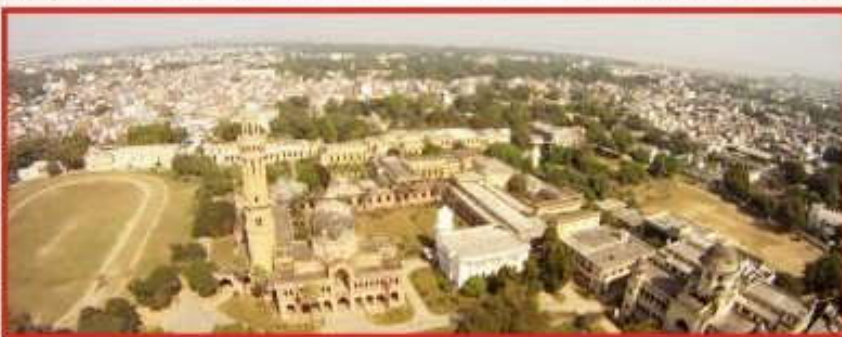
(1) नव आगन्तुक: चि.गौरव एवं सौ.गरिमा (पुत्र एवं पुत्रवधू श्री प्रमोद नागर एवं सौ.अमिता नागर) को दिनांक 15 जून 2015 को लखनऊ में कन्या रत्न की प्राप्ति हुई।

(2) श्री राज नागर एवं श्री रंजन नागर (सुपुत्र स्व.श्री लक्ष्मीरामजी नागर एवं स्व.श्रीमती शिक्षा नागर) ने अथक परिश्रम एवं प्रयास से 'रुचि इन्टरनेशनल' कालीन की फर्म भदोही (उ.प्र.) में स्थापित की है। इसी क्रम में मामदेवपुर रोड़ भदोही में 18,000 वर्ग फीट की एक भव्य फैक्टरी सह कार्यालय दिनांक 3-7-2015 से दिनांक 5-7-2015 तक धूमधाम से मनाया गया।

कार्यक्रम में गणेशजी के सानिध्य में दिनांक 3-7-2015 से दिनांक 4-7-2015 तक अखंड रामायण पाठ श्री सत्यनारायण पंडितजी की देखरेख में तथा उद्घाटन श्री आलोक पण्डयाजी के द्वारा मंत्रोच्चार के मध्य हुआ। दिनांक 5-7-2015 को रात्रि में सभी गणमान्य अतिथियों एवं संबंधियों को दिव्य प्रीतिभोज

का आयोजन किया गया। इसमें भदोही नगर के विधायक (श्री जाहिद बेग) नगर पालिका परिषद के चेयरमेन (श्री आरिफ सिद्दीकी) सहित कालीन उद्योग के गणमान्य व्यक्ति भी सम्मिलित हुए।

(3) इलाहाबाद के गणमान्य स्व.(डॉ.) बलवंत राम झा की स्मृति में उनकी सुपुत्री श्रीमती चित्रा दवे के सुपुत्र श्री श्लोक दवे ने श्री हाटकेश्वर परिषद् कोलकाता को रु. 1,00,000 भेंट किया। इस धनराशि से स्व.(डॉ.) बलवंत राम झा की स्मृति में जीव विज्ञान (बायोलोजी) विषय में कक्षा 12वीं में उच्च श्रेणी



में प्राप्तांक पाने वाले लड़के/लड़कियों को पुरस्कार/वजीफा दिया जायेगा। इस हेतु प्राप्तांक की फोटो प्रति निम्नलिखित पते पर भेजें- श्री हाटकेश्वर परिषद् विद्या एण्ड कंपनी, कक्षा संख्या 758, मार्शल हाऊस, 33/1, एम.एस.रोड़, कोलकाता-70000/- (पश्चिम बंगाल)

-नित्यानन्द नागर, इलाहाबाद (उ.प्र.)



श्री हाटकेश्वर धाम में भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक पूजन

श्रावण मास के प्रति सोमवार को होगा

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम में श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर का अभिषेक पूजन प्रातः 8 से 10 तक किया जायेगा। अभिषेक पूजन पं.श्री सतीश नागर के आचार्यत्व में सम्पन्न होगा। जो भी श्रद्धालु समाजजन पूजन-अर्चन में बैठना चाहते हैं वह अपना नाम एक दिन पूर्व श्री हाटकेश्वर धाम के फोन नं. 0734-2584599 पर व्यवस्थापक को नोट करवा दें। अभिषेक पूजन-अर्चन की सामग्री न्यास द्वारा उपलब्ध रहगी। पूजन-अर्चन में बैठने वाले श्रद्धालु श्रोता या कुर्ता-पजामा मातृशक्ति- साड़ी पहनकर आवे। न्यास मंडल समाजजनों से अपील करता है कि धार्मिक अनुष्ठान में पधारकर धर्मलाभ लें।

सचिव- संतोष जोशी

14 जून को उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम लोकार्पण समारोह में पं.प्रभूजी नागर एवं माताजी को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए मुख्य अतिथि एवं न्यासीगण।



श्री हाटकेश्वरधाम में दानराशि भेंट

श्रीमती सुमित्रा शर्मा पत्नी स्व.श्री डॉ.रामरतनजी शर्मा, उज्जैन ने स्व.श्री डॉ. रामरतनजी शर्मा (पूर्व अध्यक्ष) की स्मृति में प्रदान किये। 25001.00

श्री कमलकांतजी मेहता, उज्जैन द्वारा अपने पिताजी स्व.श्री नारायणप्रसादजी नागर (मेहता) देवास की स्मृति में 11,000/-

श्री पुरुषोत्तमजी जोशी, उषा नगर इन्दौर बैंक में जमा - 5000.00

श्री दिनेशचन्द्रजी नागर, जयपुर - 2100.00

श्री भालचन्द्रजी पंड्या (प्रतिमाह 100/- बैंक में सीधे जमा)- 501.00

विमलादेवी नागर सुपुत्री-दीनदयालजी नागर, जयपुर - 2100.00

पं. श्री दिलीप नागर सुपुत्र- स्व.पं. प्रभूलालजी नागर, उज्जैन 1000.00

प्यूरीफायर वाटर कूलर की श्री सुमित नागर स्व.श्री हरिवल्लभजी नागर, मुम्बई की ओर से घोषणा (स्व.श्री हरिवल्लभजी नागर की स्मृति में)



स्व.श्रीमती शान्तादेवी सिद्धनाथजी



स्व.श्रीमती शकुन्ताला देवी विष्णुदत्तजी नागर

की स्मृति में सौ.आभा डॉ.बालकृष्णजी त्रिवेदी, सौ.सुषमा देवेन्द्रनाथ त्रिवेदी सौ.संध्या शैलेन्द्रनाथ त्रिवेदी द्वारा कमरा निर्माण हेतु 1,25,000/- भेंट



रमेशचन्द्र नागर परिवार
खाचरोदा जिला धार (5000/- भेंट)



श्रीमती सुमित्रा शर्मा पत्नी
स्व.श्री डॉ.रामरतनजी शर्मा, उज्जैन
स्व.श्री डॉ.रामरतनजी शर्मा (पूर्व अध्यक्ष)
की स्मृति में प्रदान किये।25001.00



श्री कमलकांतजी मेहता, उज्जैन द्वारा अपने पिताजी स्व.श्री नारायणप्रसादजी नागर (मेहता) देवास की स्मृति में श्री हाटकेश्वर धाम में 11,000/- रुपये दान राशी भेंट की।

अन्तर्राष्ट्रीय नागर मिलन समारोह उज्जैन में होगा

नागर ब्राह्मण परिषद की साधारण सभा में वरिष्ठजन सम्मानित



उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय नागर मिलन समारोह के आयोजन को लेकर हम काफी समय से प्रयासरत थे, लेकिन अब आगामी अक्टूबर-नवम्बर माह में नागर ब्राह्मण परिषद द्वारा यह आयोजन पूर्ण भव्यता के साथ उज्जैन में आयोजित किया जाएगा।

उक्त वक्तव्य नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष राजेश त्रिवेदी टमटा ने परिषद की साधारण सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए और इस घोषणा के साथ ही पूरा सभा मंडप तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। बैठक की विस्तृत जानकारी देते हुए नागर ब्राह्मण युवा परिषद के मीडिया प्रभारी निलेश नागर और परिषद के महासचिव

लव मेहता ने संयुक्त रूप से बताया कि नागर ब्राह्मण परिषद की साधारण सभा समाज की उर्दूपुरा स्थित धर्मशाला पर आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता जीवन प्रबंधन गुरु पं. विजयशंकर मेहता ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली से पधारे मनमोहन नागर, औद्योगिक न्यायालय के अध्यक्ष प्रवीण त्रिवेदी तथा वरिष्ठ

समाजसेवी आशीष त्रिवेदी उपस्थित थे। वरिष्ठ समाजसेवियों व अतिथियों की उपस्थिति में भगवान श्री हाटकेश्वर व श्री नृसिंह मेहता के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित कर साधारण सभा की शुरूआत की गई। सभा के दौरान नागर ब्राह्मण परिषद के पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान कोषाध्यक्ष योगेन्द्र त्रिवेदी द्वारा वर्ष 2014 के आय-व्यय का वाचन किया गया। म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद के अध्यक्ष हेमंत व्यास ने कहा कि इस वर्ष परिषद के मार्गदर्शन में म.प्र. नागर ब्राह्मण युवा परिषद द्वारा कार्यकारिणी की घोषणा कर वृहद रूप से पूरी कार्यकारिणी की एक बैठक का आयोजन किया गया।

देहदान करने वालों के साथ वरिष्ठजन सम्मानित

साधारण सभा के दौरान देहदान करने वाले समाज के वरिष्ठ योगेश मेहता व श्रीमती इंद्रा मेहता को समाजसेवियों द्वारा सम्मानित किया गया। वहीं हाटकेश्वर देवालय न्यास हरसिद्धि के अध्यक्ष सुरन्द्र मेहता 'सुमन' व हाटकेश्वर देवालय न्यास बंबाखाना के अध्यक्ष डॉ. जीके नागर को शाल-श्री फल देकर सम्मानित किया गया।

इन सुझावों पर बनी सहमति- बैठक में अक्टूबर-नवम्बर माह में

समाज का मिलन समारोह आयोजित करने के साथ ही हाटकेश्वर जंयती पर चिकित्सा शिविर आयोजित करने, सिंहस्थ में नगर में आने वाले समाजजनों के ठहरने की व्यवस्था, परिषद में सदस्यों को जोड़ने व चांचौड़ा ब्राह्मण समाज की तरह ही 13 दिन के शोक को बंद कर शोक पत्र छपवाने पर सहमति बनी।

कार्यालय का शुभारंभ- कार्यक्रम के दौरान उपस्थितजनों ने धर्मशाला के

कार्यालय का शुभारंभ फीता खोलकर किया। इस दौरान अतिथिजनों के साथ ही डॉ. प्रदीप व्यास, श्याम मेहता, दिनेश त्रिवेदी, कुश मेहता, नरेन्द्र मेहता, किरणकान्त मेहता, योगेन्द्र नागर, आशुतोष मेहता, मनीष मेहता, संजय नागर, अमित नागर, निलेश नागर, कन्हैयालाल मेहता, शुभम शुक्ला, शुभम रावल, श्रीमती नेहा मेहता, श्रीमती राधिका व्यास, श्रीमती वंदना मेहता आदि उपस्थित थे।

रतलाम में सम्मान समारोह 6 सितम्बर को

म.प्र. नागर ब्राह्मण परिषद् शाखा रतलाम द्वारा आयोजित नागर प्रतिभा सम्मान समारोह इस वर्ष 6 सितम्बर रविवार 2015 को सूरज हाल, वेदव्यास कालोनी, रतलाम में दोपहर 2 बजे से शुरू होगा।

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी कक्षा यूकेजी में अपर क्लास तक के छात्र-छात्राओं को जिन्होंने इस वर्ष अपनी परीक्षा 60 प्रतिशत या अधिक अंकों से उत्तीर्ण की है। पुरस्कार देकर समाज द्वारा सम्मानित किया जाएगा। साथ ही खेलकूद, प्रतियोगी परीक्षाएँ या अन्य उपलब्धि पर भी छात्र-छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। खेलकूद में संभागीय प्रादेशिक या राष्ट्रीय उपलब्धि पर पुरस्कार दिये जाएंगे।

समाज एवं छात्र-छात्राओं की मार्कशीट/प्रमाण पत्र की फोटोकापी दिनांक 10 से 25 अगस्त के बीच निम्न अधिकृत व्यक्तियों के पास जमा करें। श्री विभाष मेहता, श्री सुशील नागर श्री हेमन्त भट्ट, श्री सुनील हेमकांत दवे।

नियत तिथि के बाद किसी भी मार्कशीट या प्रमाण-पत्र पर विचार नहीं किया जा सकेगा। रतलाम नागर समाज की परम्परा के अनुसार इस कार्यक्रम के दौरान इस वर्ष सेवानिवृत्त हुए (रतलाम से) सम्माननीय नागरजन का भी शाल श्रीफल से सम्मान किया जाएगा व नवआगंतुक नागर परिवारों (मुखिया) का भी स्वागत किया जाएगा।

परिषद शाखा-रतलाम अध्यक्ष श्री विभाष मेहता ने इस कार्यक्रम में समाजजनों से अपनी सहभागिता से सफल बनाने का अनुरोध किया है।

श्रावण सोमवार अभिषेक

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सावन सोमवार पर नागर धर्मशाला स्थित भगवान हाटकेश मन्दिर व मठ स्थित हाटकेश मंदिर में भगवान का श्रृंगार व पूजन अर्चन के साथ अभिषेक पं.विकास बालकृष्णजी नागर द्वारा सम्मान कराया जाएगा।

कार्यक्रम- नागर धर्मशाला हाटकेश देवालय
दिनांक 3,10,17 व 24 अगस्त शाम 5 से 7
दिनांक 24 अगस्त अन्तिम सोमवार

मठ मंदिर में सुबह 8 बजे से
नागर धर्मशाला में- शाम 5 से 7

सभी सम्माननीय नागरजन सपरिवार उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

श्रावणी कर्म

29 अगस्त 15 शनिवार

रक्षा बंधन पर 'श्रावणी कर्म' नागर धर्मशाला में प्रातः 8 बजे से प्रारम्भ होगा। जिसे पं. रमेशचन्द्रजी भट्ट सम्पन्न कराएंगे। परिषद अध्यक्ष विभाष मेहता ने इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की समाजजनों से अपील की है।

-ओम त्रिवेदी, रतलाम

गीतों की महफिल में जूटे रसिकजन

उज्जैन। गत दिनों उभरते गायक श्री मुकेश आत्मज डॉ.रामरतन शर्मा के निवास स्थान पर संगीत गोष्ठी, आयोजित की गई, जिसमें सुपरिचित गायक शिव हरदेनिया, मुकेश शर्मा, दिनेश त्रिवेदी, श्रीमती कविता शर्मा, संजय मेहलोद के मनभावन गीतों की सांगितिक प्रस्तुती दी। इस गोष्ठी में, संगीत प्रेमी व हास्यकवि श्री गड़बड़ नागर, विशेष रूप से आमंत्रित थे। इस अवसर पर गड़बड़ नागर ने कहा कि संगीत व्यक्ति को परातत्व से जोड़कर अकथ आनन्द की अनुभूति कराता है। गान गोष्ठी में आमंत्रित गायकों का आभार श्रीमती मनीषा मुकेश शर्मा ने माना।

अशोक नागर सचिव, राजेन्द्र नागर कोषाध्यक्ष बने

29 जून 2015 को रेल डाक सेवा रतलाम का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ तथा आगामी कार्यकाल हेतु कार्यकारिणी का गठन हुआ, जिसमें शाखा सचिव अशोक ओ. नागर तथा कोषाध्यक्ष राजेन्द्र जे. नागर सर्वसम्मति से चुने गए।



अशोक नागर



राजेन्द्र नागर

पति का अपनी पत्नी से झगड़ा हुआ और दुखी होकर घर से बाहर निकला और पीछे पीछे उसका बेटा भी उसके साथ आ गया। वे दोनों घूमते घूमते एक पार्क में पहुँच गए, दोनों एक बेंच पर बैठ गए, सामने एक गधा घास चर रहा था। बच्चे ने अपने बाप को पूछा, पापा ये कौन सा जानवर है? बाप ने जवाब दिया, बेटा ये गधा है। उस के साथ में एक गधी भी चर रही थी, बच्चे ने पूछा, पापा ये कौन है? बाप ने जवाब दिया बेटा ये इस गधे की बीबी है। बच्चे ने पूछा, तो क्या पापा गधे भी शादी करते हैं? बाप बड़े दुखी मन से बोला, हाँ बेटा, सिर्फ गधे ही शादी करते हैं।



'तुलसी के राम' विषय पर भक्ति एवं संगीतमय व्याख्यान

वर्तमान समय में श्रीराम कथा सबसे ज्यादा प्रासंगिक है अनुकूलता और प्रतिकूलता में हमें किस प्रकार रहना और क्या करना चाहिए। यह ज्ञान श्रीरामचरित्र से सीखने को मिलता है। श्रीराम कथा हमें मार्गदर्शन एवं जीवन जीने की कला सीखती है। श्रीराम, मानव को आदर्शता एवं नैतिकता का पाठ सीखाते हैं। भगवान श्रीराम के चरित्र व गुणों का प्रचार-प्रसार हो, जिससे जन-जन में प्रभु भक्ति व सद्गुणों का विकास हो। इसी उद्देश्य से श्रीरामकथा के प्रेमी एवं मानस मर्मज्ञ पं.अजय नरेन्द्र व्यास द्वारा श्रीरामकथा करने का संकल्प लिया है। पं.व्यासजी के पुनीत पावन उद्देश्य में सभी समाज एवं भक्तप्रेमी जनों का सहयोग प्राप्त हो रहा है।

इसी कड़ी में गोस्वामी तुलसीदासजी की जयन्ति पर्व पर 'तुलसी के राम' विषय पर भक्ति एवं संगीतमय व्याख्या भगवत् प्रेमी पं. अजय नरेन्द्र व्यास द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है।

'श्रीराम नाम' की महिमा अपार है। 'श्रीराम नाम' संसार में भटकते हुए व बेचैन मन को विश्राम प्रदान करता है।

कार्यक्रम

तुलसी के राम

विषय पर भक्ति एवं संगीतमय व्याख्यान

व्याख्याता- पं.अजय नरेन्द्र व्यास

दिनांक 23 अगस्त 2015, रविवार

समय- दोपहर 2 से 5 बजे तक

स्थान- माँ आनंदमयी आश्रम मेडिकल कॉलेज के पास,
ए.बी.रोड़, इन्दौर

-पं. अजय नरेन्द्र व्यास

महिला मंडल की बैठक में आम के व्यंजन की प्रतियोगिता

नागर महिला मंडल की जुलाई माह की बैठक के अंतर्गत 11 जुलाई 2015 को आम के व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। श्रीमती दीपिका मित्तल ने टपरवेअर मेला दिखाया। तरह-तरह के व्यंजन तुरंत बनाकर सभी उपस्थित सदस्यों को चखाये गए। सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए गए और तम्बोला का आयोजन भी किया गया। आम के व्यंजनों की पुरुस्कृत विधियां पृष्ठ 16 पर अवश्य देखें।

झंडा वंदन निमंत्रण

मूक बधिर एवं विकलांगता की सेवा एवं पुनर्वास हेतु समर्पित एवं लगातार 1981 से सफलतापूर्वक कार्य कर रही संजीवनी सेवा संगम में 15 अगस्त 2015 को झंडावंदन का कार्यक्रम आयोजित है, सचिव श्रीमती शारदा मंडलोई ने सभी महिला सदस्यों से हिस्सा लेने की अपील की है।

महिला मण्डल की आगामी बैठक 8 अगस्त को

नागर महिला मण्डल की आगामी बैठक 8 अगस्त 2015 को 3.45 बजे अध्यक्ष श्रीमती शारदा मंडलोई के स्कीम नं. 74 विजय नगर स्थित आवास पर होगी। जिसमें हरियाली उत्सव मनाया जाएगा। ट्रेस कोड ग्रीन है। प्रत्येक उपस्थित महिला सदस्य को एक-एक पौधे के बारे में संक्षिप्त जानकारी देना है। श्रीमती जयश्री सिक्का पर्यावरण के बारे में चर्चा करेंगी एवं प्राईज डिस्ट्रीब्यूशन होगा। इस सूचना को निमंत्रण मानकर स्वयं अवगत हो एवं अन्य को भी सूचित करें।

-श्रीमती शारदा मंडलोई

न मिले वाणी तो सम्पर्क करें

डाक विभाग की दुर्व्यवस्था की क्या बात करें, सभी परेशान हैं, फिर जो आप नहीं जानते, बता दें कि नियमानुसार महंगी टिकिट लगी डाक ही जब समय से नहीं पहुँच पा रही है तो पत्र-पत्रिकाओं की डाक चूँकि रियायती दरों पर जाती है, इसलिए उसे दोगुना दर्जे का माना जाता है, उसे वितरण में प्राथमिकता नहीं मिल पाती या संयोग से मुखपृष्ठ पर अच्छा फोटो छप जाने से पोस्टमेन उस किताब का वितरण करने के बजाय घर ले जाकर अपनी पत्नी को दिखाना पसंद करता है। प्रकाशन सामग्री में भी विविधता एवं रस रहता है, यदि मुखपृष्ठ देखते-देखते पोस्टमेन की पत्नी को पढ़ने का चस्का लग गया तो वास्तविक पाठक हमें फोन लगाता रह जाता है, जहाँ तक सम्भव हो, उन्हें कोरियर से 'वाणी' भेज देते हैं, लेकिन बार-बार तो यह सम्भव नहीं होता।

बहरहाल कुछ स्थानों पर समाजसेवक सामने आए हैं, डाक विभाग की दुरावस्था का मुकाबला करने में वे हमारा व पाठकों का सहयोग करेंगे। निम्नलिखित स्थानों पर आप इन महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि अन्य स्थानों पर भी पाठकों तक वाणी पहुँचाने की समाजसेवा करने के इच्छुक जो हो वे अवश्य अपने नाम भेजें- **उज्जैन- श्री संजय जोशी मो. 9425917540, भोपाल- श्री सुभाषजी व्यास मो. 9425635290 फोन 0755-2463303, रतलाम- श्री ओमजी त्रिवेदी मो. 9826196660, फोन 07412-230222**, उपरोक्त स्थानों पर यदि आपको 'वाणी' प्राप्त न हो तो कृपया फोन या मोबाईल पर सम्पर्क कर लें। धन्यवाद।

जय हाटकेश वाणी प्रकाशन में सहयोगी सदस्य बनें

जी हाँ! यदि आप प्रगतिशील समाज एवं सुगठित संगठन की अवधारणा रखते हैं तो आईये 'मासिक जय हाटकेश वाणी' के सहयोगी सदस्य बनिये।

आपको क्या करना है?- मासिक जय हाटकेश वाणी के निखरते कलेवर एवं बहुरंगी छपाई हेतु आपको यह योगदान देना है कि एक वर्ष के लिए एक चौथाई पृष्ठ के 6 विज्ञापनों के प्रकाशन का अनुबंध 3,000 रु. अग्रिम जमा करके करना है।

क्या लाभ?- उपरोक्त स्कीम के अंतर्गत आपके द्वारा राशि जमा कराते ही सहयोगी सदस्य के रूप में आपका नाम जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित किया जाएगा, साथ ही आपके द्वारा भरे गए फार्म के आधार पर हम याद रखेंगे कि आपके 6 विज्ञापन

कब-कब प्रकाशित किए जाना है। इस हेतु निर्धारित समय पर प्रकाशन सामग्री के लिए भी हम पूर्व सूचना देंगे।

नियम एवं शर्तें- (1) योजना के अन्तर्गत शुल्क जमा कराए जाने के पश्चात् एक वर्ष तक छः विज्ञापन एक चौथाई पृष्ठ के प्रकाशित करवाए जा सकेंगे।

(2) योजना में केवल बधाई या स्मरण के विज्ञापन ही प्रकाशित होंगे, जिसमें जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ, सुयश, वैवाहिक, बधाई या दिवंगतों को पुण्य स्मरण के विज्ञापन प्रकाशित करवाएं जा सकेंगे। व्यावसायिक विज्ञापन प्रकाशित नहीं हो सकेंगे।

(3) विज्ञापन प्रकाशन हेतु नाम एवं प्रकाशन दिनांक एवं माह का फार्म भरकर देना अनिवार्य है।

आवेदन प्रपत्र

मैं पता.....

.....मो..... जय हाटकेश वाणी का

प्रकाशन सहयोगी सदस्य बनना चाहता हूँ। मैं निर्धारित शुल्क नकद/चेक/ड्राफ्ट द्वारा जमा कर रहा हूँ तथा मेरे निम्नलिखित विज्ञापन दर्शाई गई दिनांक एवं माह पर प्रकाशित करने का कष्ट करें।

नाम	दिनांक/माह	विषय
(1) पिता/माता का नाम-		
(2) पिता/माता का नाम-		
(3) पिता/माता का नाम-		
(4) पिता/माता का नाम-		
(5) पिता/माता का नाम-		
(6) पिता/माता का नाम-		

मैं उपरोक्त दिनांक/माह में प्रकाशित विज्ञापन हेतु फोटो एवं अन्य सामग्री उपलब्ध करवा दूंगा।

हस्ताक्षर

प्रकाशन सहयोगी

जय हाटकेश वाणी के प्रकाशन सहयोगी

मासिक जय हाटकेश वाणी के आकर्षक एवं सार्थक प्रकाशन हेतु निम्नलिखित महानुभावों ने 3000 रु. एक वर्ष के छः चौथाई विज्ञापन प्रकाशन हेतु भेंट किए हैं। हम आपके आभारी हैं।

(1) डॉ. प्रकाश सुपुत्र स्व.श्री रतनलालजी शर्मा दिव्यांशु मेडिकोज, स्टेशन रोड़, राऊ

(2) श्री अमित सुपुत्र महेन्द्र व्यास शिव सिटी, ए.बी. रोड़, इन्दौर

(3) श्री उमेश स्व. शरदचन्द्रजी झा चन्द्रश्री लेबोरेटरीज एंड फार्म प्रॉ. प्रा. लि. राऊ, इन्दौर

(4) श्री योगेश सुपुत्र श्री कृष्णानंदजी मेहता खजराना, इन्दौर

(5) श्री रामचन्द्रजी स्व.श्री कन्हैयालालजी नागर भाटगली, उज्जैन

(6) श्री सन्तोषजी सुपुत्र स्व.श्री मोतीलालजी जोशी इन्दिरा नगर, उज्जैन

(7) श्री सुरेन्द्रजी सुपुत्र स्व.श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता दैनिक अवन्तिका, मालीपुरा, उज्जैन

आपका नाम भी इस सूची के अन्तर्गत प्रकाशित हो सकता है। समाज सेवा के क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाईये एवं जय हाटकेशवाणी के आकर्षक प्रकाशन में सहभागी बनें।

सृजनात्मक पहल का शाजापुर में स्वागत धर्मशाला निर्माण में सहयोग करेगी 'वाणी'

जय हाटकेश वाणी के जुलाई 2015 अंक में स्ववाणी में यह सृजनात्मक पहल की गई थी कि उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम के नवनिर्माण में जिस प्रकार जय हाटकेशवाणी ने प्रचार सहयोग प्रदान किया है, उसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी यदि धर्मशाला या मंदिर का निर्माण होगा तो हम उसमें प्रचार सहयोग (निर्माण कार्य की कार्ययोजना, प्रगति एवं धनसंग्रह) प्रदान करेंगे। उपरोक्त पहल का सर्वप्रथम शाजापुर में स्वागत हुआ है, वहां से शाखा सचिव श्री अरुण व्यास ने मोबाईल फोन चर्चा में बताया कि शाजापुर में धर्मशाला के निर्माण की योजना है तथा उसमें वे

अनुकरणीय

'वाणी' का सहयोग लेंगे। वाणी प्रकाशकों ने उसमें पूर्ण सहयोग का वादा किया है। शाजापुर के अलावा भी समाज के लिए जहां भी सहयोग की बात होगी जय हाटकेशवाणी सदैव अग्रसर रहेगी। ज्ञातव्य है कि वर्तमान में जय हाटकेश वाणी के माध्यम से विवाह-सम्बन्ध सहयोग, चिकित्सा हेतु श्रीमती प्रभा शर्मा आकस्मिक चिकित्सा कोष, ग्रामीण बच्चों के लिए शिक्षा हेतु आवास सहयोग प्रदान किया जा रहा है। यदि समाज द्वारा किसी भी गांव-नगर में कोई रचनात्मक या सृजनात्मक कार्य किया जाएगा तो हम उसके प्रचार सहयोग हेतु तत्पर रहेंगे। ज्ञातव्य है कि उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम नवनिर्माण का जय हाटकेश वाणी में प्रचार किए जाने से धनसंग्रह करने जाने वाले दल को ज्यादा जानकारी नहीं देना पड़ी, किसी भी कार्य या योजना के लिए माहौल तैयार करने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है, इस भूमिका के लिए हम सदैव तैयार हैं, लेकिन इसके लिए आपको भी आगे आना पड़ेगा। ताली कभी भी एक हाथ से नहीं बज पाती। -सम्पादक

जय हाटकेश वाणी शिक्षा सहयोग

ग्रामीण बालिकाओं का भी स्वागत है

जय हाटकेश वाणी के जुलाई 2015 अंक में ग्रामीण बच्चों के लिए इन्दौर में आवास की निःशुल्क व्यवस्था सम्बन्धी प्रकाशन के पश्चात कई बच्चों ने सम्पर्क किया। परन्तु उज्जैन जिले के एक गांव की बालिका (माफ कीजिये हम लाभान्वितों के नाम प्रकाशित नहीं करते।) ने स्वयं फोन लगाया एवं अपने पिताजी से भी बात करवाई यह बालिका इन्दौर में रहकर सीपीटी की कोचिंग करना चाहती थी।

इन्हें इन्दौर बुलवाकर आवास व्यवस्था का अवलोकन करवाने के साथ-साथ नाहटा इंस्टीट्यूट में सम्पर्क भी करवाया। नाहटा इंस्टीट्यूट में उपरोक्त बालिका को 50 फीसदी कोचिंग शुल्क की छूट भाई सीए असीम त्रिवेदी के सहयोग से प्राप्त हुई। साथ ही बालिका के पिताजी ने शेष शुल्क राशि जमा करने के लिए अतिरिक्त समय की मांग की, उसकी सुविधा भी भाई असीमजी के माध्यम से प्राप्त हुई।

इस बारे में बालिका द्वारा की गई पहल सराहनीय रही। हमारा निवेदन है कि ओर भी ग्रामीण बालिकाएं यदि इन्दौर आकर पढ़ाई करना चाहती हैं तो अवश्य सम्पर्क करें, ताकि उपरोक्त उत्साही बालिका को साथ भी मिल सके तथा हमारे द्वारा शिक्षा सहयोग लाभार्थियों की संख्या भी बढ़ सके। हम हर तरह के सहयोग के लिए तत्पर हैं।

-दीपक शर्मा मो.9425063129

महिला मंडल की व्यंजन प्रतियोगिता की मुख्य विधियां

आम राजगीरा की बर्फी

आम का गाढ़ा किया हुआ पल्प 200 ग्राम, शक्कर 200 ग्राम, राजगीरा आटा 200 ग्राम, आम के पल्प को मावे जैसा गाढ़ा कर लें। राजगिरे का आटा थोड़े से घी में हल्की आँच पर सेंक लें। आटे के रंग का विशेष ध्यान रखें। नारियल का बुरा, इलायची, सिके हुए खसखस के दाने और इच्छानुसार बारीक कतरे हुए मेवे मिलाकर बरफी जैसा जमा दें। काटने लायक हो जाए तो मनचाहे आकार में काटें, सजाएं एवं सबको आकार में काटें, सजाएं एवं सबको खिलाएं। व्रत में भी सबको खिलाएँ।

-श्रीमती मंडलोई

आम की रबड़ी

सामग्री- 1 लीटर दूध, 6 चम्मच शक्कर, 1 आम, केशर, इलायची, पिश्ता कटी हुई।

विधि- एक लीटर दूध में केशर डालकर

उबालने रख दीजिए। मन्दी आँच में उबलने पर मलाई कड़ाई के चारों तरफ रखते जाईये। आधा लीटर दूध रह जाए तब कड़ाई चारों तरफ से खुरचकर मलाई दूध में डालकर पीसी शक्कर डालना है। इलायची व पिश्ता कतरन डालकर ठंडा रख दीजिए। एक आम को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े करके ठंडे होने रख दीजिए। सर्व करते समय रबड़ी में आम के टुकड़े डालकर सर्व कीजिए। गर्मी के मौसम में आम की स्वादिष्ट डिश है और लाईट भी है।

-श्रीमती प्रियबाला मेहता



मेंगो केक (शाकाहारी)

सामग्री- 2 कप मैदा, डेढ़कप मेंगो पल्प, 1 कप चीनी, 1 कप कन्डेन्सड मिल्क, आधा कप दूध, 3/4 कप मक्खन या घी, आधा चम्मच बेकिंग सोडा, आधा चम्मच खाने का सोडा, 1/4 कप दही, काजू बादाम थोड़े से।

विधि- मैदे में सोडा व बेकिंग पावडर डालकर दो बार छान लें। इसके अलावा सारी सामग्री एक साथ मिला लें दूध जरूरत के हिसाब से मिलाएँ। बैटर ज्यादा पतला न हो ग्रीस लगे बर्तन में 45 मि. तक कूकर में कम आँच पर एक स्टेण्ड पर बिना वेट (सीटी) के रखें या 180 डिग्री पर कनवेक्शन मोड पर 30-35 मि. तक रखें चेक करें (चाकू को केक के बीच में डालकर निकाले अगर साफ निकले तो समझो बन गया, अगर घोल चिपक कर आता है तो थोड़ी देर और रखें।

बाद में ठण्डा होने पर शहद लगाकर काजू-बादाम से सजाएँ।

-श्रीमती अरुणा व्यास



आम के चटपटे त्रिखूट

सामग्री- 2 कप आटा, 1 कप कच्चे या पके (खट्टे) आम का पल्प, 1 चम्मच किसा अदरक, 1 चम्मच तिल्ली सिकी, 1 चम्मच बारीक कटी हरी मिर्च, आधा चम्मच लाल मिर्च, 1 चम्मच शक्कर (चाहें तो) 1 चुटकी हींग, नमक स्वादानुसार, 1 बड़े चम्मच तेल मोन के लिये, बारीक कटा हरा धना।

विधि- सारी सामग्री मिलाकर आटा गूथ लें। जरूरत हो तो पानी डालें। पराठे जैसे तेल या घी से सेक लें। चटनी या अचार के साथ परोसे।

आम की पुरण पोली

आम का गुदा मिक्सर में एक-सा करें या छान लें। आम के गुदा को शक्कर मिलाकर आँच पर चढ़ाये, लगातार चलाते रहे। इसमें इलायची और इच्छानुसार बारीक कटे हुए मेवे मिलाएं। मावा जैसा गाढ़ा होने पर ठंडा होने दें। आटे में थोड़ा मोयन डालकर पूरण के बराबर नरम गूथ लें। बाकि छोटी-छोटी लोई बेलकर पूरण पोली की तरह बेलकर भरावन भरकर बेल लें। मीडियम आँच पर अच्छी तरह दोनों तरफ तवे पर सेंके। घी लगाकर परोसे। पूरण पोली की तरह यह भी ठंडी होने पर स्वादिष्ट लगती है।

-श्रीमती दीप्ति जोशी





अविनाश भट्ट

जन्मदिनांक 4-8-10
आत्मज श्री पवन-छाया
भट्ट, इन्दौर
शुभाकांक्षी- चि.उत्कर्ष,
हार्दिक, संकल्प, टीशा,
हर्षिता, झलक, मोती बंगला देवास



अशोक नागर

10-8-1962
शुभाकांक्षी- नागर परिवार
डिकैन, रतलाम, मनासा,
इन्दौर

58वां जन्मदिवस (15-8-15)
श्री चंद्रप्रकाश नागर को
जन्मदिन व स्वतंत्रता दिवस को
हार्दिक शुभकामनाएं।



बधाई कर्ता- समस्त परिवार,
उज्जैन

96वां जन्मदिन

**श्रीमती जमनादेवी पत्नी
स्व.नवनीतलालजी व्यास (नागर)
24 अगस्त 2015**

स्नेही, सरल, सेवाभावी, सुघढ़,
सर्वप्रिय, सच्चरित्र, सद्व्यवहारी,
दयापूर्ण, वात्सल्य पूर्ण रिश्तों के प्रति
समर्पित

शुभाकांक्षी- कृष्णकांत व्यास
मंदसौर, शरदचन्द्र नागर उदयपुर,
स्व. मुकुल नागर परिवार

-पी.आर. जोशी
उषा नगर एक्स. इन्दौर

**विवाह की 50वीं वर्षगाँठ का समारोह
(श्री अमरलाल पण्ड्या एवं श्रीमती अलका पण्ड्या)**

मेरठ, दिनांक 26 जून 2015 को श्री अमर लाल पण्ड्या सहायक आयुक्त आबकारी, उत्तरप्रदेश (सेवानिवृत्त) एवं श्रीमती अलका पण्ड्या के विवाह की 50वीं वर्षगांठ बड़ी धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री पण्ड्या मूलरूप से आगरा के हैं। मेरठ में आपके निवास 28, गगन एन्क्लेव रोहटा रोड़, मेरठ, पर प्रातः सत्यनारायणजी कथा पाठ एवं हवन का कार्यक्रम रखा गया। सायंकाल होटल एक्सप्रेस कोर्ट, हनुमान चौक मेरठ में संगीत, नृत्य का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें परिवार को सदस्यों एवं कार्यक्रमों में आये मेहमानों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।



सभी ने श्रीमती एवं श्री पण्ड्याजी को बधाइयां दी एवं उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुदीर्घ आयु की कामना की। कार्यक्रम की व्यवस्था एवं संचालन श्री नलिन दवे, श्रीमती अर्चना दवे (दामाद-पुत्री) एवं श्री उदित नागर, श्रीमती अनुपमा नागर (दामाद-पुत्री) द्वारा बहुत ही अच्छे स्तर पर किया गया।

गीत-संगीत के पश्चात् रात्री भोज का आयोजन किया गया, जिसमें मेरठ के साथ-साथ आगरा, जयपुर, दिल्ली, नोयडा, कोटा एवं नाथद्वारा से आये परिवारजन एवं अतिथियों ने लजीज एवं स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। कार्यक्रम में करीब 200-250 व्यक्तियों ने समारोह की शोभा बढ़ाई, कार्यक्रम आनंदपूर्वक संपन्न हुआ।

बधाई हेतु मो. 09368888873, 9358414124

-वीरेन्द्र नागर

14, राजविहार, जामडोली, आगरा रोड़, जयपुर मो. 9887423194

आत्मीय रिश्तों से सम्बद्ध

चि. कुणाल नागर (सुपुत्र- गोपाललाल सौ.शशि नागर उदयपुर) का मंगल परिणय सौ. सृष्टि नागर (सुपुत्री- श्री दिनेशचन्द्र सौ.अनिता नागर, आगरा) के साथ 5 जून को सम्पन्न हुआ।

सौ.नेहा व्यास (सुपुत्री- श्रीमती रजनी-श्री सुधीर व्यास) का मंगल परिणय चि. अहेत दुभाषी (सुपुत्र- श्रीमती मंजिता-श्री अजीत दुभाषी) के साथ पुणे महाराष्ट्र में 6 जून 2015 को सम्पन्न हुआ। बधाई

-पी.आर. जोशी, परिवार, इन्दौर

संता- यार कल रात घर देर से पहुँचा, बैल
बजाई पर बीवी ने दरवाजा ही नहीं खोला।
पूरी रात सड़क पर गुजारी।
वंता- फिर सुबह बीवी की खबर ली कि नहीं?
संता-नहीं यार सुबह याद आया बीवी तो मायके
गई है और चाबी तो जेब में थी।





श्री संदीप शर्मा को पदोन्नति

पुणे (महाराष्ट्र) की अंतरराष्ट्रीय कंपनी के एस.एच. इंटरनेशनल प्रायवेट लिमिटेड में कार्यरत श्री संदीप शर्मा अपनी लगन मेहनत और प्रतिभा के बल पर जनरल मैनेजर से वाईस प्रेसीडेंट के पद पर पदोन्नत हुए हैं। उपरोक्त कम्पनी विभिन्न आकार एवं प्रकार के कॉपर एवं एल्युमिनियम के रेक्टेंग्युलर कंडक्टर्स का उत्पादन एवं वितरण करती है। श्री संदीप शर्मा ने विलासपुर से बी.ई. (मैकेनिकल) की डिग्री प्राप्त की तत्पश्चात् आपने व्यावसायिक प्रबंधन में स्नातकोत्तर पदवी भी हांसिल की। आप इसके पूर्व पूना में विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनी में उच्च पदों पर कार्य कर चुके हैं।

खंडवा के मूल निवासी श्री शरदकुमार शर्मा एवं सौ. मोहिनी शर्मा के सुपुत्र श्री संदीप शर्मा अपने माता-पिता एवं धर्मपत्नी सौ. शालिनी शर्मा, पुत्र चि. अक्षत शर्मा के साथ वावधान पूना में रह रहे हैं। इनकी पत्नी सौ. शालिनी शर्मा पूना के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में व्याख्याता है। श्री संदीप शर्माजी को सभी स्नेहीजनों की ओर से ढेरों बधाईयाँ और प्रगति की शुभकामनाएँ।

-सौ. निधि दवे, राकेश दवे

दीप नगर, भुसावल (महा.) मो. 9423174975

युक्ता नागर अक्ल रही

पावटा (जालोर) निवासी श्री जीवराज नागर की सुपौत्री एवं श्री महेन्द्र नागर की सुपुत्री सुश्री युक्ता नागर ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सैकण्डरी परीक्षा में 80.17 प्रतिशत अंक हासिल कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। युक्ता नागर ने इस सफलता का श्रेय गुरुजन व परिवारजन को दिया। युक्ता ने बताया कि वह भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती है।



चि. हर्षित शर्मा को नियुक्ति की बधाई

उज्जैन। चि. हर्षित शर्मा पुत्र (मुकेश-मनीषा शर्मा) सुपौत्र (स्व. डॉ. रामरतनजी शर्मा) की नियुक्ति बैंगलोर स्थित M Y L A N LABORETRES Ltd (MNC) में हुई। आपने उज्जैन MIT Collage से Mechanical Branch में B.E. किया (70 प्रतिशत) एवं Bangalore से C.F.D. (computeried Fluid Dynamic) का Diploma किया। सभी परिवार वालों की ओर से बधाई। आप श्री हरिनारायणजी नागर शकुन्तला नागर पीपलरावां (देवास) के नातीन हैं।

-प्रीति व्यास

कारमल कान्वेन्ट, उज्जैन

सौ. ऋद्धि बहन अवाशिया को पी.एच.डी. की उपाधि

श्रीमती गार्डी इंस्टीट्यूट ऑफ होम साईन्स सोराष्ट्र युनिवर्सिटी राजकोट ने सौ. ऋद्धि अवाशिया को उनके फूड एण्ड न्यूट्रीशियन फेकल्टी का शोधप्रबंध 'ए स्टडी ऑन दी रो एंड राईप स्टेट ऑफ बेईल फ्रूट, बिल्ला (कच्चे और पक्के बेल फल की स्थिति)' के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

इस शोध प्रबंध में उन्हें युनिवर्सिटी की विभागाध्यक्ष श्री डॉ. नीलांजलि दवे का मार्गदर्शनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सौ. ऋद्धि बहन ने कुल एवं जाति गौरव बढ़ाते हुए मातृ-पितृ व ससुराल के सभी परिजनों से अभिनंदित, हर्षित हो रही हैं। सौ. ऋद्धि बहन के पति श्री मालव भाई मनोजजी बुच नेशनल लॉ युनियन के नियामक के सचिव के पद पर कार्यरत हैं। बधाई।

-अरविन्द अवाशिया, गोंडल (गुज.)

कु.पूर्वा नागर पिता राकेश नागर ने बी.एस.सी. 6 सेम में कॉलेज में फर्स्ट रैंक व युनिवर्सिटी में 4थी रैंक प्राप्त की है। यह हमारे नागर समाज के लिए बड़े गौरव की बात है। नागर ब्राह्मण परिषद उज्जैन की ओर से पूर्वा नागर को अनेक शुभकामनाएँ, बधाई। कु.पूर्वा बहुत अच्छे स्केच भी बनाती है जिसका एक दृश्य यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।



कु.पूर्वा का सुयश



कु.अंकिता शर्मा को सुयश



स्वर्गीय श्री ओम प्रकाशजी शर्मा की पोती एवं स्वर्गीय श्री जमनादासजी नागर की नातिन तथा श्री राजेश शर्मा एवं श्रीमती रमा शर्मा की पुत्री कुमारी अंकिता शर्मा ने M-Tech की उपाधि दिनांक 5 जुलाई 2015 को बँगलोर स्थित International Institute of

information Technology महाविद्यालय में हुए भव्य दीक्षान्त समारोह में प्राप्त की है। ज्ञात हो बँगलोर में प्रवेश के लिए अंकित शर्मा ने 'गेट' परीक्षा में 99.20 परसेन्टाईल अंक प्राप्त किये थे। International Institute of information Technology बँगलोर में प्रवेश के पश्चात कुमारी अंकिता शर्मा ने प्रत्येक परीक्षा में अव्वल रह कर अच्छे अंक प्राप्त किये थे। कालेज एवं अन्य प्लेसमेन्टों के माध्यम से कुमारी अंकिता को H.S.B.C. Bank, IBM Company, Sisco Company एवं Intel Pvt. Ltd, बँगलोर में नौकरी हेतु चयन हुआ। पूरे महाविद्यालय में कुमारी अंकिता शर्मा ही ऐसी छात्रा थी, जिनका सबसे अधिक प्लेसमेन्ट हुआ। वर्तमान में कुमारी अंकिता शर्मा Intel Pvt. Ltd, बँगलोर में कार्यरत है।

-प्रो. मधु व्यास, 135, सिल्वर हिल, प्रभु कुंज, धार

चि.शिवेश शर्मा का सम्मान

उज्जैन। चि. शिवेश शर्मा (सुपुत्र मुकेश-मनीषा शर्मा, उज्जैन) (सुपौत्र-स्व.डॉ. रामरतनजी शर्मा) ने सीबीएससी की 12वीं की परीक्षा 2015 में कॉमर्स में 90.2 प्रतिशत से 3 विषयों में A+ ग्रेड प्राप्त की। आपको 22 जून को कालीदास अकादमी में संकुलहाल के मंच पर विद्यार्थी विकास मंच समिति उज्जैन की ओर से शिल्ड व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इनका Sytosis Collage pune में Silection हो गया है। आपको सभी परिवार वालों की ओर से बधाई आप श्री हरिनारायणजी नागर शकुन्तला नागर पीपलरावां (देवास) के नातीन हैं।



-प्रीति व्यास

करमल कान्वेन्ट उज्जैन

कु. गार्गी एवं कु. आरुषि नागर को सुयश

उज्जैन। कु.गार्गी नागर (सुपौत्री- स्नेहलता नागर) एवं (सुपुत्री-श्री अरुण-सौ.रीता नागर) विगत वर्ष से टी.सी.एस. पुणे में आई.टी.एनेलिस्ट के पद पर कार्यरत है, कं. द्वारा उन्हें जुलाई 2015 में 1 वर्ष के लिए विशेष प्रोजेक्ट हेतु यु.एस.ए. (न्यूयार्क) भेजा गया है।



कु.गार्गी नागर



कु. आरुषि नागर

कु. आरुषि (सुपौत्री- श्रीमती स्नेहलता नागर) सुपुत्री (श्री सुभाष-सौ. शिखा नागर, शाजापुर) ने महाकाल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी उज्जैन से बी.ई. (आई.टी.) की उपाधि 7.66 सीजीपीए से उत्तीर्ण की है। हाल ही में हुए केम्पस सिलेक्शन द्वारा उनका चयन कोलावेरा कम्पनी में टेक्नीकल रिक्रूटर के पद पर बड़ोदा (गुजरात) में हुआ है। कु. गार्गी एवं कु. आरुषि की इन उपलब्धियों पर सारा परिवार गौरवान्वित महसूस करता है। उनकी इस उपलब्धि पर समस्त परिवार, समाज, मित्र एवं स्नेहीजन द्वारा हार्दिक बधाई।

श्री राकेश पाठक का सम्मान



खंडवा निवासी राकेश पिता नारायण पाठक 30 जून 2015 को रेल विभाग से ग्रेड गार्ड के पद से सेवानिवृत्त हुए उन्हें रेल विभाग द्वारा स्वर्ण पदक से डिविजनल मैनेजर भोपाल ने सम्मानित किया होटल क्लासिक भोपाल में परिजनों द्वारा आयोजित सह भोज में उक्त सम्मान प्रदान किया गया। खंडवा नगर समाज को गौरवान्वित करने पर पंडित मदन मोहन दवे, देवीदास पोतदार, प्रेम व्यास, राघवेंद्र राव मंडलोई, दीपक जोशी, मनोज मंडलोई, संजीव मंडलोई, शिवराज मेहता, प्रियंका दीवान, बबलू मंडलोई ने बधाई दी है।

वैवाहिक युवक

गुंजन दीपक वैष्णव

जन्म दि. 23-4-1987
स्थान- बड़ोदा (गुज.)
7.15 ए.एम. (कद- 5'8")
शिक्षा- बी.ई. (कम्प्यूटर्स)
कार्यरत- सॉफ्ट. इंजीनियर
हेलियोस साल्यूशन, बड़ौदा
सम्पर्क- बड़ौदा- 0265-2781175,
मो. 09687221626



अभिषेक दिनेश शर्मा

जन्म दि. 6-4-1993
समय- 5.10 पी.एम.
शिक्षा- हायर सैकण्डरी
कार्यरत- स्वव्यवसाय शर्मा
वीडियो विजन
सम्पर्क- इन्दौर 9755727817, 7746805812

मयंक कैलाशचन्द्र नागर

जन्म दि. 22-12-1987
स्थान- पचोर, 9.30 पी.एम.
शिक्षा- एम.टेक. आनर
(कम्प्यूटर साईंस)
कद- 5'6", वजन- 65
कार्यरत- प्रोफेसर निजी इंजीनियरिंग कॉलेज
स्वयं का एन.जी.ओ.
सम्पर्क- इटारसी फोन 07572-404274, मो.
9713427568, 9826741159



नीतिन गोपालकृष्ण दशोरा

जन्म दि. 8-7-1987
गौत्र- भारद्वाज (भट्ट), कद- 6'
शिक्षा- बी.ई. मैकेनिकल
कार्यरत- सिनीयर
इंजीनियर

आदित्य बिडला ग्रुप, रायपुर
सम्पर्क- नाथद्वारा 02953-233749,
मो. 09414541196

तुषार गौरांग त्रिवेदी

जन्म दि. 9-1-1986
12.05 पी.एम., नीमच
शिक्षा- बी.ई. मैकेनिकल,
एम.बी.ए.
कार्यरत- बिजनस एनालिस्ट
स्टार केपिटल, इन्दौर
सम्पर्क- 09893642227



रोहित ईश्वरी शंकर नागर

जन्म दि. 23-1-1990
10.28 पी.एम., सवाई माधोपुर
शिक्षा- एम.कॉम.,
एल.एल.बी. (अध्ययनरत)
कद- 5'6"
कार्यरत- मारुती कंपनी, कोटा
सम्पर्क- सवाई माधोपुर
मो. 09785542746, 09460823555



प्रवीण स्व. राजेन्द्र रावल

जन्म दि. 28-1-1989
12.30 पी.एम. भोपाल
कद- 5'10"
शिक्षा- बी.कॉम. (टैक्सेशन)
एम.बी.ए. (एचआर)

कार्यरत- रीमेक्स रीयल एस्टेट कंपनी
आय- मासिक 50,000/-
सम्पर्क- अनिल नागर
मो. 9826470339, 9826012383

वैवाहिक युवती

चित्रा गोपालकृष्ण दशोरा

जन्म दि. 1-11-1990
गौत्र- भारद्वाज (भट्ट)
शिक्षा- बी.टेक. (कम्प्यूटर
साईंस) कद- 5'6"
सम्पर्क- नाथद्वारा (राज.)
फोन 02953-233749, मो. 09414541196



आयुषी राजेन्द्र शर्मा (नागर)

जन्म दि. 17-6-1993
1.50 ए.एम., शाजापुर
शिक्षा- एम.एस.सी. थर्ड सेम
(मैथेमेटिक्स)
सम्पर्क- मोहन बड़ोदिया
मो. 9893278461



सुरभि पंकज दवे

जन्म दि. 16-11-1991
8.35 पी.एम., भोपाल
शिक्षा- बी.ई. (इलेक्ट्रॉ. एंड
कम्युनिकेशन) कद- 5'6"
कार्यरत- सॉफ्टवेयर
इंजीनियर एल एंड टी इंफोटेक पुणे
आय- 4 लाख
सम्पर्क- मो. 08989028669
07364-228526



सुमित विनोद कुमार नागर

जन्म दि. 30-12-1986
स्थान- वाराणसी (उ.प्र.)
शिक्षा- एम.बी.ए.,
कद- 6'2"
कार्यरत- कृति इंडिया
इंडस्ट्रीज मुम्बई, वार्षिक आय- 4 लाख
सम्पर्क- मो. 09919688984



कु.शिवानी अरुण कुमार पोद्दार

जन्म दि. 3-8-1993, समय- 10.15
शिक्षा- बी.एस.सी. विज्ञान, एम.एस.सी.
अध्ययनरत, कद- 5'2"
सम्पर्क- अरुण कुमार पोद्दार
मो. 9009972339, नागदा

पूजा नागर

जन्म दि. 30-5-1988, कद- 5'4"
शिक्षा- एम.बी.ए.
कार्यरत- प्रशांति कॉलेज
सम्पर्क- उज्जैन मो. 9827637647,
9977506659

मोनिका अशोक नागर

जन्म दि. 12-1-1993
समय- रात्रि 10 बजे, अहमदाबाद
शिक्षा- बी.कॉम., एम.कॉम. (द्वितीय)
कार्यरत- ब्यूटी पार्लर (स्वयं का)
सम्पर्क- रतलाम मो. 9826769403

श्रद्धा दिलीप नागर

जन्म दि. 15-10-1988
(10.35 ए.एम.) देवास
शिक्षा- एम.बी.ए. (एफ.टी.)
कद- 5'5"
सम्पर्क- मो. 9826857093

अदिति अशोक शर्मा

जन्म दि. 10-3-1992
(5.15 पी.एम.) नागदा
शिक्षा- बी.कॉम., बी.एड.,
एम.कॉम.
सम्पर्क- 9001869340,
9636468111



अलंकृता दशोरा

जन्म दि. 5-3-1987
शिक्षा- एम.एस.सी. बी.एड.,
पीएचडी अध्ययनरत
सम्पर्क- 9461925274



प्रतिमाओं की उपेक्षा को लेकर प्रधानमंत्री को लिखा पत्र

माननीय प्रधानमंत्री

श्री नरेन्द्र मोदीजी, सर्वप्रथम तो आपके नेतृत्व में एन.डी.ए. सरकार के सफलतम एक वर्ष पूर्ण होने पर बधाई।

महोदयजी, मैं प्रो. ऋषी कुमार शर्मा (राजनीति शास्त्र) सेवा निवृत्त प्राचार्य गर्ल्स डिग्री कालेज खण्डवा (म.प्र.) का रहने वाला हूँ। महोदय, आपके द्वारा देशहित में लिये गये महत्वपूर्ण निर्णयों एवं आपके द्वारा किये जा रहे प्रयासों से मैं बहुत प्रभावित हूँ, किन्तु महोदय मैं एक ओर महत्वपूर्ण पहलू की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि महोदय, देशभर में प्रत्येक शहर व प्रत्येक ग्राम में चौराहों पर मैंने देशभक्तों, महापुरुषों, महान व्यक्तियों की प्रतिमाओं की दुर्दशा

होते देखी है। जिससे मन व्यथित हो जाता है। जब इनकी जयंती या पुण्यतिथि होती है तो इन प्रतिमाओं के आसपास साफ-सफाई करके पुष्पहारों से लाद दिया जाता है। किन्तु साल के बाकि दिनों में इन पर धूल मिट्टी जमी रहती है। पशु पक्षियों की गंदगी भी आसपास रहती है इनके मस्तक पर मौसम की मार भी पड़ती है।

महोदयजी, मंदिर के शिखरों पर मूर्तियों की स्थापना भी उचित प्रतीत नहीं होती है। इन्हें भी मौसम की मार झेलनी पड़ती है, अक्सर लोग अपने स्वर्गवासी हुए परिवारजनों की स्मृति में भी मंदिरों में मूर्ति स्थापना करा देते हैं व कभी पलटकर नहीं देखते कि उस मूर्ति की देखरेख हो रही है या नहीं। देवी-देवताओं की



मूर्तियों की स्थापना तो कर दी जाती है, लेकिन उचित रख-रखाव व देखभाल की कमी के चलते यह उपेक्षित होती है। न पूजा होती है ना नैवेद्य चढ़ता है। यह सर्वथा अनुचित है। इस तरह की प्रथाओं को बंद किया जाये या प्रशासन, नगर निगम, जनभागीदारी से, जन सहयोग से यह मुहिम चलाये जिससे

स्थापित हुई देवी देवताओं की मूर्तियां एवं हमारे महापुरुषों की प्रतिमाएं उपेक्षित न हों।

महोदयजी निवेदन है कि इनकी देखरेख के प्रति अपना कर्तव्य निभाने हेतु प्रयास किये जाए। इनके आसपास विशेष सफाई व्यवस्था हो, इनके मस्तक पर छत्रियों की व्यवस्था की जाये या शेड बनाया जाये ताकि पक्षियों की गंदगी से इन्हें बचाया जा सके, साथ ही मौसम तेज धूप, गर्मी और बारिश से भी इन्हें बचाया जा सके।

महोदयजी यह मेरी निजी भावनायें हैं मेरा उद्देश्य किसी भी वर्ग को अपमानित करने का या क्षति पहुँचाने का नहीं है। यदि किसी की भी भावनाएं आहत हुई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

महोदय, उक्त व्यवस्था ही हमारी उन महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

जय हिन्दी, जय भारत

-प्रो. आर.के. शर्मा

74, मातृछाया, आनंद नगर, खंडवा

मो. 9424549184

श्री तुलसीदासजी रचित श्रेष्ठ दोहे

ऊँचा-ऊँचा सब कोई चले, नीचा चले न कोई,
तुलसी नीचा जो चले, वो सब से ऊँचा होय।

अनीति ये जात है, धर्म, राज और वंश,
तुलसी यह दृष्टांत है कौरव, रावण, कंस।

तुलसी हाय गरीब की कबहुं न खाली जाय,
मुए ठोर की खाल से लोह गरम हो जाय।

पाप पुण्य छुप-छुप करो, सोवत करो के जाग,
तुलसी कहां छूपी रहे, घास घुसाई आग।

सत्य वचन अधीनता, परस्त्री मात समान,
इतने से हरि ना मिले तो तुलसीदास ज मान।

तुलसी अपने राम को रीझी भजो या खीज,
खेत पड़े पर उपजे, उलटे सुलटे बीज।



तुलसी पर घर जाय के दुःख न कहीए रोइ,
मान गुमावे आपणो, बांट न लेवे कोई।

तुलसी इस संसार में भांति-भांति के लोग,
सबसे हिल-मिल चालिए, नदी नाव संजोग।

-संकलन उषा ठाकोर, मुम्बई

कर्मों की बात है...

जीवन मिलना भाग्य की बात है, मृत्यु होना समय की बात है, पर मृत्यु के बाद भी लोगों के दिलों में जीवित रहना, ये कर्मों की बात है।

संकलन-
जितेन्द्र नागर,
देवास (म.प्र.)

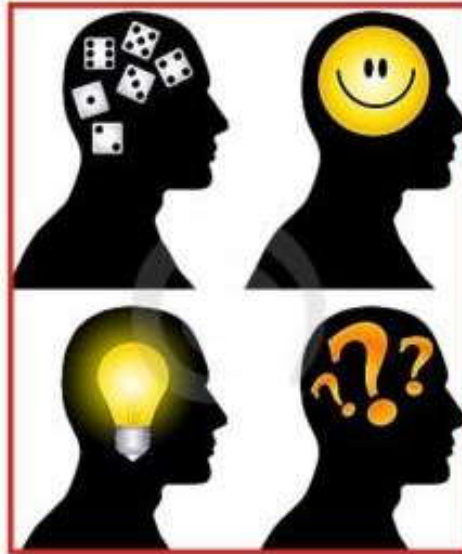


मानसिकता है कि... बदलती नहीं...

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी मानसिकता होती है, जिसे व्यक्तिगत सोच भी कहा जा सकता है। देश, काल, परिस्थिति के अनुसार यह मानसिकता बदलनी चाहिए, परन्तु बदलती नहीं, कहा जाता है कि परिवर्तन संसार का नियम है, जरूरी है कि समय के साथ मनुष्य की सोच एवं आचरण बदल जाए, यदि मानसिकता नहीं बदलती है तो युग परिवर्तन कैसे होगा? यह भी सोच का विषय है कि क्या किसी के कहने या सरकारी प्रचार से बदलाव आ सकता है? पीढ़ियों के परिवर्तन के मान से मानसिक सोच में बदलाव आना चाहिए, अन्यथा परिवारों में टकराव एवं अलगाव रोका नहीं जा सकेगा। खासकर पुराने लोग इस बदलाव को आसानी से स्वीकार नहीं करते, परन्तु वर्तमान के युवा पर पाश्चात्य संस्कृति, का जादू सिर चढ़कर बोल रहा है, यह बात अलग है कि उन्होंने उस संस्कृति के अवगुणों को आत्मसात कर लिया है तथा गुणों को छोड़ दिया है।

मैं भी मानती हूँ कि पुरानी बातें एवं आचार-विचार ही ज्यादा श्रेष्ठ एवं अनुकरण के योग्य थे, परन्तु नई पीढ़ी को वे पसन्द नहीं इन बातों के दुष्परिणाम भी देखने को मिलते हैं, परन्तु नई हवा में ही सब बहना चाहते हैं। परिवारों में टकराव एवं अलगाव का मुख्य कारण मानसिकता में भेद का होता ही है। आज भी कई परिवारों में सास-बहू के साथ पुराने तरीके से पेश आती हैं, मतलब अपनी सल्तनत कायम रखते हुए खासकर विवाह के प्रारंभिक वर्षों में सास को लगता है कि बहू उसके बेटे को अपने कब्जे में कर लेगी तथा उसे स्वयं को अंततः वृद्धाश्रम की राह पकड़नी पड़ेगी, यह मानसिकता है। जबकि सास यह नहीं समझती कि

उसके कतिपय सोच का कोई महत्व नहीं है। समय के बदलने से इस सोच में परिवर्तन न आने का कारण परिवार नियोजन भी है, एक ही पुत्र है, वह भी बेवफा हो गया तो माँ कहाँ जाएगी? इस मानसिकता में अंतर लाना ही पड़ेगा। सास यदि अपनी बहू को बेटी की तरह रखे, तो ऐसी अनचाही स्थिति आएगी ही नहीं। परन्तु कई बार नए जमाने में पुराना



सोच ही अलगाव का कारण बन जाता है।

बहुत प्रचार होता है- बेटी बचाओ, बेटी बचाओ, यह क्यों नहीं होता कि मानसिकता बदलो... मानसिकता बदलो। आज भी कई घरों में वरिष्ठ लोग अपनी पुरानी मानसिकता के साथ जी रहे हैं तथा पूर्वाग्रह से ग्रस्त भी। माता-पिता बड़े जतन से अपनी बेटी का ब्याह करते हैं, परन्तु पुराने विचारों वाले उसके ससुराली उसका जीना हराम कर देते हैं, तब बेटी क्यों? पिछले दशक में कन्या भ्रूण हत्या का जोर चला। क्या कारण था कि लोग बेटी को गर्भ में ही मारने लगे थे। उसके खिलाफ खूब अभियान चले, कई कानून बनाना पड़े। मेरा सोच है कि

मानसिकता में परिवर्तन लाकर इस तरह का वातावरण बनाना चाहिए कि बेटी को समाज में बेटों की तरह दर्जा मिल सके। इक्कीसवीं सदी में प्राचीन मानसिकता वाले लोग समाज में अवरोध बन रहे हैं।

बेटी घर में भी असुरक्षित है और बाहर भी। लोग बेटी को बराबरी का दर्जा देने की बात मात्र करते हैं, क्योंकि बुढ़ापे में यदि बेटी के घर जाकर कुछ दिन बिताना हो तो वे उसे नियम विरुद्ध मानते हैं कहाँ आया मानसिकता में बदलाव? आज भी बहुत कम लोग हैं जो बेटी के जन्म पर मिठाई बांटते हैं, कई घरों में तो आज भी बेटी जन्म के बाद मातम मन जाता है। दरअसल जब तक बेटी को उचित वातावरण देने की मानसिकता नहीं बन जाती तब तक बेटी बचाओ के नारे ही अच्छे लगेंगे अमल नहीं होगा।

मानसिकता का जो प्रश्न मैंने उठाया है यह केवल बेटी के बारे में नहीं जीवन के हर क्षेत्र के लिए है, जहाँ समय के अनुसार मानसिकता बदलने की जरूरत है। स्वयं के जीवन, कार्य एवं व्यवहार में श्रेष्ठता लाने के लिए मानसिकता बदलनी ही पड़ेगी। परन्तु अफसोस कि यह आसानी से बदलती नहीं।

-सम्पादक

इस सम्बन्ध में अपने विचार 20 अगस्त 2015 तक अवश्य भेज दें। जिन्हें सितम्बर 2015 के अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

संता (बंता से)- तुम जानते ही हो कि मैं कितनी मेहनत करके नीचे से ऊपर आया हूँ।
बंता (संता से)- क्यों नहीं, पहले तुम बूट पॉलिश किया करते थे और अब सिर पर तेल मालिश का काम करते हो।

एक विसंगति...और उसका उपाय

जिंदगी की वास्तविक खूबसूरती यह है कि उसमें प्रश्न तो अनेक हैं परन्तु उत्तर बहुत कम हैं। दूसरी ओर यह राय भी दी जाती है कि सदैव समाधान का साथ दो-समस्या का हिस्सा कभी मत बनो।

किन्तु कहते हैं कि सूरज के नीचे इस धरा पर प्रत्येक समस्या के लिये या तो कोई समाधान है या फिर वह समाधान से परे हैं। यदि कोई समाधान है तो उसे खोजें, यदि नहीं तो फिर उसकी चिंता छोड़ दें। इस समय एक जबर्दस्त विसंगति हमारे समाज में पाई गई है। आइये देखें कि यह विसंगति क्या है और इसकी जड़ कहाँ पर है तभी हम इसके इलाज का उपाय खोज सकेंगे।

हम देखते हैं कि हमारे समाज के कतिपय लोग सुदूर गाँवों में निवास कर रहे हैं और उनका प्रमुख कार्य है कृषि।

हाल के कुछ वर्षों से हम यह भी जानते हैं कि कृषि कार्य बहुत रिस्क वाला होता जा रहा है क्यों न हो, पर्यावरण के साथ हमारी छेड़छाड़ के कारण वर्षा में भी अनिश्चितता की स्थिति बन गई है और कृषि कार्य वर्षा पर अवलंबित होता है। इस कारण विशेषतः वहाँ के युवा वर्ग का कृषि कार्य के प्रति मोहभंग होता जा रहा है, और वे अन्य छोटे-मोटे व्यवसाय अपना लेते हैं। ऐसे व्यवसाय जिनमें कोई मोटी आमदनी नहीं होती है और इन व्यवसायों की स्टेटस (प्रतिष्ठा) कोई कमतर ही होती है।

ऐसे युवाओं को शादी ब्याह रचाने के लिए काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। यहाँ तक कि अब ग्रामीण युवतियाँ भी शहर के युवकों से शादी करना ही बेहतर समझती हैं।

गाँव का सक्षम कृषक तो अपने बच्चों को शहर भेजकर अच्छी शिक्षा दिला सकता है, किन्तु अधिकांश इतने सक्षम

नहीं होते हैं। अतः वे आगे की शिक्षा से या यूँ कहे कि अपने सुनहरे भविष्य के स्वप्न साकार करने से वंचित रह जाते हैं, यही एक विसंगति है, और हमें इसे दूर करने का उपाय खोजना है। वह उपाय जो अभी अदृश्य और अस्तित्वहीन है। आर्थिक रूप से पिछड़े ऐसे युवाओं की जो शहर जाकर आगे की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। सहायतार्थ समाज को एक कदम आगे बढ़ाना होगा और यह एक सामाजिक दायित्व भी है किन्तु काश! इस दायित्व का निर्वाह अब कम ही देखा जाता है।

जीवन की माप हमारी आयु से नहीं, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि हमने दूसरों के हितार्थ क्या/कितना (अनुदान का) कार्य किया।

बेंजामिन फ्रैंकलिन कहते हैं अच्छा करना, अच्छा कहने की तुलना में बेहतर होता है। विद्वान सिसरो भी कहते हैं कि लोगो की भलाई करना ही सर्वोच्च सिद्धांत है। वही रे-लीमन विलबर ने कहा कि यदि हम दूसरों की भलाई के बारे में नहीं सोचते और उनके हितार्थ कुछ नहीं करते तो हम सुख का एक बड़ा अवसर (स्रोत) खो देते हैं।

अच्छे इरादे कभी भी गलत नहीं होते। सर्वप्रथम तो हमें ऐसे युवाओं की पहचान (ट्रेसआउट) करना होगा, जो वास्तव में सहायता के पात्र हैं। वह सहायता जो उनके उस कल के लिये होगी जो उनका अपना सपना है। इस सहायता हेतु एक कोष की स्थापना करना आवश्यक होगा। इस कोष की स्थापना ठीक उसी तर्ज पर करना होगा जिस प्रकार वर्षों पहले पंडित मदनमोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना हेतु अपनी पगड़ी तत्कालीन राजा-महाराजाओं के सामने रखकर अपने पुनीत संकल्प को दोहरा कर उनसे अनुदान मांगा था। उन राजा-

विषय- शहरी समृद्धि का उजाला गाँवों तक क्यों नहीं?

महाराजाओं ने भी मालवीयजी के संकल्प की शुचिता को पहचानकर अपने सामर्थ्य के अनुरूप दिल खोलकर उन्हें अनुदान दिये थे। आज भी बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी भारत में एक मिसाल के तौर पर है।

इस कोष के लिये दूसरा उपाय है कि समाज में कुछ फिजूलखर्ची के कार्य देखते हैं जैसे मृत्युभोज, कथाओं के भंडारे और ऐसे ही कुछ और। क्यों न ऐसे अवसरों का लाभ इस पुनीत कोष को दिलाया जाय, लोगों में जागरुकता लाकर। यह दान किसी नेत्रदान या देहदान से कम नहीं होगा।

अश्वघोष के अनुसार 'धनो में श्रद्धारूपी धन श्रेष्ठतम होता है।

इस कोष की स्थापना हो जाने के बाद इसकी जानकारी सुदूर गाँवों तक प्रचार-प्रसार माध्यमों से दी जानी चाहिए। इसके साथ ही इस कोष से सहायता पानी की पात्रता (अर्हता) भी निर्धारित की जाना चाहिए एवं यह राशि किस रूप में (ऋण आदि) दी जाएगी यह भी स्पष्ट करना होगा। इस प्रकार यदि इस विचार को मूर्त रूप दिया जा सके, तो अवश्य ही यह विसंगति बहुत कुछ दूर की जा सकती है, व ऐसे युवाओं के भविष्य को संवारा जा सकता है। कहते हैं-

जलाने से चराग जला करते हैं, खिलाने से फूल खिला करते हैं। कहीं मुकद्दर के भरोसे भी कोई जीता है, मुकद्दरों के महल भी बनाने से बना करते हैं।

अंत में चलते-चलते कवीवर रविन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में-

बीज के हृदय में प्रतीक्षा करता हुआ विश्वास जीवन में एक महान आश्चर्य का वादा तो करता है किन्तु उसे वह उसी समय सिद्ध नहीं कर सकता।

-मोresh्वर मंडलोई
खंडवा (म.प्र.)

सेवा से बदल जाता है स्वभाव

वह सेवा ही क्या, जो स्वार्थ के वशीभूत होकर की गई हो। स्वार्थवश सेवा सेवा नहीं कहलाती है। सेवा का वास्तविक अर्थ ही निःस्वार्थ है। जिसमें स्वार्थ बसता ही नहीं है।

सेवा दो प्रकार की होती है, प्रत्यक्ष सेवा व अप्रत्यक्ष सेवा। प्रत्यक्ष सेवा में मनुष्य दूसरे के समक्ष रहकर उसके मनोभावों के अनुरूप उसकी सहायता करते हुए अपने कर्मों को सेवा का रूप दे देते हैं। सेवा करते हुए मन की सन्तुष्टी ही उसका मूल्य होती है। सच्चे मन से सेवा करने पर यह भावना कभी नहीं होती कि मैंने जो सेवाभाव से कर्म किया है, उसका प्रतिफल मुझे मनवांछित फल के रूप में प्राप्त होगा।

सेवा कभी अपनों के लिये होती है और कभी दूसरों के लिये। अपनों के लिये सेवा करते हुए तो बहुत मिल जाते हैं। यहाँ मैं यह कहना भी नहीं भूलूंगी कि वर्तमान में अपनों की सेवा करना भी बड़ा ही मुश्किल कार्य है। कभी किसी के पास समय नहीं है तो कभी रिश्तों की गरिमा नहीं है। अपनों के लिये सेवा करने वाले भी (कर्मचारी) मिलने लगे हैं। अपनों के लिये

सेवा का कर्मचारी लगाकर वे अपनी सेवा भावना का बढ़-चढ़कर प्रचार करते हुए दिखाई देते हैं।

जहाँ मन से अपनों की सेवा होती है वहाँ जाकर तो देखें। कैसी शान्ति प्राप्त होती है। वहाँ का वातावरण सकारात्मक उर्जा से भरपूर होता है। परिवार की उन्नति दिखाई देती है। ईश्वर यह



निःस्वार्थ सेव कभी निष्फल नहीं जाती

अवश्य ही मिलता है। यह भी सर्वविदित है कि जिसके मन में सेवा भावना होती है वह कभी किसी का बुरा नहीं चाहेगा और न ही कभी किसी का बुरा करेगा।

दूसरों की सेवा करने वाले भी दो प्रकार के होते हैं। कोई अपनी सेवा चुपचाप पहुँचाता है तो कोई खूब दिखावा करके। गुपचुप व बिना दिखावे के सेवा करने वालों में आप स्वयं ही देखेंगे कि कैसा शान्त जीवन जी रहे

हैं। ईश्वर हर क्षण उनकी सहायता करने के लिये तत्पर रहते हैं। वहीं दिखावे के लिये की गई सेवा करने वाले उसके प्रतिफल से कोसों दूर रहते हैं भले ही समाज में उनकी खूब वाहवाही हो, लेकिन मन की शान्ति कभी प्राप्त नहीं होती। कहीं न कहीं मन कचोटता ही रहता है कि जो कुछ किया शायद उचित नहीं था।

जीवन में एक बार भी यदि आपने निःस्वार्थ सेवा की है तो आपको उसकी लत लग जायेगी। उससे जो सुख की अनुभूति होगी वह किसी भी मूल्य पर प्राप्त नहीं की जा सकती। आप उस सुख को प्राप्त करने के लिये बार-बार निःस्वार्थ सेवा के मार्ग पर जाने का प्रयत्न करते रहोगे।

**-श्रीमती सुधा प्रेम व्यास
हरीगंज ब्राह्मणपुरी खण्डवा**

एक बार संता को एक लड़की से प्यार हो गया। वो रोज़ उसे ऑफिस, जहाँ को काम करती, ले जाने और वापस घर छोड़ के आने लगा। एक दिन रास्ते में लड़की बेहद उदास हो कर बोली, कल लड़के वाले मुझे देखने आये थे। संता- फिर?, लड़की- मुझे पसंद कर गए। संता बेहद दुखी होते हुए बोला, अब? लड़की रोन लगी और रोते-रोते बोली, अगले महीने की शादी तय हो गई, उनका घर लक्ष्मी नगर है। संता गहरी सोच में पड़ गया। लड़की-अब क्या करना है, सोचो जल्दी।

संता- सोच ही तो रहा हूँ। अब लक्ष्मी नगर से तुम्हें ऑफिस छोड़ने के लिए मुझे रिंग रोड लेनी पड़ेगी, फिर 3 किलोमीटर बाद यू-टर्न, उसके बाद वन वे के कारण राजगुरु रोड, फिर वो मुखर्जी नगर वाला फ्लाई ओवर... ओये नहीं मेरे बस की बात नहीं है, तू अपने पति को ही बोल कोई इन्तेजाम करे, मुझे बहुत लम्बा पड़ेगा।



कर्म पर हमारा अधिकार

जीवन में कर्म अपरिहार्य है। प्राणी सांसारिक जिन्दगी में इसके बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा सकता। कर्म-हीनता आलस्य का पर्याय है वह कभी उठ नहीं सकता। गीता में भगवान ने अर्जुन को 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, मा कर्मफल हेतु भूर्मति शङ्कोऽस्त्व कर्मणि।'। ये संदेश दिया कि कर्म करें, किन्तु उसके फल की आशा मत करो। मनुष्य का यह अधिकार है वह कर्म करने में स्वतंत्र है। पुरुषार्थ के लिये कर्म करो ताकि उद्धार होए।

मनुष्य ही अधिकार स्वरूप कर्म करने को स्वतंत्र है। कर्म कैसे हो? यह एक तो पूर्व कर्मों का भोग व दूसरा परलोक सुधारना के भविष्य पर संभाव्य हो सकते हैं। जिन्दगी में जीवन की गाड़ी परिवार, प्लेटफार्म से किस दिशा में मोड़ लेकर आगे दौड़ेगी व सामाजिक परिवेश पर अवलंबित होती है। संसार में विकास, विज्ञान व आधुनिकता की परिवर्तित समय में मनुष्य को अधिक व्यस्ततम कर दिया है। शिक्षण के बढ़ते कदमों परिवार की जिम्मेदारी, आर्थिक उन्नति इन लक्ष्यों उद्देश्य प्राप्ति की प्रयत्नशीलता में परम्परा, संस्कार व संस्कृति घोषणा के विचारों की कमतरता हो रही है। ऐसी अवस्था में स्वत्व से उपर उठकर आसपास के वातावरण व स्थिति में जरूरतमंदों की सेवा, समाज की एकजुटता व उसके

विकास, संकटावस्था को उबारने के प्रति कर्तव्य पालन की दिशा में मित्रवत बनाकर काम करने की आवश्यकता प्रतीत होती है। मानवता व संवेदनशीलता के गुण मनुष्य में होते ही हैं इन्हें सक्रिय करने के लिए दिमाग में विचार कौंधना जरूरी है। मानव दिमाग विचार मंथन का खजाना है। इसके दो भागों में किसी कार्य के प्रति दोनों प्रकार के सकारात्मक व नकारात्मक विचार उत्पन्न होते हैं और मन उनकी सक्रियता को दिशा देता है। क्योंकि दिमाग सोचता है व मन (दिल) उसे करता है। जहाँ तक सेवा का प्रश्न है जीवन नैय्या खेने में मनुष्य अपनों के जीविकाउपार्जन एवं बाहर के कामों में मशगुल रहता है। यहाँ विचार करे तो उसे दोहरी भूमिका से तात्पर्य पारिवारिक जिम्मेदारी और समाज के प्रति सेवावृत्त (समाज का विकास-सेवाकार्य-निर्बल व जरूरतमंदों की आवश्यक सहायता) निःस्वार्थ-निर्लोभन। अधिकांश लोग इससे जुड़े हुए भी हैं। निःस्वार्थ-सेवा सामने वालों को उठाने व स्वयं को आत्मतुष्टि संतोष ही प्रदान करती है। इसमें प्रतिफल की तनिक भी आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। सेवामय जीवन एक व्यवहारिक दर्शन है। सेवा के कई विकल्प हैं भगवत्सेवा, माता-पिता गुरु- सेवा, अतिथि-सेवा, पति-सेवा, दीन-दुखियों की सेवा, रोगी सेवा। गो-सेवा, समाज-देश सेवा।

'जीना है तो सीना है' यह कहावत है

इस पर ध्यान दें तो जीवन में आवश्यकता से अधिक की आकांक्षा न रखते जितना है उसी में संतुष्ट हो सेवारत होकर जिये तो निःस्वार्थ की परिभाषा को सच मानते आत्म सुध व शांति का एहसास होता है व निष्फलता का भाव रखते। जीवन में कभी न कभी प्रसंग घटना वरदान स्वरूप प्रभु के प्रसाद का फल, इसी जीवन में प्राप्त हो जाता है। इसे परमेश्वर की ही देन समझें। निःस्वार्थ सेवा ही आत्मशांति का एक शस्त्र है। जीवन में निःस्वार्थ सेवा से जुड़ना ही संघर्षमय जीवन में सुलभ जीवन की राह प्रशस्त करता है। मनुष्य को दीन-दुखियों की सेवा में लगे रहना ही चाहिए। सिद्धार्थ, रोशनी, प्रेम (भगवान बुद्ध) से शांति व सेवा का संदेश भारत व विदेश में प्रवाहित हुआ था। सबसे प्रेम करो, किसी को दुखी मत करो।

वर्तमान परिवर्तनशील दुनिया में उक्त सरोकार की स्थिति कमतर अवश्य है, परन्तु इसके प्रेमी अवसर नहीं गवाते। सेवा में प्रशंसा, सम्मान, स्वार्थ का अंश भी गहरा है। इसके विपरीत यदि हम में निःस्वार्थ सेवा की सच्ची-लगन की ज्योति प्रज्वलित है तो निर्बलों दुखी हताश लोगों को ऊँचा उठाने में कोई रुकावट आ नहीं सकती। भगवान कृष्ण का निष्फल कर्म का संदेश सत्य है।

-पी.आर.जोशी

528, उषा नगर, एक्स., इन्दौर

एक बार एक आदमी की बीवी मायके गयी हुई थी। आदमी उसे लेने अपने ससुराल गया। जब बीवी को लेकर वो ससुराल से वापस आने लगा तो उसकी सास ने उसके हाथ में 20 रुपये दे दिए।

दोनों वापस घर आ गए। घर आने पर आदमी कई दिनों तक अपनी बीवी से झगड़ता रहा। उससे सही तरीके से बात भी नहीं कर रहा था। एक दिन उसकी बीवी ने उससे तंग आ कर उस को पूछ लिया, क्यों जी, जब से आप मुझे लेकर आये हो, आप मुझसे झगड़ते ही रहते हो। ठीक से बात भी नहीं करते, ऐसी क्या बात हो गयी? आदमी- तुम्हारी माँ को कोई भी शर्म नहीं है न? बीवी- क्या हो गया? ऐसा क्यों बोल रहे हो? आदमी- जब मैं तुम्हें लेने गया था तो पूरे 100 रुपये के केले लेकर गया था और तुम्हारी माँ ने आते वकूत मेरे हाथ में 20 रुपये थमा दिए थे। बीवी तपाक से बोली- जी आप वहाँ मुझे लेने गए थे या केले बेचने?



परम्पराएं और हम

हाटकेश्वर समाचार पत्र के मार्च, अप्रैल, मई के अंक में लेख 'मृत्यु पर्यन्त अस्पर्शता (सूतक) का नियम पूर्णतया वैज्ञानिक है' पढ़ा। जिस लेख का शीर्षक ही भ्रान्तिपूर्ण हो, उसकी विषय वस्तु वर्तमान परिस्थितियों में कहाँ तक सार्थक व सटिक होगी, यह विचारणीय है। उक्त शीर्षक में मृत्यु पर्यन्त शब्दों का उपयोग किया गया है। जिसका शाब्दिक अर्थ निकाला जावे तो यही कहा जा सकता है कि मृत्यु होने तक अर्थात् लेखक महोदय के हिसाब से मृत्यु तक शोक (सूतक) रखा जावे। फिर मृत्यु बाद क्या करें?

हिन्दी शब्द कोष में पर्यन्त शब्द का अर्थ 'अंतिम सीमा तक' दिया गया है। यदि लेखक महोदय का तात्पर्य हम संकेत द्वारा यह समझें कि 'मृत्यु पर्यन्त' का आशय मृत्यु उपरान्त है तो उन्होंने कहा है कि संक्रमक रोगी की मृत्यु के बाद 10 दिन तक अस्पर्शता (सूतक) इसलिए रखा जाए कि संक्रमण रोगी की मृत्यु के बाद संक्रमक कीटाणु दस दिन तक घर में रहते हैं, इस कारण अस्पर्शता (सूतक) बरती जाकर दसवें दिन पूरा घर लीप कर गौमुत्र से साफ किया जाता है। मेरा यह कहना है कि संक्रमण के कीटाणुओं को दस तक ही क्यों रखो, उसे दूसरे या तीसरे दिन सफाई करके दूर क्यों नहीं कर सकते और यदि कोई सामान्य रोग, हार्ट अटैक या एक्सीडेंट से मरे, तो उसका भी सूतक दस दिन क्यों रखा जावे? उसमें कोई संक्रमण के कीटाणु नहीं रहते हैं।

संक्रमणता तो हमारी जीवन शैली में समा गई है घर, बाहर हर जगह प्रदूषित वातावरण में जीवन व्यापन करने को मजबूर है। इससे

बचने के लिए लोग प्रयासरत भी रहते हैं। बहुत से बाहर मास्क लगाकर निकलते हैं तथा प्रत्येक घरों में साफ-सफाई का विशेष ध्यान दिया जाकर फिनाईल आदि से नित्य पोंछा लगाया जाता है। यदि कोई घर में बीमार भी हो तो बिस्तर की चादर, कपड़े वगैरह अलग से वाशिंग मशीन में डेटाल पानी में मिलाकर धोए जाते हैं तथा हर तरह से सतर्कता बरती जाती है।

जिसको जीवन मिला है, उसकी मृत्यु भी एक दिन आनी है, जो अटल सत्य है। जहाँ तक सामान्य रूप से मृत्यु होने पर कभी वैज्ञानिक आधार बताकर, कभी 'आत्मा' दस दिन घर में रहती है, का कहकर दस दिन तक सूतक रखने की प्रथा का निर्वाहन किया जा रहा है। जो वर्तमान में भागमभाग की जिंदगी में समय की कसौटी पर कहीं से कहीं खरी नहीं उतरती है। परिजन की मृत्यु का दुःख, शोक दस दिन तो क्या पूरे जीवन ही सालता है। उसे जीवनभर नहीं भुलाया जा सकता? फिर मात्र दस बारह दिन खाली दिखावे के कार्यक्रम क्यों? आजकल संयुक्त परिवार धीरे-धीरे खत्म होते हुए सीमित हो गए हैं। सीमित परिवार में बच्चे कोई दूरदराज इलाकों, बम्बई, पूना, बेंगलोर, हैदराबाद में पढ़ रहे हैं या नौकरी कर रहे हैं उनके लिए इतना लम्बा समय शोक मनाने घर में बैठना संभव व व्यवहारिक नहीं है। लेखक महोदय ने जो

मनुष्य को तीन बार पलक झपकाने में जितना समय लगता है, उतने ही समय में मृत्यु के पश्चात आत्मा तत्काल दूसरा चौला ग्रहण कर लेती है, शरीर नश्वर है, आत्मा कभी नहीं मरती वह अमर है।

वैज्ञानिक तथ्य की दुहाई दी है, वह सारहीन है, वैज्ञानिक तथ्य तो यह भी कहते हैं कि पंचतत्व से बना शरीर मृत्यु होने पर अग्नि को समर्पित करने के पश्चात् पंचतत्व में विलीन हो जाता है। पत्नी देहरी तक और परिवार जन शमशान ही साथ देते हैं।

यही तो संसार का चक्र है जो चलता आ रहा है और चलता रहेगा। जीवन और मृत्यु के कार्यक्रम ऊपर वाले ने fixed कर रखे हैं। बाकी के समस्त कार्यक्रम (प्रथाएँ) हमने बनाएँ हैं। जो बदले भी जा सकते हैं।

यदि हम 'आत्मा' की बात करें तो यह कहा जाता है कि मृत्योपरांत आत्मा दस दिन तक घर में ही रहती है। इसलिए दस दिन तक का शोक रखा जाता है। एक जैन साध्वी के अनुसार मनुष्य को तीन बार पलक झपकाने में जितना समय लगता है, उतने ही समय में मृत्यु के पश्चात आत्मा तत्काल दूसरा चौला ग्रहण कर लेती है, शरीर नश्वर है, आत्मा कभी नहीं मरती वह अमर है। गीता में भी भगवान कृष्ण ने अर्जुन को संदेश देते हुए कहा है कि मृत्यु अटल सत्य है तू जिनके लिए शोक कर रहा है, उनकी आत्माओं ने दूसरा शरीर ग्रहण कर लिया है।

यहाँ यह कहना सामयिक होगा कि प्राकृतिक आपदाओं से चाहे वह अंजार व नेपाल से बाद, पहाड़ धंसने से हो, हजारों लोग काल के ग्रास बन गए, जिनके शरीर के आज तक अते-पते नहीं हैं। महीनों निकल जाने के बाद भी नहीं लौटे, उनके परिजन आस लगाए अभी भी इंतजार कर रहे शायद वे लौटकर आ जावे। जबकि हकीकत यह है कि सब मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। मेरा यह प्रश्न है कि उनका

कोई दसवां बारवां या तेरहवां नहीं हुआ तो क्या उनकी सबकी आत्माएं अभी भी भटक रही हैं? वास्तविकता यह है कि उन आत्माओं ने शरीर मृत होने पर सभी ने दूसरा चौला ग्रहण कर लिया होगा।

लेखक महोदय अपनी विषय वस्तु से भटक गए और तेरहवीं, पगड़ी पर आ गए। पगड़ी प्रथा के बारे में अलग से लम्बी बहस की जा सकती है। तेरहवीं के संक्षिप्तीकरण हेतु मेरे पास अलग से ठोस व रचनात्मक सुझाव हैं। लेखक महोदय को दस दिनी शोक रखने की बात पर स्वयं भरोसा नहीं रहा, आगे लिख गए, जो परिवार जन दूर-दराज इलाकों में नौकरी कर रहे हों या व्यवसाय रत हो और परिजन की मृत्यु के समय घर पर उपस्थित नहीं हो स्वयं ही प्रश्न करते हुए लिखा कि उन्हें सूतक लगेगा या नहीं? उत्तर के लिए पाठकों के माथे ढोल दिया? और अंत में सूतक प्रथा में एक ओर कड़ी जोड़ते हुए वृद्धि सूतक की बात भी कह डाली जो विषय वस्तु से कहीं से कहीं तक मेल नहीं खाती है।

मेरा निवेदन यह है कि हमारे पूर्वजों ने अपने समय के हिसाब से प्रथाओं को चलाया और निर्वाह किया। उनका सोचना यह रहा हो कि परिजन की मृत्यु के बाद बाहर निकलने पर कोई मजाक नहीं कर लें, इसलिए कम से कम दस दिन तक घर से बाहर नहीं निकलना है। दस दिन बाद सिर घुटाने का भी यही तात्पर्य रहा हो कि महिने दो महिने कोई अनजाना आदमी भी समझ जाय कि उनके यहाँ किसी की गमी हुई है। आजकल तो सिर घुटाने की फैशन चल पड़ी है। क्रिकेट के अधिकांश खिलाड़ी सिर घुटा के रहने लगे हैं। तिरुपति बालाजी के दर्शन भी कई लोग सिर घुटाकर करने जाते हैं। यह समझना बड़ा मुश्किल है किसके यहाँ गमी हुई है या नहीं।

इन प्रथाओं को कालान्तर में जाकर धार्मिक आधार व शास्त्रों से जोड़ दिया गया और परम्पराएं डाल दी गईं। परम्पराएं

धीरे-धीरे जाकर रुढ़ि में बदल गईं और लोगों को अनिवार्य रूप से इन रुढ़ियों का पालन करने पर मजबूर किया गया। सामाजिक दबाव बनाए गए।

परम्पराएं कोई भी हो ईश्वर प्रदत्त तो हो ही नहीं सकती। काल व परिस्थितियों के अनुसार हमने ही उन्हें बनाया और हम ही उसे बदल सकते हैं और बदलना ही पड़ेगी जो समय के साथ मेल नहीं खा रही हैं।

वर्तमान समय जेट युग है, कुछ ही मिनटों में गिनती के साथ राकेट पृथ्वी की कक्षा से निकलकर अंतरिक्ष में पहुँच जाता है। एक मिनट के कई सौवें हिस्से का भी महत्व है और अपने क्षेत्र में सफलता प्रदान करता है और हम है कि



पुरानी चली आ रही प्रथाओं और परम्पराओं में उलझ कर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं। भावनाएं अपनी जगह हैं और वे आपके हृदय में हैं पर समय के अनुसार आपको परिवर्तन लाना ही होगा और यही युग की मांग है।

समय की गति न्यायी है हमें वर्तमान के व्यस्तता भरे जीवन को ध्यान में रखते हुए ऐसे कार्यक्रमों को तीन दिवसीय करने तथा संक्षिप्तीकरण करने पर कोई ठोस निर्णय लेना चाहिए। आज कल कोई भी घटना या मृत्यु होने पर तत्काल कुछ ही सेकण्ड या मिनटों में वाट्स अप, फेस बुक, मोबाईल आदि से समस्त परिजनों, रिश्तेदारों या मिलने वालों, मित्रों को सूचना पलक झपकते ही मिल जाती है।

उसमें से अधिकांश दाह कर्म में शामिल हो जाते हैं। या फिर पगड़ी के कार्यक्रम में आ जाते हैं। मेरा यह मानना है कि रिश्तेदारों या मिलने वालों के लिए उनकी अपनी व्यस्तताओं की वजह से 'औपचारिकता' ज्यादा रहती है। कहा जाता है कि वो अपने यहाँ आए थे तो अपना भी वहाँ जाना जरूरी है 'अच्छा नहीं लगेगा' यह 'अच्छा नहीं लगेगा' 'लोग क्या कहेंगे' के कारण ही औपचारिकताएं ज्यादा बढ़ गई हैं। कहा भी जाता है 'भई रिश्तेदारी है जाना तो पड़ेगा ही' रविवार हुआ तो ठीक वरना एक छुट्टी लेना पड़ेगी। ऐसी प्रथा के चलते दाह कर्म के बाद 'पंच लकड़ी' या तेरहवीं में मृतक के चित्र पर 'पुष्पांजली' औपचारिकता ही पर्याय बन गई है। सबको घर जाने की जल्दी रहती है। 'पंचलकड़ी' या 'पुष्पांजली' देने पर यही कहा जा सकता है।

जिनसे थी वफा की उम्मीद कि

**फातिहा पढ़ेंगे मेरी कब्र पर आकर पर
वे भी पत्थर रख गए, दफनाने के बाद।**

बंधुओं नागर समाज एक अग्रणी समाज है। एक प्रबुद्ध समाज होने के नाते हमेशा दूसरों को सही मार्ग दर्शन देता हुआ आया है। कहा भी गया है 'कल तो चला गया, आने वाला कल अभी आया नहीं है' हमारे पास केवल आज है' आईए। कम से कम नागर समाज को तो समय की कसौटी पर खरी नहीं उतरने वाली प्रथाओं, परम्पराओं को तीन दिवसीय कर तथा संक्षिप्तीकरण करके नए आयामों का सूत्रपात करना चाहिए।

इसलिए समय से चेत जावे, जाग जावे इसी में समझदारी है, वरना आने वाला कल हमसे समय का हिसाब मांगेगा और हमारे पास निरुत्तर रहने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा।

-सुरेश दवे 'मामा'

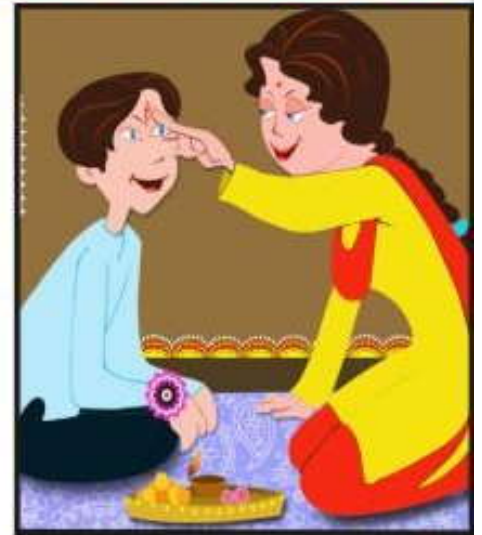
38, नीमवाड़ी,

शाजापुर

मो. 9424027500



बंधन और स्वतंत्रता



प्रतिवर्ष अगस्त माह में बंधन और स्वतंत्रता के पर्व मनाए जाते हैं। दोनों का ही अपनी जगह महत्व एवं आवश्यकता है। किस प्रकार रक्षा बंधन के पर्व का प्रतिवर्ष इंतजार होता है। बहनें, भाईयों के यहाँ आती हैं या भाई-बहन के यहाँ, जहाँ वे रक्षासूत्र बांधकर इस त्यौहार को मनाते हैं। कितना अच्छा लगता है यह बंधन, जिसमें रिश्ता है, प्रेम है, सुख-दुख का साथ है। वैसे तो परिणय बंधन भी अच्छा लगता है, परन्तु रक्षा बंधन का अपना अलग महत्व है। बंधन या गुलामी भला किसे पसन्द होती है, परन्तु यह ऐसा बंधन है जो अच्छा लगता है।

वास्तव में देखा जाए तो सब अपना-अपना जीवन जीते हैं किसी को किसी से कुछ नहीं चाहिए। परन्तु प्रकृति प्रदत्त कुछ ऐसे रिश्ते हैं जो 'प्रेम' से बंधे हुए हैं। पुराने लोगों को पता था कि एक समय ऐसा आएगा जब सब अत्यंत व्यस्त हो जाएंगे, उस समय ऐसे त्यौहार रिश्तों को जोड़े रखेंगे, स्मरण बनाए रखेंगे। आज चारों तरफ बेटा बचाओ का शोर मच रहा है, दरअसल यहाँ बात केवल बेटा बचाने की नहीं है, यहाँ प्रेम का बंधन निभाने वाली बहन को बचाने का भी यत्न है। बेटा दो घरों को संवारती है तथा अपने व्यस्त जीवन के बावजूद अपने माता-पिता के सुख-दुःख का ख्याल रखती है, उसका अपने भाईयों के प्रति भी स्नेह सदैव बना रहता है, वह सच्चे रूप में भाई यदि परेशानी में हो तो द्रवित होती है। ये दिल के रिश्ते हैं जो बगैर बताए पता चलते हैं,

स्पंदित होते हैं। आमतौर से सब सुख के साथी होते हैं, परन्तु भाई-बहन का रिश्ता ऐसा है जो प्रत्येक परिस्थिति में प्रभावित होता है। इसीलिए यहाँ बंधन शब्द कितना सुकून, आनन्द की अनुभूति देता है। यही कारण है कि यहाँ हम बंधन को मान्यता देते हैं सम्मान देते हैं, कोई तो है जो एक भाई को दिल से दुआ देता है, उसके सुख-दुख को महसूस करता है या उसका भला ही चाहता है। नहीं तो सतही तौर पर अनेक लोग हैं जो आपके हितैषी हैं, ऊपर क्या मन में क्या? इसीलिए भाई-बहन का रक्षाबंधन प्रसन्नतादायक है। सार्थक है, इसके विपरीत स्वतंत्रता दिवस जो प्रतिवर्ष 15 अगस्त को मनाया जाता है, यह भी राष्ट्रीय पर्व है, यहाँ स्वतंत्रता का अभिप्राय गुलामी या बंधन के विरुद्ध है, प्रकृति में प्रत्येक व्यक्ति बल्कि पशु-पक्षी भी स्वतंत्रता ही पसन्द करते हैं हमें यह स्वतंत्रता दिलवाने के लिए कितने असंख्य लोग शहीद हुए हैं इसकी गिनती करना भी मुश्किल है। इस स्वतंत्रता का

सम्मान भी उसी प्रकार होना चाहिए जैसा कि हम 'बंधन' का करते हैं। इसका सदुपयोग भी होना चाहिए। गुलामी से स्वतंत्र होने के पश्चात् हमें स्व-तंत्र में बंधना था जिसमें हम नहीं बंध पाए। यह कितनी बड़ी विडंबना है कि केन्द्र सरकार को आजादी के इतने वर्षों बाद स्वच्छता अभियान चलाना पड़ रहा है। हम अपनी और अपने आसपास की सफाई भी नहीं रख सकते। नियमों को तोड़ना, सरकारी सम्पत्ति का नुकसान हमारी बहादुरी में शामिल है। स्व-तंत्र का मतलब तो यह है कि तंत्र के साथ एकमेक हो जाना उसका सम्मान करना, क्या एक दिन राष्ट्रभक्ति के गीत बजाने और झंडा फहराने हम देशभक्त बन जाते हैं। स्व तंत्र का मतलब तो यह है कि आपके हाव-भाव, चाल-ढाल आचरण से स्वतंत्रता का आभास होना चाहिए। सरकार को चूना लगाना, करों की चोरी, नियमों का उपहास यह तो तंत्र की अवहेलना है, 'स्व' के साथ बेईमानी है, धोखा है। भारतीय संविधान सबको स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा का नारा आखिर इसी स्व-तंत्र की ओर इशारा करता है, हम दूसरों से बड़ी अपेक्षाएँ रखते हैं और स्वयं? बहुत सारे अधिकार चाहते हैं और कर्तव्य? बहुत सारी सुख-



सुविधा चाहते हैं और प्रयत्न? स्व-तंत्र का मतलब ही यह है कि सर्वप्रथम राष्ट्रहित फिर समाजहित उसके बाद परिवार हित, फिर स्वहित। आपका प्रत्येक कार्य एवं व्यवहार राष्ट्रहित में होना चाहिए। जबकि आज स्वहित सर्वोपरी हो गया है, राष्ट्रहित तो कहीं दिखाई ही नहीं देता। इस गुलामी से हमें मुक्त होना ही पड़ेगा जो स्वहित को सर्वोपरी रखती है।

जबकि राष्ट्रहित सर्वोपरि होना चाहिए। स्व-तंत्र इसी का नाम है, जिसमें सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की मूल भावना छिपी हो। स्व-तंत्र की भावना देशभक्ति की तथा स्वहित की भावना आपकी मानसिक गुलामी की परिचायक है। प्रत्येक देशवासी जब स्व-तंत्र में बंधेगा तभी इस देश का चहुमुखी विकास हो सकेगा, हम आगे निकल गए तो क्या, जो पीछे छूट गए हैं उनका हाथ पकड़ कर आगे लाना ही स्व-तंत्र है। संविधान का सम्मान करते हुए उसे अपने कार्य-व्यवहार में समाहित करना ही स्व-तंत्र है। प्रत्येक वह कार्य जो प्रकृति एवं राष्ट्र के नियमानुसार है- वह स्व-तंत्र है। अपने ही नहीं सबके भले के लिए परोपकार युक्त कार्य ही स्व-तंत्र है। यही स्व-तंत्र करने वाला है, यही स्व-तंत्र आध्यात्मिक मार्ग तक ले जाने वाला है। इसलिए आओ जहाँ प्रेम के बंधन हैं वहाँ हम पूरी शिष्टता के साथ बंध जाएं तथा जहाँ स्व-तंत्र की जरूरत है वहाँ राष्ट्रभक्ति को सर्वोपरि बनाएं।

-दीपक शर्मा

मो.9425063129

कौन है सुखी?

एक कौआ अपनी जिन्दगी में पूरी तरह संतुष्ट था मगर एक दिन वह एक हंस को देखता है। कौआ हंस से कहता है तुम कितने सफेद हो और मैं कितना काला। यकीनन तुम दुनिया के सबसे खुशी पक्षी होंगे। हंस कहता है, 'मैं भी यही सोचता था जब तक मैंने दो रंग वाले तोते को नहीं देखा था। तब कौआ तोते के पास जाता है, तोता कहता है कि मैं भी तब तक यह सोचता था जब तक मैंने बहुरंगी मोर को नहीं देखा था। तब कौआ चिड़ियाघर में मोर के पास जाता है जिसे हजारों लोग घेरकर खड़े रहते हैं। मोर से कौआ पूछता है तुम सबसे ज्यादा सुंदर हो, हजारों लोग तुम्हें देखने आते हैं। मोर कहता है कि मेरी खूबसूरती के कारण मैं चिड़ियाघर में फंसा हुआ महसूस करता हूँ। कई दिनों तक चिड़ियाघर में घूमने पर कौए को अहसास होता है कि सिर्फ वही आजाद जिंदगी जी रहा है। उस कौए की तरह यही समस्या हमारी भी है। हम दूसरों से तुलना करते हैं और दुखी रहते हैं। हम उसकी इज्जत करना भूल जाते हैं जो ईश्वर ने हमें दिया है।

-गायत्री मेहता, इन्दौर मो. 9407138599

मन मोहना बनायो मैंने मेरे मन को मीत।

स्वरचित भजन

मन मोहना बनायो मैंने मेरे मन को मीत
नन्द नन्दना बनायो मैंने मेरे मन को मीत
सखी री तोसे सांची कहुँ री मोरी बीर,
मोरी आली सांची कहुँ री तोसे बीर।

नन्द नन्दना....

(1) सांवरी सूरत मोहनी मूरत बस गई अँखियन बीच हॉं।।2।।
जादू भरी री याकी मद भरी अँखियाँ 2,
ले गई मन को खींच, मोरी आली ले गई मन को खींच।

मन मोहना...

(2) कोटि काम याके अंगों की शोभा, तन मन वारुं मोरी बीर हॉं।।2।।
प्यासी अँखियां दरस बिन तरसे 2, कल ना परत मोरी बीर
मोरी आली कल ना परत मोरी बीर।

मन मोहना...

(3) झूठों जग अब मोहे नहीं भावे, सांची कहुँ री मोरी बीर हां 2
कुटुंब कबिलो कंत ना सुहावे 2, श्याम से जोड़ी
सखी श्याम से जोड़ी मैंने प्रीत।

नन्द नन्दना...

(4) नागर ने तो यासे लगन लगाई, तोड़ी री जग से प्रीत हां 2
लोक लाज कुल की मर्यादा 2, छोड़ दई री मैंने
छोड़ दई री मोरी बीर।

मन मोहना...

-सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया (म.प्र.)



कई दुकानदार अखबारों को काट कर लिफाफे बना लेते हैं लेकिन कई बार जोड़ लगाते समय दो अखबारों की खबरें इस तरह जुड़ जाती हैं कि उनके मतलब कुछ और के और ही बन जाते हैं।

कुछ नमूने देखें-

1. अमरीका के राष्ट्रपति... कानपुर के पास चोरी की भैंसों समेत गिरफ्तार
2. अमरीकी फौजों द्वारा इराक की जेलों में... चमेली बाई के साथ भंगड़े की क्लास 23 जुलाई से शुरू
3. अफगानिस्तान की जेलों में छिपे लादेन को... पंजाब सरकार की ओर से बुढ़ापा पेंशन देने का ऐलान
3. मुख्यमंत्री के घर पर... भैंस ने छ-टांगों वाले बच्चे को जन्म दिया
4. अपने हरमन प्यारे नेता को वोट डालकर... मर्दाना ताकत हासिल करें
5. अटल बिहारी वाजपेयी ने जोर देकर कहा... एक सुन्दर और सुशील कन्या की जरूरत
6. तिहाड़ जेल से छ-कैदी फरार... भारत को ओलॉंपिक्स में सोने के तमगे की उम्मीद

नियम पालन से मिलती है सफलता

प्रत्येक शुक्रवार को लक्ष्मी नारायण मंदिर में गुड चना बाँटने और माँ लक्ष्मी की मूर्ति पर सुगन्धित धूप अगरबत्ती को जलाने और उन्हें चढ़ाने से व्यक्ति को जीवन भर अपने कार्य क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होती रहती है। जब भी आप अपने कार्य क्षेत्र में जाये तो अपने इष्ट देव को ध्यान करके सुगन्धित इत्र लगाकर ही घर से जाये।

कपूर और रोली जलाकर उसकी राख को पुडिया बनाकर अपने घर या दुकान के धन स्थान में रखें तो निश्चित ही लाभ बना रहेगा।

अपने व्यापार स्थल, यदि नौकरी करते हैं तो अपने ऑफिस या आप किसी भी कार्य क्षेत्र से जिससे आप सम्बन्ध रखते हैं पर जाने पर एवं लौटने पर उसके द्वार की जमीन को दाहिने हाथ से छूकर अपने माथे पर अवश्य लगायें और अपने इष्ट देव का ध्यान करें इससे आपका भाग्य आप पर प्रसन्न है, अपने कार्य क्षेत्र के प्रति अपने हृदय में श्रद्धा एवं सम्मान रखने से ईश्वर की सदा आप पर कृपा बनी रहती है आप को हमेशा अपने कार्यों में सफलता एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है। (इसकी चिंता कभी भी न करें कि आपके सहयोगी /साथी /कर्मचारी / अधिकारी या अन्य कोई भी आपके इस व्यवहार के बारे में क्या सोचेगा या आपका उपहास होगा।)

यदि आपको अपने व्यापार, नौकरी, कार्य क्षेत्र में लगातार धन हानि होने लगे, आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा हो लोग आपसे रुष्ट होते हैं तो आप अपने कार्यस्थल या अपने निवास स्थान में झाड़ू को किसी ऐसे स्थान में रखे कि किसी भी बाहर वाले की सीधी निगाह उस पर न पड़े, बहुत ही जल्दी आपकी मुश्किलें कम होने लगेंगी।

जिस घर में प्रेम का वातावरण रहता है, जहाँ पर कलह नहीं होती है उस घर में धन



पं.कैलाश जागर गुरुजी
गणेशाचार्यजी

कार्य क्षेत्र में धन लाभ एवं निरंतर सफलता प्राप्त करने के लिए घर में बनने वाली पहली 3 रोटी गाय, कुत्ते और पक्षियों (कौओं) के लिए निकाल कर उन्हें घी और हल्का मीठा लगाकर लगाकर देने से सदैव लाभ ही लाभ की प्राप्ति होती है।

धान्य की कभी भी कमी नहीं हो सकती है।

आप अपनी जीविका / कार्य क्षेत्र में किसी को अपना आदर्श अवश्य बनायें, उस व्यक्ति की तस्वीर अपने कक्ष में लगायें उस की जीवनी, उसकी शक्तियों / कमजोरियों का बहुत ही ध्यान से अध्ययन करें एक नियत समय में अपने को उस व्यक्ति की ऊँचाई के बराबर लाने की योजना बनायें, रोज कुछ समय आप आँख बंद करके पूरी एकाग्रता से यह ध्यान करें कि आप वही व्यक्ति हैं। किसी भी परिस्थिति में यह सोचिये कि यदि आपकी जगह वह होते तो क्या करते और उसी तरह से कार्यों को करने का प्रयत्न करें, निश्चय ही आप अपने अन्दर बहुत बड़ा बदलाव महसूस करेंगे।

कार्य क्षेत्र में धन लाभ एवं निरंतर सफलता प्राप्त करने के लिए घर में बनने वाली पहली 3 रोटी गाय, कुत्ते और पक्षियों (कौओं) के लिए निकाल कर उन्हें घी और हल्का मीठा लगाकर लगाकर देने से सदैव लाभ ही लाभ की प्राप्ति होती है। बुधवार को गाय को हरी सब्जी चारा एवं गुरुवार को प्रातः तुलसी में थोड़ा कच्चा दूध डालने से भी उस घर में हमेशा समृद्धि बनी रहती है।

हमेशा याद रखें जिस घर में संध्या के समय लोग सोये रहते हैं, घर के धर्म स्थान में संध्या को धूप अगरबत्ती नहीं जलती है, उस समय झाड़ू लगाया जाता है, उस समय घर में लोग कोलाहल करते हैं, नाखून काटते हैं ऐसे घर से लक्ष्मी हमेशा रुष्ट रहती है उस घर में हमेशा आर्थिक संकट रहता है लाख प्रयत्न के बाद भी वहाँ पैसा कभी भी नहीं रुक पाता।

आप भी श्री गणेशाचार्यजी से विभिन्न विषयों पर अपने प्रश्न पूछ सकते हैं
मो.9893888498 (गुरुजी)

अमृत मन्थन और उज्जैन में सिंहस्थ-2

अवन्तिका का सिंहस्थ पर्व सर्वोपरि क्यों ?

अमृतकलश की यात्रा के दौरान नासिक, अवन्तिका, प्रयाग तथा हरिद्वार विशेष रूप से कलश रखे जाने से भूमि के स्पर्श और अमृत कलश की छलकती बूंदों से लभान्वित हुए। इन स्थानों की स्थिति विशेष रूप से हमारा ध्यान आकर्षित करती है - सरित्प्रवाहों की दिशा -

(१) क्षीरसागर से अमृत कलश लेकर देवता सर्वप्रथम उत्तर दिशा के गोदावरी तट के नासिक त्र्यम्बकेश्वर क्षेत्र में पहुंचे। गोदावरी नदी सह्याद्रि पर्वतमाला से पश्चिम दिशा की ओर बहकर अरबसागर में जाकर मिलती है। (२) नासिक से पूर्व की ओर अवन्तिका का शिप्रातट कलश का दूसरा पड़ाव था। (३) प्रयाग में गंगा-यमुना का संगम होता है। यमुना नदी हिमालय पर्वत के यमुनोत्री हिमखण्ड से निकल कर दक्षिण पूर्व दिशा में आगे बढ़ते हुए गंगा नदी में मिलती है। (४) हिमालय के ही गंगोत्री क्षेत्र से अवतरित पतितपावनी गंगा भी दक्षिणवाहिनी होकर हरिद्वार आती है और प्रयाग में यमुना से मिलकर पूर्ववाहिनी बनकर गंगा सागर में मिलती है। (५) विन्ध्यक्षेत्र भारत के भूभाग को मुख्यतः उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में बांट देता है। इस प्रकार देश के मध्यांचल से विष्णु के नख से उद्भूता शिप्रा नदी एक मात्र नदी है जिसकी जलधारा उत्तरदिशा की ओर आगे बढ़कर चम्बल (चर्मण्वती) से मिलती है। चम्बल आगे बढ़ते हुए यमुना का अविभाज्य अंग बन जाती है। यमुना भी गंगा में मिलकर पूर्ववाहिनी बनकर अन्ततः बंगाल की खाड़ी में समाकर गंगासागर बन जाती है। मध्यांचल से उत्तरपूर्व की यात्रा का शिप्रा का यह मार्ग ही उसे सभी नदियों से 'तिलभर अधिक' होने का सम्मान प्रदान करता है।

कलश यात्रा के कुण्डलिनी चक्र - क्षीरसागर तट को यदि मूलधार चक्र मान लिया जाए तो नासिक (त्र्यम्बकक्षेत्र) का गोदावरी तट 'स्वाधिष्ठान चक्र' अवन्तिका का शिप्रातट 'मणिपूरक चक्र' गंगा यमुना का संगम क्षेत्र प्रयाग 'अनाहत चक्र' माना जा सकता है। हरिद्वार का गंगा प्रवाह 'आज्ञाचक्र' बनकर देवभूमि हिमालय श्रृंखला के 'सहस्रार चक्र' घोषित करता है। ये चारो स्थान धर्मार्थ काममोक्ष के प्रतीक भी माने जा सकते हैं।

अवन्तिका की खगोलीय और भौगोलिक स्थिति - १. मृत्युलेक के अधिपति ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर अवन्तिका के महाकालवन में विराजमान हैं। २. अवन्तिका क्षेत्र भूलोक का मणिपूरक चक्र यानी मूलकेन्द्र नाभिस्थल माना जाता है। ३. अयनवृत्त की चरमसीमा २३०-११' (वराह मिहिर के मत में २४०) उत्तरी अक्षांश कर्क वृत्त अवन्तिका क्षेत्र में ही मौजूद है। सूर्य की रश्मियाँ लम्बवृत्त २१ जून को इसी जगह पड़ती हैं।

शेष दो पर्व कुम्भपर्व कहलाते हैं क्योंकि- प्रयाग में १. वृष राशि का गुरु, मकर राशि का सूर्य, वैशाख मास-आते हैं। प्रयाग के



कुम्भ पर्व के समय गुरुग्रह अपनी शत्रु ग्रह शुक्र की राशि वृष में और सूर्य ग्रह अपने शत्रु ग्रह शनि की मकर राशि में रहता है। शनि सूर्य का पुत्र भी है।

हरिद्वार के कुम्भ पर्व के समय गुरु ग्रह शनि की राशि कुम्भ में रहते हैं। परन्तु मेष राशि का सूर्य उच्च में रहता है।

६. शिप्रा नदी अवन्तिका नगरी को दक्षिण-पश्चिम तथा उत्तर तीनों दिशाओं से घेरती हुई महाकाल वन की अर्द्धप्रदक्षिणा करती है। सिद्धनाथ के क्षेत्र में शिप्रा नदी के पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा की ओर बढ़ते सरित्प्रवाह ने सिद्धनाथ क्षेत्र को साधकों की पहली पसन्द का साधना क्षेत्र बना दिया।

७. अवन्तिका में सिंहस्थ पर्व के निर्णायक दस योग हैं -

**कुशस्थली तीर्थवार देवानामपि दुर्लभम्।
माधवे धवले पक्षे सिंह जीवे अजे रवी॥
तुल्यराशौ-क्षपानाथे-स्वातिभे पूर्णिमा तिथौ॥
व्यतिपाते तु सम्प्राप्ते चन्द्रवासर संयुते॥**

१. अवन्तिका क्षेत्र २. वैशाख मास ३. शुक्ल

पक्ष ४. सिंह राशि में गुरु ५. मेष राशि का सूर्य ६. तुल्य राशि का चन्द्र ७. स्वाती नक्षत्र ८. पूर्णिमा तिथि ९. व्यतीपात योग १०. सोमवार इसीलिये शास्त्र प्रमाण के रूप में यह उक्ति प्रसिद्ध है -

मेष राशि गते सूर्ये सिंहराशौ बृहस्पतौ।

उज्जयिन्यां भवेत्कुम्भः सर्वसौख्य विवर्धनः

अवन्तिका का सिंहस्थ महापर्व ३ चैत्रशुक्ल पूर्णिमा, शुक्रवार दि. २२ अप्रैल २०१६ से वैशाख शुक्ल पूर्णिमा, शनिवार २१ मई २०१६ पर्यन्त रहेगा।

मुख्य पर्व दिवस ये होंगे -

१. चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार पर्व आरम्भ दि. २२ अप्रैल २०१६

२. पंचक्रोशी यात्रा - वैशाख कृष्ण नवमी रविवार दि. १ मई से ६ मई २०१६

३. वैशाख कृष्ण - अमावस्या, शुक्रवार दि. ६ मई २०१६

४. अक्षय तृतीया - वैशाख शुक्ल तृतीया सोमवार ९ मई २०१६

५. शंकराचार्य जयन्ती - वैशाख शुक्ल पंचमी बुधवार, ११ मई २०१६

६. मोहिनी एकादशी - वैशाख शुक्ल एकादशी, मंगलवार, १७ मई २०१६

७. प्रमुखस्नान - वैशाख शुक्ल पूर्णिमा शनिवार २१ मई २०१६

संदर्भ

१. श्रीमद् भागवत महापुराण, अष्टम स्कन्ध अध्याय से ५ से ११ 'समुद्रमंथन, पृष्ठ गीताप्रेस गोरखपुर (उ.प्र.)

२. श्री महाकाल पंचागम् ई.स. २०१५-१६ पं. आनन्द शंकर व्यास, बड़ा गणेश, उज्जैन।

३. श्री कुल्लुका विक्रमादित्य पंचाग सन् २०१४-१५ पं. भगवती प्रसाद पाण्डेय, ७७ जवाहर मार्ग, उज्जैन।

श्रीमती शशिकला रावल (एम.ए. (ज्योतिर्विज्ञान, अंग्रेजी), एम.एड.)
डी-११, आश्रय त्रिभुवनगर, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - (०७३४) २५१०३९७

कलयुग में केश महिमा

वो क्या है मित्रों कि केश तो केश ही है। इसके बगैर तो बस इंसान के क्या कहने, वह अधूरा ही है भले केश काले हो या सफेद। बहुत वर्षों पहले राजस्थान के एक भविष्य वक्ता ने कहा था कि कलयुग में केश की महिमा निराली होगी। लोग अन्य वस्तुओं की अपेक्षा इसके रखरखाव, इसका रूप, स्टाईल, इसकी सीमा आदि पर ज्यादा केन्द्रित होंगे। फिर इसके रखरखाव के संबंध में कई व्यक्तियों की सलाह भी अपार होगी।

अर्थात् विज्ञापन भी अनेक होंगे जो लोक लुभावने एवं नयनाभिराम ज्यादा होंगे, कारगर कम। विज्ञापन तो ऐसे होंगे मानो आज उपयोग किया और कल उसका सफल परिणाम आयेगा। जबकि ऐसा



संभव कम असंभव ज्यादा प्रतीत होता है। तो आप समझ ही गए होंगे कि मेरा आशय किस वस्तु पर है? जी हाँ मनुष्य के केश अर्थात् सिर के बाल जिसकी देखभाल स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियाँ बच्चे सभी विशेष रूप से करते हैं। कई निर्माता-कंपनियाँ हेयर-ऑईल, क्रीम बनाती हैं एवं दावा करती हैं काले, घने, लम्बे, घुंघराले, लहराते, चमकीले केश की अगर उनके हेयर-ऑईल का उपयोग किया तो। टी.वी. एवं प्रिन्ट मीडिया पर विज्ञापनों की भरमार तो समस्त पाठक-गण देखते ही होंगे। तो बरसो पहले की गई भविष्यवाणी सत्य प्रतीत होती है। फोरकास्ट ये भी थी

कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ केशों पर ज्यादा विन्यास करेंगी। अर्थात् इनकी कटिंग ज्यादा शैप, पंमिंग आदि पर विशेष कृपा करेंगी। केशों को ज्यादा खुला रखेंगी जबकि भारतीय संस्कृति में केशों की आवारगी मुनासिब नहीं मानी गयी है। लेकिन क्या करें आजकल समय ही नहीं मिलता तो केश खुले ही सही। आलस्य ही आलस्य और फेशन का बहाना। कहीं नकली बालों का चलन भी देखने में आता है, जिसमें अलग-अलग रंगों के बालों का चलन भी देखने में आता है पर मित्रों ओरिजनल तो ओरिजनल ही होता है। अतः पूर्व की भविष्यवाणी सही प्रतीत होती है।

दूसरा केश है cash यानी नकद। इसकी महिमा कौन नहीं जानता? बहुत पुराने समय में मुद्राओं का चलन नहीं होता था। वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यक्तियों का काम चलता था, लेकिन आज विशेषकर कलयुग में इस केश की महिमा तो अपरंपार है। इसके भी दो रूप हैं, सफेद और काला। यहाँ केश में भेद है। पूर्व-वर्णित केश यदि काले हो तो अच्छा लगता है, जबकि यहाँ वर्णित केश अगर काला है तो अनेक तकलीफें हैं (ill got, ill spent) कहने का अर्थ है, एक केश (बाल) यदि काले हैं तो उत्तम एवं एक केश (cash) यदि सफेद हो तो उत्तम लेकिन देखा गया है कि लोगों का श्याम धन की ओर लगाव ज्यादा दृष्टिगोचर होता है भले ही इसमें कष्ट ही कष्ट क्यों न हो। जैसे आजकल काले धन के विषय में सरकार और विपक्ष में मेच (match) चल रहा

दूसरा केश है cash यानी नकद। इसकी महिमा कौन नहीं जानता? बहुत पुराने समय में मुद्राओं का चलन नहीं होता था। वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यक्तियों का काम चलता था, लेकिन आज विशेषकर कलयुग में इस केश की महिमा तो अपरंपार है।

है। पहले भी चल रहा था और चलता ही रहेगा। यह मेच वर्ल्डकप या टी-20 थोड़े ही है जो कुछ समय बाद पूर्ण हो जाएंगे। परिणाम भी आ जायेगा। यह मेच तो अविरल है एवं परिणाम भी अनिश्चित है क्योंकि इसके अम्पायर भी स्वयं खिलाड़ी है। परिणाम मृग-मरिचिका के समान ही संभावित है।

सफेद केश व्यक्ति के परिपक्व होने के संकेत है, किन्तु कुछ लोग हेयर-डाई के माध्यम से उम्र के दिसम्बर में मार्च बनने की कोशिश करते हैं, भले महिला हो या पुरुष। क्यों ना करें? विज्ञापन ही ऐसे लुभावने होते हैं कि बस उपयोग करने को दिल मचल जाता है (सुपर एक्टर्स जो विज्ञापन करते हैं) यह भी पूर्व की भविष्यवाणी की टिप्पणी का ही रूप है, अन्यथा पुराने वक्त में श्वेत श्याम केश की महिमा ही निराली थी। श्वेत केश भले ही डाई के माध्यम से श्याम हो जाएं किन्तु उम्र की लकीरें (या झुर्रियाँ) तो अपना प्रभाव दर्शाती ही हैं। इसके विपरीत श्याम केश को श्वेत करने के तरीके कई

सलाहकार दर्शाते हैं किन्तु कभी-न-कभी उम्र के समान अपना प्रभाव दिखाते ही हैं यदि जाँच पड़ताल हो जाए।

हाँ, श्वेत केश वालों के संबोधन 'बाबा' या 'काका' आदि के रूप में होते हैं, जबकि श्याम केश बालों के 'डीयर' 'भैया' आदि हो सकते हैं। जैसा-जैसा समय ओर सोच। कुछ भी हो, दोनों प्रकार केश होना आवश्यक है, जिसके अभाव में जीवन अधुरा सा ही रहता है। जैसे सिर में केश न हो तो कम उम्र में उम्रदराज दिखना एवं केश (नकद) नहीं हो तो भी जीवन की हर आवश्यकता को पूर्ण न कर पाने का मलाल (अफसोस) तो रहता ही है। अतः परवर दिगार से गुजारिश है कि हर व्यक्ति को केश-मय ही रखना, भले श्वेत हो या श्याम।

एक घने केश वाले मित्र ने गंजे से पूछा कि तुम्हारे सिर में बाल क्यों नहीं हैं, तुम्हें कुछ अटपटा सा नहीं लगता तो गंजा मित्र बोला, कि इंसान की खोपड़ी में एक वस्तु ही रह सकती है या तो दिमाग रख लो या बाल।

रिश्ते दिल में होने चाहिए शब्दों में नहीं और नाराजगी शब्दों में होनी चाहिए दिल में नहीं।

-यशवंत नागर
(आईआरएस)

सहायक आयकर आयुक्त
(से.नि.)

(बांसवाड़ा वासी), उज्जैन

फोन 0734-2533151,

चलते-फिरते- 8989219599

श्रीमद् भगवद् गीता के जीवनोपयोगी विश्वजनीन निर्देश ईश्वर की कृपा का द्वार सबके लिए खुला है

ईश्वर ने हमारी सर्वोच्च नियतित की प्राप्ति अर्थात् परमात्मा से मिलन की ओर एक-एक कदम बढ़ाने में हमारी सहायता करके वह सब कुछ हमें दिया, जो कुछ वह हमें दे सकता था।

किन्तु हममें से कितने ऐसे हैं जो सदैव सतत रूप से जागरूक रहकर अपनी आध्यात्मिकता को अक्षुण्ण रख सकते हैं? दो कदम आगे बढ़ने के बाद ही क्या हम अपनी अन्दरूनी थकान के कारण पाँच कदम पीछे नहीं हट जाते? तब क्या हम अपने निस्सार आध्यात्मिक प्रयासों के मलबे के नीचे दबकर मात्र क्लेश के भागी होंगे? तब क्या हमारा कोई आध्यात्मिक भविष्य नहीं है?

वस्तुतः भगवान तो कहते हैं- कौन कहता है कि तुम्हारा कोई भविष्य नहीं है? बल्कि तुम्हारा भविष्य अधिक सुनिश्चित है। निर्णायक रूप से इस तथ्य को जान लेने के बाद इस बात की पुष्टि हो जायेगी कि आप स्वयं कुछ नहीं कर सकते, अर्थात् केवल ईश्वर ही सब कुछ कर सकता है। जब आप वास्तव में इतना जान लेंगे, तो यह समर्पण की स्थिति है। तब आपको किञ्चित मात्र भी चिन्तित नहीं होना चाहिए। जीवन व्यापार के माध्यम से इस स्थिति में स्थापित करने के निमित्त भगवान ने पहले ही कहा है:

निमित्त मात्रं भव सव्यसाचिन्

हे सव्यसाचिन् (अर्जुन) तू तो केवल ईश्वर के हाथों में साधन मात्र हो जा। (11-33)

ईश्वर को स्वयं में गति करने दो। यह ज्ञान की प्राप्ति है।

तदन्तर अपनी समस्त करुणा को एक परम निश्चयात्मक निर्देश में समाहित करते

हुए, भगवान अपनी कृपा का द्वार सभी जिज्ञासुओं के लिए चिरन्तर रूप से खोल देते हैं। वे कहते हैं-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥

इसलिए सर्व धर्मों अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्याग कर केवल मेरी ही अनन्यशरण को प्राप्त हो, धर्म की सभी औपचारिकताओं को त्याग कर मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा, शोक मत कर।

(18-66)

इतने विश्वजनीन होते हुए भी गीता के ये निश्चयात्मक निर्देश व्यक्तिगत है, जिनको ईश्वर हमारी आत्माओं में सीधे सन्निविष्ट कर देना चाहते हैं।

आप देखेंगे कि यह वैसी स्थिति नहीं है कि जहाँ हम खटखटायें और तब ईश्वर द्वार खोलें। यहाँ तो

वस्तुस्थिति यह है कि ईश्वर निरन्तर द्वार खटखटाते हैं तथा हम संयोगवश ही द्वार खोलते हैं। युगों-युगों से इतनी सारी विधियों से वे हमारे बन्द द्वार खोलने की कोशिश करते रहे हैं। गीता में इस प्रकार प्रेमातुर तथा गुन्जायमान रीति से, सीधे निवेदन करते हुए, अनुनय करते हुए वे निरन्तर प्रयास करते रहते हैं, पुकारते रहते हैं, आह्वान करते रहते हैं कि 'मेरी शरण में आ जाओ।'

क्या हमें उनकी पुकार को अनसुनी कर देना चाहिए? क्या हम इतना कठोर हृदय हो सकते हैं कि हम उनकी पुकार पर ध्यान न दें?

-डॉ.तेजप्रकाश व्यास

'प्रभुकुंज' 135, सिल्वर हिल, धार

मो. 9425491336



देव परिक्रमा या प्रदक्षिणा कितनी, क्यों और कैसे? - 2

सूर्य मंदिर में सात परिक्रमा करना चाहिये

परिक्रमा का मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे-पदे ॥

इसका तात्पर्य यह है कि हे ईश्वर हमसे जाने अनजाने में किये गये और जन्मों के भी सारे पाप प्रदक्षिणा के साथ-साथ नष्ट हो जाए । हे ईश्वर मुझे सदबुद्धि प्रदान करें । परिक्रमा के समय हाथ में रखे पुष्पों को ईश्वर से क्षमा मांग कर मंत्रपुष्पांजलि मंत्र बोलकर देव मूर्ति को समर्पित कर देना चाहिये ।

किस देव मंदिर में कितनी परिक्रमा करें

विघ्नहर्ता श्री गणेशजी की तीन परिक्रमा करनी चाहिये, जिससे गणेशजी भक्त को रिद्धि-सिद्धि सहित समृद्धि का वर देते हैं

सृष्टि पालनकर्ता भगवान् विष्णु सभी सुखों के दाता है अतः शास्त्रों में उनकी चार परिक्रमा पर्याप्त मानी गई है । वे इससे प्रसन्न हो जाते हैं ।

माँ भगवती जो पूरे जगत की जीवनदायिनी शक्ति हैं, उनके मंदिर में एक परिक्रमा का विधान है । माँ एक परिक्रमा से ही प्रसन्न हो जाती है । ऐसा संक्षिप्त नारदपुराण (कल्याण) पूर्वभाग-प्रथम भाग पृष्ठ २३ पर उल्लेख है ।

पवनपुत्र हनुमानजी हर समय पद-पद पर अपने भक्तों का विशेष ध्यान रखकर सहायता करते हैं, इनके मंदिर की तीन परिक्रमा करनी चाहिये । इतना करने पर वे प्रसन्न हो जाते हैं तथा

संकट-पाप नष्ट हो जाते हैं ।

सूर्य मंदिर में सात परिक्रमा करना चाहिये । इससे तेज बढ़ता है तथा ऊर्जा का संचार होता है ।

भगवान् शिव तो आशुतोष हैं अर्थात् थोड़ी सी प्रार्थना करने पर प्रसन्न हो जाते हैं । हमारे शास्त्रों में उल्लेख है कि शिवलिंग की पूजा के



दौरान भगवान् को जल चढाया जाता है तथा जल जिस स्थान पर गिरता है, उसे पैरों से लोंघना नहीं चाहिये । शिवजी अपने भक्तों पर पूरी नहीं मात्र आधी परिक्रमा से ही प्रसन्न हो जाते हैं । अतः आधी परिक्रमा कर उन्हें वहीं प्रणाम करने के बाद पुनः आ जाना चाहिये । भगवान् शंकर की दक्षिण और वाम परिक्रमा करने से स्वर्ग प्राप्त होता है और वह वहाँ उनके धाम में लाखों वर्ष तक सुखपूर्वक रहता है ।

अयोध्या, मथुरा, उज्जैन आदि पुण्यपुरियों की पंचकोशी, ब्रज में गोवर्धन पूजा की सप्तकोशी, नर्मदा की अमरकंटक से समुद्र तक

की छः मासी परिक्रमा प्रसिद्ध है । वटवृक्ष की परिक्रमा करना सौभाग्य सूचक माना गया है ।

इस प्रकार घड़ी की सूई की दिशा में परिक्रमा पापों का नाशकर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करती है । जो लोग शारीरिक रूप से परिक्रमा करने में समर्थ या सक्षम न हो तो प्रार्थना-पूजा-अर्चना करें, उन्हें भी ईश्वर परिक्रमा या प्रदक्षिणा का पूरा-पूरा फल देता है ।

महिलाओं द्वारा वटवृक्ष की परिक्रमा करना सौभाग्य सूचक होता है । विशेष कर वट-सावित्री अमावस्या/पूर्णिमा को महिलाएँ १०८ फेरे या परिक्रमा लेती हैं । पीपल (अश्वत्थ) के वृक्ष की परिक्रमा दशा दशमी को महिलाएँ करती हैं । आँवला नौमी को आँवले के वृक्ष की परिक्रमा करते हैं तथा आँवले के वृक्ष का पूजन कर वहीं भोजन भी करते हैं । इस तरह भारतीय संस्कृति पर्यावरण रक्षक है । हमारे पूर्वज वृक्ष तथा वनों का पर्यावरण में क्या महत्व होता है जानते थे । बड़े महापुरुष भी वटवृक्ष एवं पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान, योग करते थे । शिवजी तो वटवृक्ष के नीचे बैठते हैं । बुद्ध को अश्वत्थ (पीपल) के नीचे ही ज्ञान प्राप्त हुआ था । हमें अन्य किसी देवता की प्रदक्षिणा ज्ञात न हो तो श्रद्धापूर्वक एक, तीन या पाँच प्रदक्षिणा कर सकते हैं ।

-डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहता
'मानस शिरोमणि'
ऋषिनगर विस्तार उज्जैन
0734-2510708
9424560115



फटे हाथ-पैरों की ख्यास क्रीम

वाता क्रीम
www.anjupharma.in

फटी एड़ियां, खारवे, बिवाईयां,
रूखी त्वचा आदि के लिये अचूक क्रीम
आज ही खरीदें

मात्र ₹50/-

प्यार का मतलब,
मूर्ख लोगों द्वारा
समझदारों
पर राज।
-अज्ञात

इसलिए जरूरी है हर पल ईश्वर स्मरण

अन्तकाले व मामेव
स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।

यः प्रयाति स मद्भावं

याति नास्त्यत्र संशयः ।१।५।।

भगवान् श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि अन्तकाल में जो मेरा स्मरण करते हुए शरीर का त्याग करता है वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है। इसमें कुछ भी संशय नहीं है।

ईश्वर ने मनुष्य के कल्याण के लिए यह मनुष्य शरीर दिया है। साथ ही यह सुविधा भी दी है कि उसका जीवन कैसे भी बीता हो, अन्त समय में कैसे भी भाव रहे हो, कैसा भी आचरण रहा हो। यदि वह अन्तकाल में भगवान् का स्मरण कर ले तो उसका कल्याण निश्चय ही होगा। इस संसार में प्रत्येक घंटा, हर मिनट एवं हर सैकण्ड व्यक्ति के लिए अन्तकाल ही है क्योंकि उसे मृत्यु के समय का पता नहीं होता। अतः व्यक्ति को सतर्क रहने की आवश्यकता है। जहाँ तक संभव हो कोई समय खाली न जाने दे व हर समय भगवान् का स्मरण करता रहे।

जीवन-संघर्ष में शब्द जीवन एक लम्बे समय को इंगित करता है। वह जिसने इस पृथ्वी पर जन्म लिया है उसको अपने शरीर निर्वाह के लिए जीवन पर्यन्त कर्म करना होता है। समाज में व्यक्ति किसी भी जाति धर्म अथवा स्तर का हो, उसे अपने जीवन यापन के लिए कार्य करना होता है। भगवत् स्मरण के लिए मनुष्य को अपनी वृत्ति का त्याग नहीं करना है, अपितु वृत्ति में लगे रहकर ईश्वर का स्मरण करते रहना है।

प्रायः सांसारिक लोग भौतिक अथवा आध्यात्मिक शक्ति के विषय में सोचने के आदी होते हैं। भौतिक शक्तियाँ प्रायः तामसी होती हैं। मृत्यु के समय व्यक्ति या

तो इस संसार की भौतिक शक्तियों में रहता है अथवा आध्यात्मिक शक्ति में चला जाता है। ऐसी बहुत सी पठन-पाठन सामग्री है जो व्यक्ति के विचारों को भौतिक शक्तियों से भर देती है। यथा समाचार पत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास आदि। हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए कि अपने चिन्तन को हम किस प्रकार भौतिक शक्ति से आध्यात्मिक शक्ति की ओर ले जाए। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने प्रचुर मात्रा में वैदिक साहित्य स्थान प्रदान किया है।



चारो वेद, पुराण, उपनिषद, ऐतिहासिक लिखित सामग्री आदि उपलब्ध है जो हमारी सोच और समझ को आध्यात्मिक दिशा देने में सहायक होती है। अतः जिस प्रकार हम संसारी साहित्य को पढ़ने में मन लगाते हैं। उसी प्रकार हमें वैदिक साहित्य को पढ़ने में मन लगाना चाहिए। इससे हमारी भावनाओं को आध्यात्मिक सोच की ओर मोड़ने में आसानी होती है तथा जीवन में अन्त समय में परमेश्वर का स्मरण करने की संभावना बढ़ जाती है।

अन्तकाल में स्मरण का अर्थ है कि व्यक्ति ने भगवान् का जो रूप मन मस्तिष्क में बसा रखा है उसका नाम स्वरूप लीला, गुण आदि की याद आ जाए। रूप का अर्थ है कि व्यक्ति ने राम, कृष्ण, विष्णु, शिव, दुर्गा, गणेश आदि में

जिसको भी इष्ट मान रखा है। उस स्वरूप का ध्यान आ जाए। कहते हैं- इस प्रकार स्वरूप, उसका नाम, उसकी लीला आदि की याद करते हुए शरीर छोड़ने से व्यक्ति भगवान् को ही प्राप्त होता है।

यहाँ यह प्रश्न मन में आता है कि संसार में ऐसे लोग भी हैं जो नास्तिक हैं भगवान् को मानते ही नहीं हैं ऐसे लोगों को भगवान् कैसे याद आएंगे। कैसे उनका उद्धार होगा? विद्वानों के अनुसार ऐसे लोगों के कल्याण के लिए उन्हें अन्त समय में यदि कोई साधक उनको भगवान् के नाम लीला, चरित्र सुनाये, भजन सुनाए, रामायण अथवा गीता का पाठ उनके निकट बैठकर करे तो इस पृथ्वी लोक से जाते-जाते भगवान् नाम सुनने से ही उनका कल्याण हो जाता है। गीता में भगवान् कृष्ण ने भिन्न-भिन्न प्रकार से यह समझाने की चेष्टा की है कि प्रत्येक प्राणी परमात्मा का अंश है। अतः उसका परमात्मा से स्वतः सम्बन्ध है। अन्तकाल में कोई सन्त या साधक व्यक्ति को भगवान् द्वारा कही इस बात की विविध यत्नों द्वारा पुष्टी करा दे तो उसके द्वारा परमात्मा के स्मरण की संभावना अधिक हो जाती है।

कहते हैं प्राणान्त के समय शरीर सम्बन्धी वासनाएं, परिवार, धन-दौलत, घर-गृहस्थी की आकांक्षा, आशा, लालच, लोभ आदि छूट जाय और यह भाव रह जाए कि ईश्वर ही उसका सब कुछ है, वह सर्वव्यापक है, पालनहार है तो उसके स्मरण से कल्याण हो जाता है। इसके अतिरिक्त हमारी संस्कृति एवं संस्कारों में ऐसे अनेक साधन हैं, जिन्हें व्यक्ति यदि अपनी दिनचर्या का अटूट अंग बना ले तो अन्तकाल में ईश्वर स्मरण की संभावना अधिकाधिक हो जाती है। (क्रमशः)

-अवनीन्द्र नागर, भुवनेश्वर

मो. 09040592383

राशि के अनुसार रखें शरीर का ध्यान

बारह राशियां हमारे जीवन में खुशी व गम का उतार-चढ़ाव बनाते हैं। भाग्य के अलावा मोटापा और आहार की आदतों पर भी प्रभाव डालती हैं।

(1) सिंह- इस राशि वाले फिट रहकर खुब-सूरत दिखना चाहते हैं, खाने के शौकीन होते हैं। सिर्फ फलों का रस 2-3 बार दिन में लें, स्थूलता पर ध्यान रखें। दिलों पर राज करने वाले प्रोटीन युक्त व बिना कार्बोहाइड्रेट के आहार का पथ्य करें। इससे धमनियां संकुचित होगी। जिंक व संतुलित प्रोटीन का प्रयोग मोटा नहीं होने देंगे। हल्का व्यायाम करें।

(2) कन्या- स्वास्थ्य के प्रति अति जागरुक रहने से ये खाने-पीने से डरते हैं स्लिम होते हैं पर ऐनर्जेटिक नहीं, थोड़ा-थोड़ा कई बार खायें, कार्बोहाइड्रेट व प्रोटीन साथ-साथ प्रयोग नहीं करें, शुद्ध हवा व प्रातः भ्रमण अवश्य करें।

(3) तुला- ये स्लिमट्रिम दिखना चाहते हैं, आलसी, पहनने ओढ़ने के शौकीन होते हैं। अच्छी तस्वीर हेतु शाकाहार ज्यादा, मीठी वस्तु पसन्द होने पर अधिक न खाएँ। व्यायाम, बेडमिन्टन, 2.5 लीटर पानी प्रतिदिन पीवें तो गुर्दे पर राज करेंगे।

(4) वृश्चिक- आत्मबल दृढ़ शरीर से लगाव या बेपरवाह खाने का शौक, विषैले तत्व को निकालने हेतु फल सेवन करें,

फलाहार व फाइबर युक्त खाने के साथ व्यायाम नित्य करें।

(5) धनु- कुल्हे व जांघें मोटी, खेल प्रेमी, पार्टी में जाना, जमकर खाना, मोटापन से बचने हेतु मित आहारी बनें, व्यायाम व साइक्लिंग करें।

(6) मकर- इनका अपने आप पर



गहरा नियंत्रण, खाने-पीने में नहीं, अस्थियों पर शासन रखने हेतु केलशियम आहार, व्यायाम नियमित करें।

(7) कुंभ- खाने-पीने में सतर्क, पौष्टिक, खाना रुचिकर, नियमित व्यायाम, किसी वस्तु के सेवन से वजन बढ़ता हो तो उसको बदलना, रक्त पर शासन वाले रक्त संचार वाले आहार लें।

(8) मीन- व्यायाम के प्रति अरुचिकर, ना कहकर अन्य की भावना को ठेस नहीं

पहुँचाना, डाइट की सीमा कायम करें, शरीर लचीला होने से व्यायाम में कोई रुकावट नहीं।

(9) मेष- उक्त राशि वाले सौभाग्यशाली, सक्रिय, ज्यादा काम व भाग दौड़ से भूख ज्यादा पर मोटे नहीं होते। फास्ट फूड के स्थान पर, कार्बोहाइड्रेट्स ऊर्जा व भूख पर नियंत्रण, एरोबिक व योग क्रिया से मस्तिष्क को शान्ति मिलेगी।

(10) वृषभ- नया स्वाद वाला आहार पसंद, दावत का इन्तजार, चाकलेट रुचिकर, भोजन के बाद शॉपिंग या पैदल घूमने से मोटापा नहीं, ब्रेड (डिनर में) से बचने, जिम व्यायाम व बागवानी करते रहें।

(11) मिथुन- ताजा व शुद्ध (भोजन प्रिय, थोड़ा-थोड़ा बार-बार खायें हल्का व्यायाम, टेनिस, तैराकी करें।

(12) कर्क- आहार से मूड (भावना प्रभावित) पर प्रभाव, चॉकलेट, मिठाईयाँ व केक का लगाव न करें, विटामिन बी (डिप्रेसन से मुक्ति) व नियमित हलका व्यायाम करें।

-डॉ.आर.एन. नागर

(आयुर्वेद रत्न)

(आयुष पेट्रन), नई दिल्ली

निवासी- कोटा

औरतों की विचित्र सचाई!

भगवान की ऐसी रचना जो बचपन से ही त्याग और समझौता करना सीखता है।

वह अपने चॉकलेट्स का त्याग करता है अपने दांत बचाने के लिये।

वह अपने सपनों का त्याग कर माता-पिता की खुशी के लिये उनके अनुसार कैरियर चुनता है।

वह अपनी पूरी पॉकेट-मनी गर्लफ्रेंड के लिये गिफ्ट खरीदने में लगाता है।

वह अपनी पूरी जवानी बीवी-बच्चों के लिये कमाने में लगाता है।

वह अपना भविष्य बनाने के लिये लोन लेता है और बाकी की जिंदगी उस लोन को चुकाने में लगाता है।

इन सबके बावजूद वह पूरी जिंदगी पत्नी, माँ और बाँस से डांट सुनने में लगाता है।

पूरी जिंदगी पत्नी, माँ, बाँस और सास उस पर कंट्रोल करने की कोशिश करते हैं।

उसकी पूरी जिंदगी दूसरों के लिये ही बीतती है। इसलिए हमेशा एक पुरुष का सम्मान करें।

हसबैंड
की
परिभाषा

दुःख की निवृत्ति एवं सुख की प्राप्ति के उपाय

मानव मात्र सुख की चाह करता है किन्तु न चाहते हुए भी उसे दुःखों का सामना करना पड़ता है। इस पर गंभीर विचार करने पर सभी सद्ग्रंथों एवं विद्वानों का यही मत पाया गया कि दुःख के दो ही कारण हैं

१- पूर्व जन्म के कर्मों के परिणाम स्वरूप

२- वर्तमान में किये गये अज्ञानतापूर्ण कर्मों के फलस्वरूप

प्रथम कारण पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार जो दुःख है वह तो सभी को भोगना अवश्य पड़ता है, चाहे वह कितना ही ईश्वर भक्त क्यों न हो, क्योंकि कहा गया है

"अवश्यमेव भोक्तव्यं क्रितं कर्म शुभाशुभम् ।"

चाहे शुभ हो अथवा अशुभ पूर्व जन्म के कर्मों को मनुष्य को अवश्य ही भोगना पड़ता है यहां तक स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे माँ कालिका के अनन्य भक्त एवं डॉंगरे महाराज जैसे परम कृष्ण भक्त को भी कैंसर जैसे रोग से संघर्ष करना पड़ा। किन्तु ईश्वर कृपा से इन व्याधियों का कष्ट उसे सहन करने की क्षमता प्राप्त हो जाती है अतः हरि स्मरण करने से इस दुःख की निवृत्ति हो जाती है।

परन्तु दूसरा कारण वर्तमान में अज्ञानतावश किये गये अपने ही कर्मों के परिणाम स्वरूप मनुष्य मात्र को दुःख भोगना पड़ते हैं, भगवान न किसी को सुख देते हैं न दुःख अतः रामचरितमानस में कहा गया है

"कोउ न कोउ सुखदुखकर दाता निज क्रित कर्म भोग सब भ्राता ।" तो जो हम दूसरों को देते हैं वही हम प्राप्त करते हैं जिस प्रकार किसान जो बीज बोता है वही उसे काटना होता है। यदि हम किसी को दुःख देंगे तो हमें दुःख की प्राप्ति होगी और किसी को सुख देंगे तो सुख की प्राप्ति होगी। कबीर दास जी ने इसी लिये कहा है

"बोएं पेड़ बबूल के आम कहां से होय" इसी प्रकार गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा है "गहना कर्मणो गतिः ।" अर्थात् कर्म की गति गहन है अतः मानव को प्रतिक्षण यह ध्यान रखना चाहिये कि हमारे मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी को दुःख प्राप्त न हो, ऐसा करने से भी आप सुख प्राप्त कर सकेंगे।

अब यह सुख भी अनेक प्रकार का है पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया, तीसरा सुख पुत्र आज्ञाकारी, चौथा सुख पतिव्रता नारी। इस प्रकार अनेक सुख हैं किन्तु

दो सुख मुख्य हैं प्रथम शरीर सुख दूसरा अर्थ (धन) सुख दोनों सुख की प्राप्ति के लिए अनेक उपाय बताये गये हैं (किन्तु ईश्वर की कृपा से सभी सुखों की प्राप्ति हो जाती है) शुभाषितानी का एक श्लोक प्रायः सभी को ज्ञात होगा -

विद्या ददाति विनयं, विनयं ददाति पात्रतां ।
पात्रतां धनमाप्नोति, धनात् धर्मं तत्सुखम् ॥

अर्थात् विद्या विनय को प्रदान करती है, विनय से व्यक्ति धन कमाने का पात्र हो जाता है, पात्रता आने पर धन आ जाता है और धन से धर्म किया जाता है और धर्म करने पर सुख की प्राप्ति होती है। इस श्लोक की अंतिम पंक्तियां भी महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में व्यक्ति धन में ही सुख ढूंढने लगता है जब कि ऐसा नहीं यदि आप यथार्थ सुख की प्राप्ति चाहते हैं तो आपको धर्म करना भी आवश्यक है। अब प्रश्न है धर्म कैसे करे तो इसके लिये बताया गया है कि आप दान करो, यज्ञ करो, दीन दुखी की सहायता करो। वर्तमान में गौ सेवा एवं गौ रक्षण बहुत बड़ा दान है। दान की महिमा बताते हुए तुलसीदास जी ने उत्तरकांड में कहा है कि

"सो धन धन्य प्रथम गति जाकी" वह धन धन्य है जिसकी प्रथम गति है क्योंकि कहा गया है धन की तीन गतियां होती हैं पहली दान, दूसरी स्वयं के उपभोग में खर्च, तीसरी चोर-लुटेरे आदि द्वारा धन का नाश तो प्रथम दान ही धन की गति मानी गई है। दान दिया हुआ ही हमें अनेक गुना बढ़ कर प्राप्त होता है जिस प्रकार ज्वार आदि अन्न का एक दाना बोने के पश्चात् अनेक दानों में प्राप्त हो जाता है यह हमारी बोंवनी है अतः अधिक से अधिक दान करने का महत्व है। बोंवनी के लिए किसान उधार ले कर भी बोंवनी करता है। हमने जो बोया है अर्थात् दान किया है वही हमें प्राप्त होता है पर होता यह है कि सभी लोग बोंवनी में कंजूसी कर देते हैं जिससे उन्हें आर्थिक समस्याओं से जुझना पड़ता है।

-डॉ. ओ.पी. नागर
नागर क्लिनिक गोपालपुरा
मक्सी रोड उज्जैन,
मो. 930222333



विश्व प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर मंदिर, माँ हरसिद्धि
मंदिर एवं पुण्य सलिला माँ क्षिप्रा तट के समीप

श्री हाटकेश्वरधाम

टूरिस्टों के ठहरने हेतु नवनिर्मित रूम उपलब्ध



शादी व अन्य सभी
प्रकार की पार्टियों
के लिए उपलब्ध

हरसिद्धि पाल 82, रामघाट मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)
मोबा. 99770-50625, फोन नं. 0734-2584599

बस यात्रियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था।

पितृ धर्म की अज्ञानता हमारे दुखों का कारण तो नहीं?

पितृ धर्म के अन्तर्गत अपने पूर्वजों को तृप्त करने हेतु उनके निमित्त श्रद्धापूर्वक दान, तर्पण, श्राद्ध, पिंडदान आदि का महत्व प्राचीन काल से चला आ रहा है। हमारे बड़े बुजुर्गों द्वारा पूरी शान से यथा सम्भव ब्राह्मणों को उनका प्रिय भोजन कराने एवं तर्पण आदि की परम्परा को हम होश सम्भालने के बाद से देखते चले आये हैं। उन लोगों की ईश्वर के प्रति अटूट आस्था एवं बड़ों के प्रति श्रद्धा का फल ही आज हमारी सम्पन्नता की पहचान होता है। इस महत्व को समझने और इसका अनुसरण करने वाले परिवारों की सुख-शान्ति, सम्पन्नता एवं खुशहाली आज भी स्पष्ट दिखाई देती है।

इस महाधर्म में नित्य तर्पण के साथ पितृ पक्ष में श्रद्धापूर्वक श्राद्ध, तर्पण वार्षिक क्षयतिथि श्राद्ध की परम्परा आज भी सांसारिक परिवारों से जुड़ी है। प्रत्येक मांगलिक कार्यों के पूर्व नान्दीमुख श्राद्ध के अन्तर्गत हम अपने पूर्वजों हेतु वस्त्र, फल, मिठाई एवं अन्य माध्यमों से उनका आह्वान कर उनको पूजते हैं। विशेष परिस्थितियों में त्रिपिण्डी एवं गया श्राद्ध का विशेष महत्व होता है। कुछ धर्म निष्ठों की यह नित्य क्रिया है तो कुछ मासिक तिथियों पर विशेष करते हैं। शास्त्रों में तेरस एवं अमावस्या तिथि पर पितरों को पसंद गाय के दूध से बनी चावल की खीर फल मीठा एवं भोजन आदि ब्राह्मण अथवा गाय माता को खिलाना पुण्य का कार्य माना जाता है। यही नहीं उनकी स्मृति में जरूरतमंदों हेतु की गई समाज-सेवा भी लाभदायी होती है। सभी के लिए जरूरी नहीं कि हम सभी कुछ करें और बड़े संसाधनों से करें। हमारी श्रद्धा और बजट जितना हमें सहर्ष करने की आज्ञा दे हमें करना चाहिए। प्रभु श्रीरामचन्द्रजी ने इस कार्य में बालू तक का उपयोग किया था।

यह तो इस धर्म को पालन करने के उपाय है, किन्तु आज की विडम्बना में बदलाव आ रहा है। श्रद्धा का अभाव, सही मार्गदर्शन का न होना, विभिन्न भ्रान्तियाँ भय, व्यस्तता, इस कार्य को बोझ या दिखावा समझने की भूल, विरासत में मिली अत्यन्त सम्पन्नता या पाप घेरने की बात समझे तो आज पितृ धर्म से हम पहले की तुलना में दूर होते जा रहे हैं। दरअसल देह त्याग करने वाले को मृतक समझ समाज का एक वर्ग किसी भी फर्ज के लिए अपने को उत्तरदायी नहीं मानता किन्तु आत्मा अजर-अमर होती है और उसकी कुछ अपेक्षाएँ भी हमसे होती होंगी। यह सत्य मानने के लिए हम अपनी बुद्धि का पूर्ण इस्तेमाल नहीं करते। फिर बहाने माध्यम बन जाते हैं।

मसलन तीन पुश्तों में कहीं भी शादी, ब्याह, मुण्डन, जनेऊ या जन्म की सूचना मात्र से यह शान से कहना कि इस बार हमें तर्पण एवं श्राद्ध नहीं करना है, यह एक आम बात हो गयी। भले ही उनके सुख-दुख में हमारे कोई वास्ता न हो, यही नहीं बड़ों की जायदाद में एक-एक इंच के लिए बगावत करने वाले यह कहकर मस्त हो जाते हैं कि फला वला भाई यदि करता है तो उनके लिए यह आवश्यक नहीं, जबकि परिवार में जितने चूल्हे जलते हैं, सभी के लिए यह अनिवार्य रहता है। फिर बात नान्दीमुख श्राद्ध की हो तो कहना ही क्या। मानों सरकारी छुट्टी मिल गई। सर्वाधिक उदासीनता तो विरासत में मिली सम्पन्नता के गुरु होने वालों की होती है। ऐसे परिवार जो बड़ों के जीवित रहते उनकी सेवा से दूर रहते हैं उनके लिए तो यह कार्य अत्यन्त कठिन होता है। ऐसे लोगों को सजा आज नहीं तो कल जरूर मिलती है। परेशानी के दलदल में फंसते-फंसते कष्टों के भव-सागर में हम कब

घिर जाते हैं। इसका अंदाजा भी हमें नहीं होता। यह तमाम अधर्म से बचने के लिए शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख लिखा है कि-

विवाहे व्रत, चूडासू वर्ष मर्धतर्धकम् ।

पिण्डदानं मृदास्नानम् न

कुर्यात् तिल तर्पणम् ॥

अर्थात् विवाह एवं व्रत उद्यापन एवं मुण्डन संस्कार के पश्चात् या जो कर्म जिसमें नान्दी मुख श्राद्ध हुआ हो उसके 6 महीने तक पिण्ड-दान, मिट्टी लगाकर स्नान एवं तर्पण में तिल का उपयोग न करने की सलाह तो दिखती है, किन्तु बाकी धर्म की उपेक्षा का वर्णन नहीं समझ में आता। तर्पण में पुष्प का उपयोग कर सकते हैं। जीवन-मरण की परिस्थितियों में सिर्फ शुद्ध न होने की स्थिति में ही इसे रोका जा सकता है। गया श्राद्ध के बाद भी इसकी इतिश्री नहीं होती। परिस्थितियों वश श्राद्ध में यदि घर में बने हुए सामान का उपयोग नहीं कर सकते तो सिद्धा-दान तो अत्यन्त आवश्यक है।

इसके बावजूद विनाश काले विपरित बुद्धि।

अन्जान बनी हमारी गैर जिम्मेदारी।

पितृ दोष का जन्म लेती है।।

यानी परिवार पर संकट के नये-नये बादल टूट कर नई-नई समस्याओं से हमें ग्रसित करते हैं। अधर्मी बनना शारीरिक एवं मानसिक कष्ट, व्यापारिक बाधा, अकाल मृत्यु, वंश वृद्धि में रुकावट, पारिवारिक क्लेश, वांछित एवं मांगलिक कार्यों में रुकावट, अकल्पित भय, डिप्रेशन, शंकालु एवं लक्ष्यविहीन जीवन एवं अशान्ति ये सब ऐसी समस्याएं हैं, जिनमें घिरे हुए हम अपने परिजनों को पाते हैं।

दरअसल शंका भ्रान्ति व अड़चनों के फेर में हम दिल से यह नहीं सोच पाते कि हम यह क्यों करते हैं किसके लिए करते हैं? एक कहावत है-

हाथ कंगन को आरसी क्या। पढ़े लिखे को फारसी क्या।।

इस धर्म पालन हेतु हमें अपने माता-पिता के जन्म से आज तक की उपकारों को अन्तर्मन से सोचना होगा। शास्त्रों, विद्वानों एवं गुरुओं का मत परिस्थितिवश परिवर्तित हो सकता है, किन्तु यदि हम अपने प्रारम्भ में जाये तो देखेंगे कि मां के गर्भ में आने से जन्म तक कितना कष्ट हमारी माताएं सहती होंगी तत्पश्चात् शादी ब्याह के साथ समस्त सुख-सुविधाएं

प्रदान करते हुए अपनी सम्पत्ति को हमें सौंप देना। यही नहीं माता रानी से हम लोगों की खुशियों की मन्नत मांगने वाले उनके हृदय को देखकर हमें यह स्पष्ट बोध होगा कि यह कार्य हमें महाधर्म के रूप में करना चाहिए। ऐसे में होश सम्भालने के बाद से स्वयं हम लोगों को अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। विशेषकर शरीर त्यागने के पश्चात् और भी श्रद्धा से उस रिश्ते को निभाना चाहिए वे हमारे साथ हैं, यह अहसास हमें कुछ

भी करने में संशय में नहीं डालेगा, बड़े आपको आशीर्वाद ही देंगे, खूब ईमानदारी से अपने दादा एवं नाना के खानदान के साथ ही अन्य के लिए किया गया यह कार्य सदैव हमें आगे बढ़ायेगा कि पितृ खुश तो इंसान राजा बन सकता है और नाखुश हो तो भिखारी।

-संतोष व्यास (आचार्य)

राधाकुंज, 39, लक्ष विहार पुरानी,
नाव फैक्ट्री, कनाड़िया रोड़, इन्दौर
(म.प्र.)

सुन्दर समाज की परिकल्पना हेतु स्वयं रखें नींव

आपकी अपनी है जय हाटकेश वाणी

ये शाश्वत सत्य है कि समाज सेवा एक टीम वर्क है। संगठन बगैर टीमवर्क के 'शून्य' है। यह आम है कि अक्सर अपने अहम के बोझ तले दबकर लोग अपनी सृजनात्मकता का खात्मा कर देते हैं, या संगठन की मानवतावादी दार्शनिकता का भी हनन हो जाता है। सभी समाजजनों से यह सानुरोध निवेदन है कि अपने सामाजिक संगठन के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को अनिवार्य रूप से समझने के पश्चात् स्वयं योगदान दें तथा अपने निकटतम रिश्तेदारों को भी अपने संगठन से जोड़ने में मदद करें यह प्रयास नई ऊँचाईयां छूने का अवसर प्रदान करेगा। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें नागर समाज से जुड़कर अपने जीवन में

सृष्टि का कर्ज अदा करने हेतु जय हाटकेशवाणी का मंच मिला। समाज की अनेक कुप्रथाओं एवं विसंगतियों के बारे में हम अपनी राय एक-दूसरे को देते हुए दिखते हैं, परन्तु अनेक अवसर पर हमारे जीवन में जब आमूलचूल परिवर्तन के अवसर आते हैं तो उस समय अपना मुंह फेर लेते हैं।

सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में नागर समाज के 5000 से ज्यादा घर नहीं हैं, हमें गर्व है कि 3836 परिवार आपकी अपनी हाटकेशवाणी से जुड़े हुए हैं और हम वादा करते हैं कि सन् 2015 में जय हाटकेश वाणी के दस वर्ष पूर्ण होने के साथ-साथ मध्यप्रदेश में शत-प्रतिशत सदस्यता का अभियान पूर्ण कर लेंगे।

सम्पूर्ण विश्व में दस वर्षों से भी कम समय में जय हाटकेश वाणी ने अपनी गतिविधियों के माध्यम से अलग पहचान बनाई है।

सुन्दर समाज की परिकल्पना हेतु प्रत्येक समाजजन एवं संगठन को रचनात्मक योजनाओं को महत्व देना ही होगा। हमने समाज में प्रत्येक सृजनात्मक पहल को महत्व दिया है। समाज में जो सोच बदली है उसे भी परिलक्षित किया है, इस मानसिकता में परिवर्तन जरूरी है कि ब्राह्मण पैसा नहीं देते। सबको साथ लेकर चलने की प्रवृत्ति एवं आपसी सहयोग की भावना ही समाज को उन्नति एवं प्रगति प्रदान कर पाएगी।

-पवन शर्मा मो.9826095995

मुक्तिका

पूछता कोई नहीं, मतलब निकल जाने के बाद।
मुड़कर ना कोई देखता, फोटो खिचवाने बाद।।
पहिनाया गया हार, उतरा जाए हैं चट-पट।
पंडित, प्रवचनकार, न रुकते, आभार-दक्षिणा पाने के बाद।
तू-तू, मैं-मैं- होती रहेगी आयो-जाओ में हर समय।
दर्द न उनका जानता कोई फंक्शन निपट जाने के बाद।
हर तरफ अपवाद फैलाए जाते हैं भले काज में।

ठगा छला महसूस करते, जन, जाजम उठवाने के बाद।
पढ़े गए पेपर की मानिद हो गई है जिन्दगी आजकल।
गलतियाँ रिपीट करते, नित्य प्रति समझाने के बाद।।

-गड़बड़ नागर

191, सत्यसुख सेठी नगर, उज्जैन (म.प्र.)
धुमन्तु यंत्र सम्पर्क- 9630111651

भगवान की बात | बड़ी देर भयी नन्दलाला

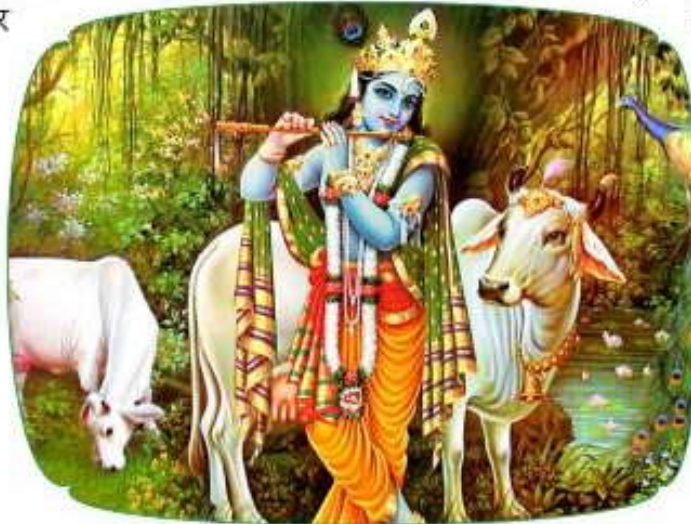
भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा व लीला भूमि वृन्दावन स्थित श्री भगवान भजनाश्रम द्वारा प्रकाशित पत्रिका- 'ऋषि-जीवन' के सम्पादक एवं धर्म व आध्यात्म जगत के जाने-माने लेखक व विचारक श्री विष्णुदान शर्माजी ने पत्रिका के माह अक्टूबर 1999 के अंक में 'अपनी बात' सम्पादकीय में बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्तमान जीवन, जन-जीवन, जन-रुचि, जन-अभिरुचि, जनमानस के चिन्तन की स्थिति तथा सामान्य जनता-जनार्दन के दुखी, संघर्षमय व गरीबी से परिपूर्ण जीवन की स्थितियों व परिस्थितियों का उल्लेख किया है।

आखिर क्यों! आखिर क्यों, इस भारत भूमि पर ऐसे पाप हो रहे हैं। यह विचारणीय प्रश्न है। यह वही भारतभूमि है- जहाँ दान, दया व धर्म का कभी डंका बजा करता था। राजा बलि, राजा सत्यवादी हरिश्चन्द्र व राजा विक्रमादित्य के देश में यह क्या हो गया है। ऐसा क्यों हो गया है? श्री विष्णुदानजी के शब्दों में भगवान! अब सहा नहीं जाता। अधार्मिक वृत्ति के मनुष्यों की संख्या निरन्तर वृद्धि पर है। इनके द्वारा पुष्ट किया गया अधर्म का अन्धकार बढ़ता ही जा रहा है। अनाचरण, दुराचरण, भ्रष्टाचार का अन्त होता दिख नहीं पड़ता। अत्याचार की अति हो चुकी है। मनुष्य का आचरण पशुवत होता जा रहा है। आपका तो वचन है, संसार के लिए कि धर्म को हानि होने पर, साधु ब्राह्मणों पर अत्याचार बढ़ने पर, उनकी रक्षार्थ मैं युग-युग में अवतार ग्रहण करूंगा तथा धर्म की रक्षा करके उसे पुनःस्थापित करूंगा। इस सबकी सीमा लांघी जा चुकी है। अब तो आपको स्वयं ही पधारना पड़ेगा तभी प्राणीमात्र की रक्षा सम्भव है। आपकी जन्मभूमि के कष्ट पराकाष्ठा पार करने वाले हैं।

गोपाल! आपकी गउएँ आपको आर्त स्वर में पुकार रही है। उनकी संख्या नाम

मात्र की रह गई है। शीघ्र पधारो, उनकी रक्षा करने। गोपनीय! नारी जाति की मर्यादा संकट में है। एक द्रोपदी की आर्त पुकार आप सह न सके अब तो हजारों लाखों की संख्या में द्रोपदी पुकार रही है।

'दीनानाथ! एक सुदामा की दीनता आप देख न सके। रो उठे। आँसुओं से उसके पैर धो डाले। अब अनेक सुदामाओं की दीनता पर आप टस से मस नहीं हो



रहे हैं- क्या कारण है? असंख्य लोग दिन रात कड़ी से कड़ी मेहनत कर खून-पसीना एक करके भी कष्ट रहित जीवन यापन करने में नितान्त असहाय हैं। क्या उनकी सुध न लेंगे? कृपानिधान! गो-पालन करके अपरिमित मात्रा में दूध उत्पादन करने पर भी उनके दूधमुहों को एक-एक बूंद दूध के लिए तरसना पड़ता है। क्या

इन दीनता की दलदल से उनको न उबारोगे नाथ! धर्म प्रवर्तक! धर्म-संकट में है। उनका क्या होगा? पृथ्वीतल से ब्राह्मणों का लोप हो रहा है। वीरों की संतति श्रगाल की भाँति थरथर काँप रही है। व्यापारियों का व्यापार धर्म एवं व्यापारिक पवित्रता नष्ट प्रायः है। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वालों की सुध लेने वाला कोई नहीं है। क्या उनका जीवन नष्ट होने के लिए ही बना है प्रभु! यह कैसी विडम्बना है?

करुणानिधान! जन-जन की पीड़ा और संताप का हरण करने, मानवमात्र का आचरण धर्ममय बनाने की सदप्रेरणा देने के लिए शीघ्र ही पधारो। अधर्म का विनाशकर धर्म की स्थापना करो। दीन दुखियों की पुकार, त्रसित मानवता की करुण पुकार सुनकर भी अब क्यों अनसुनी कर रहे हो नाथ! इस भयानक

परिस्थिति में जब आपके भक्तों को आपका सहारा न मिला तो वे फिर किसे पुकारेंगे। किसे अपना कहेंगे? सभी दीन जन करोड़ों कण्ठों से आपको सहायता के लिए पुकार रहे हैं। असंख्य हाथों को पसार कर आपका आह्वान कर रहे हैं। पधारो नाथ! पधारो।

यह सटीक, हृदय स्पर्शी व वर्तमान के

सत्य से परिपूर्ण सम्पादकीय अग्रलेख पढ़कर मन, मस्तिष्क व हृदय आनन्दोलित, उद्वेलित व शोकाकुल हो गया। इस जगत में नित्य घटित हो रही नवीन घटनाओं, अत्याचारों, अनाचारों, अनीति, अन्याय की चीत्कारों, आर्तनाद एवं असहाय गौओं व मूक असहाय निर्बल प्राणियों के



करुण कुन्दन की अनुगुंज होने लगी। इस जगत में क्यों कर इतना हाहाकार मचा है।

जगतपिता ने सर्वसुन्दर, सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुविधायुक्त सृष्टि बना कर दी है। मनुष्यों को अन्य सभी प्राणियों की तुलना में परमपिता प्रभु ने अधिक सुविधाएँ दी हैं। सभी प्राणियों से श्रेष्ठकर काया (शरीर) दी है। पृथ्वी पर इस कलियुग में भी सभी वनस्पतियाँ, पेड़-पौधे व जंगली तथा पालतू प्राणी अपने-अपने स्वभाविक धर्म-कर्म का पालन कर रहे हैं। प्रकृति के नियमानुसार चल रहे हैं। फिर यह मनुष्य क्यों उलटा चल रहा है। इस मनुष्य समुदाय को क्या हो गया है? यह सोच-सोचकर मैं तो हैरान व परेशान हो गया। बात कुछ भी समझ में नहीं आई। भगवान भी यह सब क्यों चलने दे रहे हैं, जगत में। क्यों मनुष्य की इन बेहूदी हरकतों, बेशर्मी, हठधर्मी को बर्दाश्त किये जा रहे हैं। दीन-हीन प्राणियों, बालकों, मनुष्यों, स्त्रियों की रक्षा ऐसे युग में कैसे होगी? भगवान आप कब आओगे? भगवान आप आते क्यों नहीं? हे भगवान! ऐसा ही कब तक चलता रहेगा, होता रहेगा?

इन कठिन प्रश्नों की मन, मस्तिष्क व हृदय में बारम्बार 'अनुगुंज' होने लगी। मैं इन प्रश्नों का उत्तर व समाधान करने की दिशा में चिन्तन-अनुचिन्तन करने लगा। किन्तु लौकिक जगत का मैं तुच्छ मनुष्य भला इन कठिन प्रश्नों का उत्तर कैसे खोज

पाता? अन्ततः थक-हारकर व माथा पकड़कर बैठ गया। तभी अचानक मेरी बुद्धि ने काम करना शुरू किया। अपने सदगुरुदेवजी का ध्यान आया। मैंने मन ही मन अपने महान सदगुरुदेव पूज्य सन्त श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज का ध्यान किया। जिन्होंने सेमली आश्रम-जिला शाजापुर, मध्यप्रदेश में विशाल गौतीर्थ स्थापित किया है। जिसमें हजारों गायें आनन्द से रह रही हैं। पूज्य सदगुरुदेवजी की प्रेरणा से म.प्र. में अनेक गौशालाओं की स्थापना हुई है।

श्रीमद् भागवत कथाओं में कथा-पाण्डाल में ही पूज्य सदगुरुदेवजी ने हजारों जोड़ों के निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्पन्न किये हैं। हजारों लोग पूज्यश्री की कृपा से नशे व माँसाहार की लत से मुक्त हो गये हैं। नवीन गतिविधियों में प्रतिवर्ष पवित्र तीर्थ नगरी उज्जैन की पुनीत-पावन क्षिप्रा नदी की सफाई का अभियान चलाते हैं। जिसमें म.प्र. के मुख्यमंत्री भी प्रतिवर्ष कार सेवा करते हैं। महान शिवतीर्थ ओंकारेश्वर में हरिद्वार के समान भव्य घाट का निर्माण नदी के तट पर घाट का निर्माण करा रहे हैं। गाँव-गाँव व नगर-नगर श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा बहा रहे हैं। जन-जन को अपनी अमृतवाणी द्वारा अनमोल अमृत का पान करा रहे हैं। जन-जन को धर्म, संस्कृति, मानवता, सेवा, सद्भावना की ओर प्रेरित कर रहे हैं।

जन-जन में ज्ञान, बुद्धि, विद्या, विवेक व सुमति को जगा रहे हैं।

ईश्वरीय चमत्कारिक गुणों से युक्त ऐसे महापुरुष का ध्यान करते ही मेरा मन, मस्तिष्क व हृदय शांत व स्थिर हो गया। मुझे उद्वेलित, व्यथित व पीड़ित करने वाले विचारों की 'अनुगुंज' से मुक्ति प्राप्त होने लगी। पूज्य

सद्गुरुदेव सन्तश्री श्री श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज की प्रेरणा से, कृपा से व आशीर्वाद से आत्मज्ञान की गहराई में मेरा मन, मस्तिष्क व हृदय उतरने लगा।

देखते ही देखते मैं उस अनन्त गहराई में गोते खाने लगा। और फिर आश्चर्य, महान आश्चर्य, अद्भूत आश्चर्य, अनोखे आश्चर्य, अद्वितीय आश्चर्य व अनन्त आश्चर्य से परिपूर्ण घटना हुई। मेरी मानसिक तन्द्रा व चिन्तन-अनुचिन्तन में मुझे भगवान मिल गए। भगवान मुझसे रुबरु, उन्मुख व मुखातिब हो गए। परन्तु आश्चर्य, महान आश्चर्य की बात थी यह कि चित्रों, चलचित्रों में देखी व वेद पुराणों में पढ़ी हुई भगवान के मुखमण्डल पर सदैव छाई रहने वाली प्रसन्नता गायब थी। मेरा मन फिर दुःखी व व्यथित हो गया। भगवान के दर्शन हो गए मुझे। भाग्यशाली कैसे समझूँ अपने आपको?

उदास मुखमण्डल वाले भगवान के दर्शन का प्रभाव व लाभ शुभ होगा या अशुभ? मैं फिर चक्कर, उलझन व गफलत में पड़ गया। हाथ-जोड़ भगवान के सामने खड़ा हो गया। इससे पहले भगवान से पूछता कि भगवान आप तो जगत के परमात्मा, सर्व समर्थ, सर्वशक्तिमान हो फिर आप उदास क्यों हो? उससे पहले ही भगवान बोल पड़े। (क्रमशः)

-(ऋषिजीवन से साभार)

-नन्दकिशोर प्रसाद गुप्ता, रतलाम

शारीरिक एवं मानसिक आनंद का एक मात्र उपाय है

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है 'ध्यान बौद्धिक ज्ञान से श्रेष्ठ है।' रामकृष्ण परमहंस के विचार के अनुसार मृग कस्तुरी की सुगन्ध मनुष्य के अंदर है और वह सारे संसार में उसकी सुगन्ध स्रोत जानना चाहता है।

मनुष्य यदि अपने को पहचानेगा तो सारी दुनियां को जान जाएगा। मनुष्य को बाह्य जगत के अलावा अंतर्जगत में झांकना है। आध्यात्मिक मार्ग ही हमें आगे प्रगति पर ले जाएगा व परमशांति प्रदान होगी। आत्मा व परमात्मा, भगवान सब आपके अंदर है। हमें अपने अंदर गोते लगाकर उसे पाना है। सांसारिक जीवन त्यागना नहीं है पर इसमें आध्यात्मिक व योग साधना के द्वारा ध्यान को अपनाकर उसका पूरा लाभ लेना है। वैज्ञानिकों के अनुसार हमारी मानसिक क्षमता का अधिकांश भाग का उपयोग ही नहीं होता है। केवल दस प्रतिशत शक्ति का ही उपयोग होता है। 90 प्रतिशत शक्ति का उपयोग ही नहीं पाता है यानि यह शक्ति सोई हुई ही रह जाती है। हमारी क्षमताओं का बड़ा भाग बिना प्रयोग के ही रह जाता है। इस शक्ति को व मन को हमें जगाना है। मन उसी पर सोचता है जो दिखता है। शेष चेतना से अलग ही रह जाता है। योग द्वारा मस्तिष्क के सूक्ष्म स्तरों को खोला जाता है।

ध्यान के द्वारा हम अपने अंदर जा सकते हैं। अंदर जाने का मार्ग ध्यान के द्वारा ही

मिलता है। ध्यान करने की अनेक विधियां हैं, जिसके द्वारा हम अपने को अपने ही अंदर आसानी से ले जा सकते हैं। मनुष्य प्रातः तनाव में उठता है व तनाव में ही रहता है। यदि हमारी रुचि के

अनुसार अगर अपनी बात या काम नहीं होता है तो हमें तनाव आ जाता है अतः ध्यान में जाने के पहले हमें तनाव से मुक्त होना है। आप आत्म सुझाव, प्रयास के द्वारा तनाव को दूर कर आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

प्रारंभ में हमें ध्यान कठिन लगेगा। आपको यह क्रिया किसी योग विशेषज्ञ से ही सीख कर प्रारंभ करनी चाहिए। शुरु में ये क्रिया आपको कम अच्छी लगेगी फिर धीरे-धीरे अच्छी लगने लगेगी। आपको ध्यान लगाने का अभ्यास जारी रखना चाहिए जिससे बाद में ध्यान अच्छा लगेगा व इसके द्वारा आपके जीवन में अद्भूत आनंद प्राप्त होगा। मेरे अनुभव से ध्यान करने वालों को शारीरिक व मानसिक आनंद दिनभर मिलता रहता है। इससे विद्यार्थी, पत्रकार, राजनीतिज्ञ, ऑफिसर, वकील, स्त्री-पुरुष, बालक, युवा, प्रौढ़ सभी लाभान्वित होते हैं। यह लाभ ध्यान करने वालों को ही ज्ञात होता है। ध्यान का निरंतर अभ्यास मनुष्य को परम आनंद व पूर्ण सफलता की ओर ले जाता है। गुड़ खाने वाले को मीठा होने का अंदाज लगता है इसी तरह ध्यान करने वाले को ध्यान शारीरिक, मानसिक आनंद देता है।

हमारा मस्तिष्क चार भागों में बंटा है।

1. वृहत मस्तिष्क (सेरीब्रन), 2. लघु मस्तिष्क (सेरी बेलम)

ध्यान



3. मेड्युला (ओवलांगगेट), 4. सुषुम्ना (स्पाइन कार्ड)

ध्यान की अवस्था में मस्तिष्क के अलग-अलग भागों में अलग-अलग प्रभाव होता है और फिर यह हमें आनंद की ओर ले जाता है। ध्यान के पहले ॐ का उच्चारण 11 से 21 बार करना है। योगेन्द्र प्राणायाम (अनुलोम विलोम) 20 वक्त व भ्रामरी प्राणायाम 5 से 10 वक्त करने से नाड़ियों का संतुलन बराबर हो जाता है। इससे शांति व आनंद की अनुभूति होती है। मनुष्य के शरीर में 72 हजार नाड़ियां हैं इसमें प्रधान नाड़ी इड़ा व पिंगलु सुषुम्ना नाड़ी है। इड़ा को चन्द्र नाड़ी कहते हैं। यह बाईं ओर होती है। यह ठंड पहुँचाती है। पिंगला को सूर्य नाड़ी कहते हैं। इससे शरीर में गर्मी आती है। योगेन्द्र प्राणायाम (अनुलोम विलोम) करने से हमारे शरीर में संतुलन आ जाता है इसके बाद ध्यान अच्छा लगता है। भ्रामरी प्राणायाम के बाद भी ध्यान अच्छा लगता है। ध्यान करते वक्त प्रारंभ में कुछ अजीब चीजें दिखती हैं फिर कुछ दिन अभ्यास के बाद केवल सांस व मस्तिष्क के बीज भूमध्य ही दिखता है। प्रारंभ में अभ्यासी राग द्वेष, भय, काम, क्रोध आदि अनेक प्रवृत्तियां देखते हैं फिर धीरे-धीरे केवल सांस पर व भूमध्य के बीज ही देखते हैं। रोज ध्यान करने से दूसरी भावनाओं का नाश हो जाता है और ध्यान करने वालों को

ध्यान की अवस्था में मस्तिष्क के अलग-अलग भागों में अलग-अलग प्रभाव होता है और फिर यह हमें आनंद की ओर ले जाता है। ध्यान के पहले ॐ का उच्चारण 11 से 21 बार करना है।

अद्भूत आनंद प्राप्त होता है। योग सांसारिक पुरुषों के लिए भी है। (योग फोर हाउस होल्ड पीपल)

ध्यान करने के बाद मनुष्य को उनके रोजमर्रा के कार्यों में अधिक तत्परता आ जाती है। बालक, युवा, प्रौढ़, वृद्ध स्त्री, पुरुष सबको एक अद्भूत आनंद की प्राप्ति होती है और वह अपने दैनिक जीवन में अधिक सर्तक होकर अधिक दक्षता से कार्य करते हैं। कारण सफलता मिलती है और शारीरिक और मानसिक बीमार व्यक्ति की बीमारी जल्दी ठीक होती है किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करना जिससे मन शांत हो जाता है।

सूर्योदय होने पर कैलाश पर्वत पर बैठे हुए भगवान शंकर के दर्शन करने से कितना आनंद आता है इसी तरह ध्यान में आगे बढ़ने से आनंद का अनुभव आता है। साधक अपने को इसमें डूबता हुआ पाएगा। ध्यान के द्वारा कुछ समय के लिए हमें हृदय के अंदर की ओर ले जाएगा। जिसमें अद्भूत आनंद प्राप्त होगा। हमारा तनाव हमारी बीमारी ठीक हो जाएगी। इसमें अनिद्रा, तनाव, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, दर्द, पाचन क्रिया अनेक बीमारी में लाभ पहुँचता है। बीमारी स्वतः दूर हो जाती है। शारीरिक व मानसिक बीमारी दूर करने के वास्ते ध्यान का अद्भूत प्रभाव होता ही है ध्यान निद्रा नहीं है, सम्मोहन नहीं है, ध्यान के द्वारा मनुष्य अपने अंदर चल रहे तनावों आदि के प्रति सजग होकर उन्हें दूर करने का प्रयत्न करता है।

प्रातः व शाम अपने समय के अनुसार 5 से 10 मिनट का ध्यान, आपके दैनिक जीवन में आश्चर्यजनक प्रभाव करता है। ध्यान से निराशा, उदासी, तनाव व उच्च रक्तचाप बीमारी का निवारण होता है। वर्तमान में प्रातः उठते बैठते उच्च रक्तचाप, सांसारिक थपेड़ों को झेलने के लिए ध्यान आपको मदद करता है।

ध्यान के द्वारा शरीर व मस्तिष्क को आराम मिलता है। हर तरह की बीमारी में राहत मिलती है। दवा से एक अंग का उपचार होता है। दूसरे अंगों पर कभी-कभी दुष्प्रभाव

होता है। पर ध्यान में दुष्प्रभाव नहीं होता, बल्कि रोग निवारण हो जाएगा। ध्यान के द्वारा मनुष्य में बीमारी से लड़ने की शक्ति प्राप्त होती है। ध्यान के द्वारा कॉर्बन डाईआक्साईड (अशुद्ध वायु) की उत्पत्ति कम हो जाती है व ऑक्सीजन (शुद्ध वायु) की आवश्यकता कम हो जाती है। मैंने देखा कि ध्यान के द्वारा (शुद्ध वायु) ऑक्सीजन के खर्च में 20 प्रतिशत की कमी आ जाती है, क्योंकि श्वास की गति धीरे-धीरे धुँए जैसी चलती है। शरीर, मन, मस्तिष्क पर नियंत्रण ध्यान द्वारा ही आता है।

उच्च रक्तचाप नीचे गिर जाता है। ध्यान के बाद श्वास गति ढंग से चलती है। ध्यान में उच्च रक्त संचार होता है। जिससे मांशपेशियों को अधिक ऑक्सीजन मिलती है इस कारण (दुग्ध लवण) का शीघ्रता से क्षय होने लगता है। इससे हम स्वस्थ होने लगते हैं। ध्यान के द्वारा ऑक्सीजन धीरे-धीरे जाती है। प्राप्त ऑक्सीजन मांसपेशियों तक पहुँचने में दुग्ध लवण को तोड़ने से इसका लाभ होता है। चिंता, तनाव, मानसिक रोग आदि से पीड़ित लोगों में शांत स्थिति में रहने वालों की अपेक्षा इसकी मात्रा ज्यादा अधिक रहती है। तनाव, दुग्ध लवण, लेक्टिव एसीड की मात्रा कम करने का सबसे अच्छा उपाय 'ध्यान' है। ध्यान से रक्तचाप स्वाभाविक होकर मन की मानसिक स्थिति शांत हो जाती है। तनाव, चिन्ता अनेक शारीरिक मानसिक रोग का मूल कारण है।

क्रोध से तनाव व तनाव से बीमारी आती है। इसको दूर करने वास्ते ध्यान ही जरूरी है। अपने को बदलकर ध्यान अवस्था में मग्न होकर देखिए आपको अद्भूत व आश्चर्यजनक लाभ दैनिक रोजमर्रा जीवन में मिलेगा। रोगमुक्त जीवन वास्ते रोज 3 से 8 मिनट ध्यान करना है। भूत से लगाव, वर्तमान में असंतुष्ट भविष्य की चिन्ता दुख का कारण है। ध्यान से आप नियंत्रण में रहेंगे। ध्यान के अनेक तरीके हैं। इसके लिए 5 से 10 मिनट का समय निकालें।

ध्यान को आसन, प्राणायाम के बाद

किया जाना चाहिए। आपके व्यस्त जीवन में से 45 मिनट योगाभ्यास के लिए रखिये। इससे शरीर व मन मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा। आधा घंटा आसन, 15 मिनट प्राणायाम, ध्यान आपको रोजमर्रा जीवन में अद्भूत चमत्कार प्रदान करेगा। आप यह आधा घंटा या 5 से 10 मिनट ध्यान में जो देगा उसका फल आपको तुरन्त मिलेगा।

ध्यान करने का तरीका- शरीर को सीधे रखकर, पद्मासन, अर्ध पद्मासन या सुखासन में बैठकर आँखों को धीरे से बंद कर लेंगे। मन को भूमध्य (तिलक वाले स्थान) में रखेंगे। कल्पना करें कि शरीर चट्टान जैसा सीधा खड़ा है। मनरूपी पंछी है, दूसरा प्राणरूपी पंछी है। अपने मन को सहज श्वास पर ले जाना व अपनी श्वासों को व अपने इष्ट को भी देखते जाना। मन को श्वासों के साथ रखना इसमें सहज लम्बी गहरी रहेगी। ध्यान की क्रिया पूर्ण होने के बाद 5 बार 'ॐ' का उच्चारण करें। फिर दोनों हाथों को रगड़ कर गरम-गरम हथेलियों से आँखों की सिकाई करेंगे। गर्दन के पीछे ले जाकर 5 सांस लेने तक रुकेंगे।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्या से 30 से 45 मिनट तक समय निकाल कर योग करना चाहिए योग को माँ समझकर अपनाना चाहिए। योग में श्रद्धा, विश्वास, धैर्य व सबुरी होनी चाहिए व मन सांस पर मन आसन पर व मन क्रियाओं पर होगा तो इसका लाभ तुरन्त मिलेगा। लगातार ध्यान का अभ्यास करने वाले की बीमारियाँ तुरन्त ठीक होती हैं। साथ ही साथ प्रत्येक व्यक्ति को अपनी शक्तिनुसार 1 से 3 कि.मी. घुमना व रात का सुपाच्य भोजन सोने के दो घंटे पहले खाना चाहिए व दिन में एक बार दिल खोलकर हंसना चाहिए।

-ए.के. रावल,
योग विशेषज्ञ
25, पत्रकार कॉलोनी,
साकेत चौराहा, इन्दौर
फोन 0731-2565052



चाहती हूँ साथ तुम्हारा....



मैं अपने मन की बात कुछ पंक्तियों के साथ आरंभ कर रहा हूँ- आधी आबादी हूँ देश की, आधा हक भी रखती हूँ। ज्यादा की अपेक्षा नहीं, पर बराबर सम्मान का हक रखती हूँ। बरसो से दबी हुई हूँ, उन रुढ़ीवादी तीरों के जख्मों से। इक्कीसवीं सदी की महिला हूँ। अब न डरूं किसी वार से। समाज देश की उन्नति हो, टीस मन में बारंबार उठती है। बहुत हुआ है पुरुषों, अब तो मेरी भी हिस्सेदारी बनती है। चाहती हूँ परिवर्तन, इसलिए कृपया बदलो अपना आचरण। चाहती हूँ साथ तुम्हारा, मिल जाए मुझे भी सशक्तिकरण।।

अच्छी बात यह है कि सरकार महिला सशक्तिकरण पर जोर दे रही है, लोगों को प्रेरित कर रही है। इसलिए, मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की प्रशंसा की जानी चाहिए। बेहतर होगा कि हम, समाज मिलकर कुछ ऐसा करें कि नारी शक्ति की चाह, उसकी अपेक्षा पूरी हो सके। सामाजिक व्यवस्था में अगर कोई अधूरापन है तो वह पूरा हो सके। भारतीय संस्कृति की जो मर्यादा है, जो गौरव है उसके दायरे में यह पूर्णता आएगी तो समाज और देश की उन्नति होगी।

किसी भी व्यवस्था में सुधार तब होता है जब ईमानदारी से उसकी कमियां देखी जाएं और उन्हें दूर करने का प्रयास पूरी ताकत से हो। केवल महिला सशक्तिकरण का नारा देने से कुछ नहीं हो सकता, हमें मिलकर ठोस कदम उठाना पड़ेगा। क्योंकि जब तक हम अपनी कमजोरियों को दूर नहीं करेंगे, सुधार

संभव नहीं। आटा पिसाने के लिए हम गेहूँ बीनते हैं और होता क्या है, कंकर-कचरा बीनकर निकाल देते हैं। मैं सोचता हूँ इस सिद्धांत को, इस फार्मूले को महिला सशक्तिकरण के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए। पर ध्यान यह रखना पड़ेगा कि हम सिर्फ कंकर-कचरा ही बीनें, गेहूँ हाथ में न आए। नहीं तो परिणाम क्या आएगा, इसे बताने की जरूरत नहीं।

नए दौर में नए बदलाव आए हैं और आ रहे हैं, इस बात को भी स्वीकारना पड़ेगा। महिलाएँ अब पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी हैं। महिलाओं को महत्व भी मिलने लगा है। देखने में आता है कि महिलाएँ पार्षद, सरपंच और जिला पंचायत अध्यक्ष बनती हैं फिर भी सारे काम पति ही करते हैं। ऐसा क्यों? क्योंकि आरक्षण तो हो गया पर महिलाओं में वह योग्यता, वह सामर्थ्य है कि नहीं। इस

पक्ष को देखा नहीं गया। ऐसा सशक्तिकरण बेमानी भी हो सकता है।

मैं एक बात यह भी कहना चाहूंगा कि सशक्तिकरण का अर्थ केवल नेतृत्व से नहीं है। रेल को देखता हूँ तो इंजन उसे खींचता है और सारे डिब्बे उसके साथ एक अनुशासन में चलते हैं। कहने का मतलब है, किसी भी नेतृत्व को पूरी ताकत और अनुशासन से साथ देने की आवश्यकता है। अगर इंजन आगे दौड़े और डिब्बे पीछे जाए, दाएं-बाएं जाए तो क्या होगा? या तो इंजन टूटकर आगे निकल जाएगा या ट्रेन वहीं रह जाएगी। हो सकता है दुर्घटनाग्रस्त ही हो जाए। रेल एक आईना है। घर-परिवार, समाज और देश की व्यवस्था का। अनुशासन से पूरी ताकत से पटरी पर चलेगी तो मंजिल पर पहुँच जाएगी।

-सुमित नागर

2. नागेश्वरधाम रोड़, सेंटपाल स्कूल के पीछे, उज्जैन

भक्ति में हम आगे बढ़ रहे हैं या पीछे जा रहे हैं, यह कैसे पता चले?

इस सवाल के जवाब को समझने के लिए आपसे एक सवाल है। आप किसी बगीचे की तरफ जा रहे हैं, जहाँ बहुत सारे फूल और पौधे हैं। उस बगीचे की ओर जाते वक्त आपको उनकी सुगंध आएगी या दुर्गंध? जवाब सरल है। यदि आपको दुर्गंध आ रही है तो आप गलत रास्ते पर हैं और यदि सुगंध आ रही है तो आप सही मार्ग पर चल रहे हैं। भक्ति में भी आपको ऐसे सबूत मिलते हैं, जिससे आपको पता चलता है कि आप सही रास्ते पर हैं या नहीं। भक्ति के रास्ते पर चलते वक्त आपको सुगंध तब आएगी जब आपका ध्यान लोगों की अचञ्छाइयों की तरफ जाएगा। संकलन- उषा ठाकोर, मुम्बई

जैसा अंकुर होगा वैसा ही पौधा होगा अंकुर बबुल का होगा तो आम कहां से होगा। जीतेजी रक्तदान एवं मरणोपरान्त नैत्र दान-महादान अगर हम मरकर भी दूसरो की आँख की रोशनी बन सकते हैं तो इससे बढ़कर उपकार या पुण्य और क्या होगा।

-संकलनकर्ता कु.टीशा नागर, देवास

उज्जैन की सबसे भव्यतम जिम योर फिटनेस क्लब का उद्घाटन सम्पन्न

उज्जैन स्थित कॉसमॉस मॉल नानाखेड़ा के द्वितीय मंजिल पर भारत की सुप्रसिद्ध जिम चैन योर फिटनेस क्लब का उद्घाटन मध्यप्रदेश शासन के उच्च शिक्षा मंत्री श्री पारस जैन और जीवन प्रबंधन समूह के प्रमुख और प्रकांड विद्वान श्री विजयशंकर जी मेहता की अध्यक्षता में 15 जुलाई को विधिवत आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में श्री राजेश त्रिवेदी टमटा श्री प्रदीप पाण्डेय, श्री आई सी दुबे, श्री जी पी नागर, श्री राजपालसिंह



श्री अजय व्यास और क्लब के सीईओ श्री रिजवान सय्येद मुंबई उपस्थित थे, कार्यक्रम का प्रारम्भ दीप प्रज्वलन से हुआ अतिथिगण के साथ योर फिटनेस क्लब उज्जैन के सूत्रधार श्री पार्थ मेहता और उनके परिवार के सदस्य श्रीमती विभा मेहता, श्री लव मेहता श्रीमती नेहा मेहता प्रिया प्रतिश प्रार्थना व कुश मेहता ने दीप प्रज्वलन में अतिथियों को वंदन किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में गुरु वंदना कु, प्रार्थना ने सुमधुर कंठ से प्रस्तुत की तत्पश्चात प्रिया मेहता ने सरस्वती वंदना अपने मधुर कंठ से प्रस्तुत की स्वागतम श्री नागेश्वर नागर श्री राकेश

नागर श्री लव मेहता, कुश मेहता विभा मेहता, नेहा मेहता, विजय केवलिया, पार्थ प्रिया प्रतिश, सुनील व्यास द्वारा किया गया, स्वागत भाषण व अतिथि परिचय श्री कुश मेहता द्वारा और क्लब की विस्तृत जानकारी और फिटनेस क्लबसे होने वाले लाभ की जानकारी सी ई ओ श्री रिजवान सय्येद ने दी।

जिम के उद्घाटन के अवसर पर मेहता परिवार के आग्रह पर अनेक इष्ट मित्र गण नागर समाज की ओर से श्री डॉ. जी.के. नागर डॉ प्रदीप व्यास, मनुभाई मेहता, अर्वांतिका के संपादक श्री सुमन जी, श्री संतोष जोशी, जय

हाटकेश वाणी इंदौर के प्रमुख श्री दीपक शर्मा, श्री प्रवीण त्रिवेदी श्री आशीष त्रिवेदी श्री ब्रजेंद्र नागर श्री नीलेश नागर श्री केदार रावल, (सभी इंदौर) श्री नागेश्वर नागर, श्री सत्यनारायण नागर, श्री कृष्णकांत शुक्ल, श्री कृष्णगोपाल व्यास, श्री सुधीर, आशुतोष, दिलीप, राजेश मेहता, योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमंत त्रिवेदी, राकेश दवे व समाज के अन्य वर्ग के लोगो के साथ महिला मंडल श्रीमती आभा मेहता सहित कई उद्योगपति व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि योर फिटनेस क्लब को उज्जैन में स्थापित करने वाले श्री पार्थ मेहता एक श्रेष्ठ उद्यमी है व नयी तकनीको व नयी सोच के लिए वह नागर समाज के उभरते हुए युवा है आप हाटकेश समाचार के संपादक श्री कुश मेहता के पुत्र है व पार्थ मेहता ने इंटीरियर के क्षेत्र में भी अहमदाबाद, इंदौर व उज्जैन में कई स्थानो पर अपनी कला का जौहर दिखाया है, योर फिटनेस क्लब की पूरे भारत वर्ष में 36ब्रांच है और यहाँ पर योगा, एरोबिक्स, जुम्बा, जिम स्टीमबाथ व अन्य कई स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाये मौजूद है।

सालभर पहले की बात है। मेरे बेटे की शादी थी, काफी मेहमान थे। शादी हो गई, उसके बाद सारे मेहमान चले गए थे। सिर्फ मेरी काकी सास रुक गई थी। मेरे बेटे और बहू भी घूमने चले गए थे। उस समय हम लोग मेरी काकी सास को डाकोर के दर्शन करवाने ले गए। भीड़ काफी थी। प्रसाद माला लिया और लाइन में खड़े हो गए। जब हम दर्शन करने गए तो मेरे हाथ में प्रसाद व तुलसी की माला थी। वहाँ तो समय-समय से दर्शन खुलते हैं। जैसे ही दर्शन खुले हम भगवान से थोड़ी दूरी पर थे। तब मुझे हुआ कि ये माला ली है इसे भगवान तक कैसे चढ़ाएं। तब पता नहीं अचानक मैंने अपने हाथ से माला को भगवान के चरणों तक जाने के लिए उछाला। वैसे ही मेरे मन में हुआ शायद मुझसे कुछ गलती हो गई। मुझे इस तरह से उछालना नहीं था और प्रसाद का भोग लगाया यह कह कर कि भगवान

भावना के भगवान

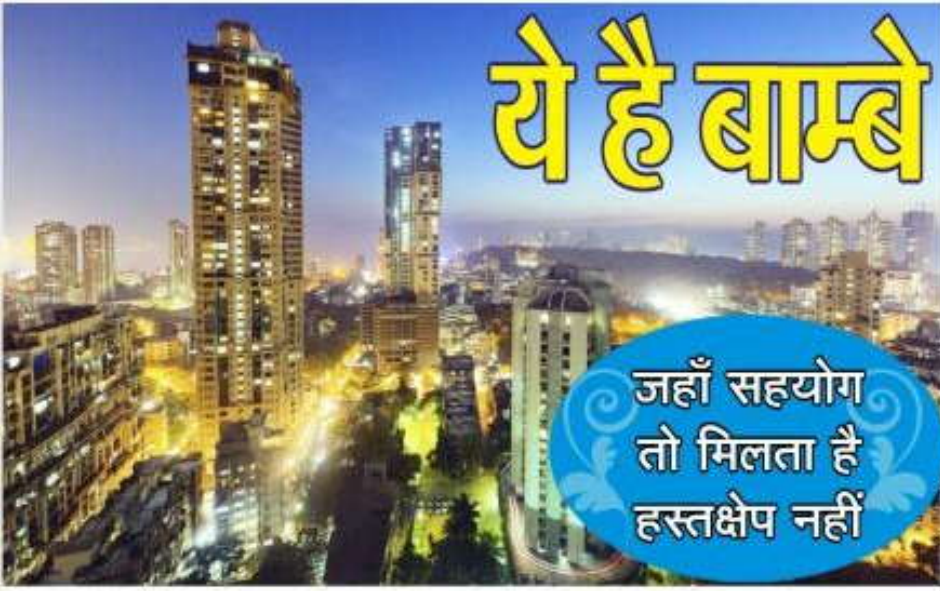
अब यहीं से खा लेना। अचानक मेरे हाथ से प्रसाद का डब्बा थोड़ा टेड़ा हो गया और प्रसाद गिरने लगा। मैं प्रसाद उठाने जैसे ही नीचे झुकी, मेरा पर्स मेरे हाथ से छूट गया और भीड़ का धक्का लगने लगा। अचानक एक पीले वस्त्र जैसे कि डाकोर के नाथ ने पहन रखे थे वैसे ही वस्त्र और हाथ में एक डन्डा लिए सुन्दर पुरुष चेहरे पर तेज लिए डन्डा अड़ाकर खड़ा हो गया और कहने लगा बहन प्रसाद छोड़ दो, अपना पर्स उठा लो, तो मैंने उनसे कहा प्रसाद भी तो पैरों में आ रहा है फिर भी वो मुझसे कहने लगे प्रसाद जाने दो पर्स उठा लो और जैसे ही पर्स उठाकर मैं खड़ी हुई और उन्होंने मुझे बस इतना कहाँ बहन आज तो

आप बच गई और मैं सम्भलूँ उतनी देर में तो वो मेरी आँखों से ओझल हो गए। मुझे कहीं भी दिखाई नहीं दिए बहुत दूढ़ने का प्रयत्न किया, परन्तु कहीं भी नजर नहीं आए। बस मेरे मुख से बार-बार जय हो द्वारिकाधीश तुम्हारी जय हो द्वारिकाधीश ही निकल रहा था और आरती चालू हो गई थी। भगवान ही भक्तों की सहायता करते हैं। उस दिन मेरे पर्स में 5000/- थे। जो मेरे पति ने मुझे संभालकर रखने को दिए थे। भगवान ही थे जो मेरी सहायता करने आए थे।

'जय द्वारिकाधीश की जय'।

-सौ.अर्चना आशुतोष याज्ञिक

मो. 09574993479



ये है बाम्बे मेरी जान

जहाँ सहयोग
तो मिलता है
हस्तक्षेप नहीं

मुम्बई शहर के बारे में हमारे नागर समाज में लोगों का एक अलग दृष्टिकोण है जैसे कि मुम्बई के लोग हमेशा व्यस्त रहते हैं, यहाँ कोई एक दूसरे की मदद नहीं करता, लोगों में प्रेम का अभाव है, लोग एक-दूसरे से मिलना जुलना पसंद नहीं करते हैं। यहाँ पर बाहर से आने वाले यात्रियों को बेवकूफ बनाया जाता है इत्यादि।

जहाँ तक टेक्सी या ऑटो रिक्शे का सवाल है वहाँ पर मीटर सिस्टम है इसलिए किसी भी यात्री को मूर्ख बनाना संभव नहीं है। यहाँ पर अनजान व्यक्ति भी पूछकर कहीं भी पहुँच सकता है। आमतौर पर जैसा फिल्मों में दिखाया जाता है वैसी धोखाधड़ी दूसरे शहरों की तुलना में मुम्बई में नगण्य है।

आइए आपको एक सत्य घटना के बारे में बताती हूँ जिसे पढ़कर आप मुम्बई का सही स्वरूप जान पाएंगे। एक बार मैं लोकल ट्रेन से जा रही थी। अंधेरी स्टेशन पर एक महिला भारी भरकर थैले के साथ उतरी। उन्होंने मुझसे पूछा- यहाँ कुली मिलेगा। मैंने कहा यहाँ लोकल स्टेशन पर कुली नहीं मिलता। जिस स्टेशन से पेसेन्जर ट्रेन जाती है वहीं पर कुली मिलते हैं। मैंने उस महिला को भारी सामान उठाने में मदद की।

थैले का एक सिरा मैंने पकड़ा और एक उन्होंने। हम लोग धीरे-धीरे चल रहे थे। बातों ही बातों में उन्होंने बताया कि वे 85 साल की हैं और अहमदाबाद से अकेली आई हैं। फिर पुल पर सीढ़ियाँ चढ़ने की बारी आई। हम दोनों ही थक चुके थे। अचानक एक 30 साल का युवक आया उसने लपक कर उस महिला के हाथ से थैले का एक सिरा ले लिया और हम दोनों ने सीढ़ियाँ पार की। वह युवक चला गया। मैंने उस महिला से कहा आप रुकिए। मैं आपकी मदद के लिए कुछ करती हूँ, क्योंकि मुझे दूसरी ओर जाना था। अचानक 30-35 साल की दुबली पतली महिला आई उसने मुस्कराते हुए अपने दोनों हाथों से थैला उठा लिया, जिसका करीब 15 किलो वजन था और उस वृद्ध महिला से कहा आप धीरे-धीरे मेरे पीछे आइए।

यह घटना मैं 'जय हाटकेशवाणी' के पाठकों के साथ इसलिए बांट रही हूँ कि मुम्बई के बारे में लोगों का जो दृष्टिकोण है, उन पर गौर करें। मुम्बई में लोग व्यस्त रहते हैं फिर भी जब भी कहीं मदद की जरूरत हो पहुँच जाते हैं। बिना बुलाए किसी के यहाँ जाना या किसी के भी व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए लोगों के पास समय नहीं है या कह सकते

हैं कि लोग ऐसा करना नहीं चाहते। पूरी और भीड़-भाड़ भी एक वजह है।

महिलाओं को अतिरिक्त समय मिलता है वो समय वे अपने परिवार की देखभाल, सपने शौक पूरे करने, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने और अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए इस्तेमाल करती हैं। जिसमें परिवार का भी सहयोग रहता है। कुछ लोगों के यहाँ मेहमानों के आने-जाने का सिलसिला रहता है उसे भी अच्छी तरह से संभाला जाता है। हर हाल में प्रसन्न रहना यहाँ के लोगों की प्रकृति है। नागर समाज का हाटकेश्वर उत्सव और नवरात्री यहाँ बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। चाहे कितनी भी दूरी क्यों न हो भारी संख्या में लोग हाजिर रहते हैं। हर व्यक्ति के स्वभाव की तरह हर शहर का भी एक स्वभाव होता है। जिसे हम कल्चर कहते हैं। हम मुम्बईवासी यहां के कल्चर से खुश हैं।

यहाँ पर लोग अकेलापन भी महसूस करते हैं, क्योंकि बच्चे बाहर नौकरी के लिए चले जाते हैं और रिश्तेदार दूर रहते हैं। ऐसे में यहाँ पर कई सोशल ग्रुप हैं जिसमें रहकर लोग समाज सेवा के साथ मिलना जुलना और मनोरंजन भी करते हैं। हमारा 'फेमिना ग्रुप' इसका उदाहरण है। हर समस्या का समाधान निकालना भी यहाँ के लोगों की विशेषता है। मुम्बई को 'मोहमयी नगरी' भी कहा है। अन्त में-

**नजर को बदलो, नजारे बदल जाएंगे।
सोच को बदलो, सितारे बदल जाएंगे**
यहाँ पर आके देखो, जीवन बदल जाएगा।

धन्यवाद, जय हाटकेश

-उषा ठाकोर, मुम्बई

विवाह संस्कार में सात वचन

भारतीय संस्कृति में विवाह संस्कार का विशेष महत्व है। इस पवित्र बंधन से वर कन्या के जीवन की नई शुरुआत होती है।

सनातन धर्म के अनुसार वैवाहिक जीवन दोनों की पूर्णता का प्रतीक है। ऋषिखेत केतु ने वैदिक काल में सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा के लिए विवाह पद्धति का प्रचलन किया। इससे पूर्व कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री से यौन संबंध बनाकर संतानोत्पत्ति कर सकता था। एक जानवरों जैसा काम जो कि मानवता से परे है। परवर्तीकाल में ऋषियों ने इसे चुनौती दी। फलतः वैवाहिक सम्बन्धों की शुरुआत हुई। इसमें कन्या गृहस्थी को खुशहाल और सुखी सम्पन्न रखे इसके लिए अपने जीवन साथी को सात वचनों में आबद्ध करती है-

सात वचनों में पहला वचन

तीर्थव्रतोद्यापन यज्ञ दान मया सह त्व यदि कान्तकुर्याः।

वामांगमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्य प्रथम कुमारी।।

कन्या कहती है कि स्वामी तीर्थ, व्रत, उद्यापन, यज्ञ, दान आदि शुभ कर्म तुम मेरे साथ ही करोगे। तभी मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ।

दूसरा वचन

हव्यप्रदानैरमरात् पितृश्वं कव्यं प्रदानैर्यदि पूजयेथाः।

वामांगमायामि तदात्वदीयं जगाद कन्या वचनं द्वितीयकम् ।।



कन्या वर से कहती है कि यदि तुम हव्य देकर देवताओं को और कव्य देकर पितरों की पूजा करोगे, तब ही मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ यानी पत्नी बन सकती हूँ।

तीसरा वचन

कुटुम्बरक्षभरणं यदि त्वं कुर्याः पशूनां परिपालन च।

वामांगमायामि तदात्वदीय जगाद कन्या वचनं तृतीयम् ।।

कन्या वर से कहती है कि यदि तुम मेरी व परिवार की रक्षा करो तथा घर के पालतु पशुओं का पालन करो तो मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ।

चौथा वचन

आयं व्ययं धान्य धनादिकानां पुष्टवाँ निवेश प्रगृहं निदध्याः।

वामांगमायामि तदा त्वदीय जगाद कन्या वचन चतुर्थकम् ।।

चौथे वचन में कन्या वर से कहती है कि यदि तुम अपने धन-धान्य का व्यय मेरी सहमति से करोगे तो मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ।

पांचवा वचन

देवालयारामतडाग कूपं विदध्याः यदि पूजयेथाः।

वामांग मायामि तदा त्वदीयं जगाद कन्या वचन पंचमम् ।।

पांचवे वचन में वह वर से कहती है कि तुम यथा शक्ति देवालय, बाग, कुआं, तालाब, बावड़ी बनवाकर पूजा करोगे तो मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ।

छठा वचन

देशान्तारे वा स्वपुरान्तरे वा यदा विदध्याः क्रयविक्रये त्वम् ।

वामां गमायामि तदा त्वदीयं जगाद

कन्या वचनं षष्ठम् ।।

इस श्लोक में कन्या वर से कहती है कि यदि तुम अपने परिवार से दूर धन अर्जन के लिए जाओगे तो क्या मैं तुम्हारे वाम अंग में आ सकती हूँ।

सात वचन और अंतिम वचन

सातवां और अंतिम वचन लेती है कि यदि तुम जीवन में कभी पराई स्त्री को स्पर्श नहीं करोगे तो मैं तुम्हारी वामांग यानी पत्नी बन सकती हूँ।

इस प्रकार इन सात वचनों में पति-पत्नी के बीच एक जुड़ाव करने की बात छुपी है, पत्नी का स्थान हमेशा पति के वाम अंग में होता है। जब विवाह की पूर्व बैला में कन्या को पुरुष के दाएं हाथ की तरफ बिठाया जाता है जब विवाह हो जाता है तब बाएँ हाथ की तरफ बिठाया जाता है। इस प्रकार वचनों का बन्धन मन को छू जाने वाला होता है व सात्विक प्रवृत्ति को संकेत करता है हम जन्म जन्मान्तर तक साथ निभाने की प्रेरणा इन वचनों से ही लेते हैं।

-रश्मि मेहता

श्रीमती नर्मदादेवी नागर, राऊ

स्व.श्री श्री गोविन्दजी नागर की धर्मपत्नी एवं स्व.सुभाष नागर, अनिल नागर, राधिका नागर की पूज्य माताजी श्रीमती नर्मदादेवी (बबनाबाई) का स्वर्गवास 10 जुलाई 2015 को हो गया। कर्तव्य परायण एवं हंसमुख श्रीमती नर्मदादेवी नागर हाल ही में अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री सुभाष नागर के देहावसान से द्रवित थी, सम्भव है कि उनके देहावसान का दुख सहन न करने के कारण ही इतने अल्प समय में उन्होंने अपनी देह त्याग दी। परमपिता परमेश्वर 'माँ' को अपने चरणों में स्थान प्रदान करने की कृपा करें।

समाज को समर्पित व्यक्ति थे पं. मणिशंकर त्रिवेदी (दादाजी)

कोई भी शहर अपनी औद्योगिक व्यवसायिक राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक या धार्मिक विरासत लेकर जीवित रहता है। उज्जैन चूँकि धर्म नगरी है इस लिए यहाँ धार्मिक चेतना के कही पुण्यवान सर्राहक हुए हे ऐसे ही एक संवाहक थे पंडित श्री मणिशंकर त्रिवेदी



सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों को उज्जैन शहर एवं कही नगरी में सम्पन्न करवाते रहे। पंडित त्रिवेदी ने नागर समाज उज्जैन के अध्यक्ष पद पर रहते हुए नागर समाज के उत्थान के लिए भी कई कार्य किये। उनके मार्गदर्शन में समाज के सफल सामूहिक विवाह समारोह आयोजित हुए। हाटकेश्वर देवालय ट्रस्ट को पुनः जीवित करते

अवतिका नगरी में कोई भी धार्मिक सामाजिक कार्य हो तो पंडित मणिशंकर त्रिवेदी को याद किया जाता रहा था और आज भी किया जाता है।

देवास जिले के सोनकच्छ तहसील के पीपलरवां ग्राम में पंडित दुर्गाशंकर त्रिवेदी (नागर) के यहाँ 1935 में जन्मे पंडित मणिशंकर त्रिवेदी की प्राथमिक शिक्षा के बाद मिडिल गुना जिले के चाचौड़ा से तथा मीट्रिक एवं डिग्री की इंदौर से उत्तीर्ण की।

1990 में सेवा निवृत्त हो कर पंडित त्रिवेदी

हुए उन्होंने उर्दूपुरा नागर धर्मशाला और देवालय के निर्माण में सहयोग प्रदान किया। आप संस्कृत भारती के जिला अध्यक्ष सरस्वती शिशु मंदिर उज्जैन के उपाध्यक्ष श्री अवतिका गीता विद्या पीठ के अध्यक्ष श्री विश्वगीता प्रतिष्ठान के सचिव जनकल्याण समिति सेवाश्रम के सचिव संत सत्कार समिति के उपाध्यक्ष श्री विशाला वेद विद्या महासभा के पितृ पुरुष थे।

ऐसे पितृ पुरुष को हम सबका नमन

-अंकुश त्रिवेदी उज्जैन,
9977891389

श्री अशोक नागर ग्राम कनवासा

ग्राम कनवासा मे पं प्रभुदयाल नागर, पं. कैलाश नागर के अनुज व अभिषेक, अक्लेश के पूज्य पिताजी श्री अशोक नागर का आकस्मिक निधन श्री नागर शान्त स्वभाव व मुस्कुराकर रहने व सभी दुख सुख मे जाकर अपनी उपस्थिति देना व उनको सही राह बताना इसी के लिये जाने जाते थे। श्री नागर के दो पुत्र हैं एक 11 वर्ष व दूसरा 16वर्ष हैं। श्री नागर की धर्मपत्नी का 8वर्ष पहले किसी बीमारी के कारण स्वर्गवास हो गया था भगवान उनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति दें।



शोकाकुल-पं प्रभुदयाल नागर, पं. कैलाश नागर, पं मुकेश नागर, पं अभिषेक नागर, अक्लेश नागर, पियुष, पं मुकेश पौराणिक, रन्धर्भवर

माँ की यादें चित्रमय हो जाती हैं।

स्व.श्रीमती संध्या पी.जोशी

अवसान 1 अगस्त 1992

23वां पुण्य स्मरण दिवस

कर्तव्य निष्ठ, समाज सेवा, सद्व्यवहारिक सरल, हंसमुख व्यक्तित्व आपका वरद हस्त बना रहे

श्रद्धावनत- जोशी, नागर, जाधव, तिवारी, शर्मा परिवार
-पी.आर. जोशी
इन्दौर

पुण्य तिथी

प्रभुमिलन- 13-8-2010

स्व.श्रीमती कान्तादेवी नागर आपके पांचवे पुण्यस्मरण पर समस्त नागर परिवार आपको नमन करता है।



श्रद्धावनत-

पति-ओमप्रकाश एस. नागर
पुत्र-पुत्रवधू- दीपिका-जितेन्द्र, पौत्री- टीशा, पौत्र- उत्कर्ष, देवास



स्व.श्रीमती सरस्वतीदेवी शर्मा

पुण्य स्मरण

स्व.श्रीमती सरस्वतीदेवी शर्मा

पत्नी स्व.श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, माकड़ोन

21 अगस्त 1996

श्रद्धावनत -

मुरलीधर शर्मा, महेन्द्र कुमार शर्मा,

विजय शर्मा एवं शर्मा परिवार, माकड़ोन

मो. 9926667488, 9424815705



मातृदेवो भव...पितृदेवो भव...

भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देवता कहा गया है:-

मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।

भगवान गणेश माता-पिता की परिक्रमा करके ही प्रथम पूज्य हो गये ।
ये न भूलो कि माता-पिता ने हमारे पालन-पोषण में कितने कष्ट सहे हैं!

कभी अपने माता-पिता का तिरस्कार नहीं करना ।

वे हमारे लिए सदैव आदरणीय हैं ।

हमें माता-पिता की सेवा कर इतना सब-कुछ मिला,
जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते ।



स्व.पं. बद्रीनारायणजी नागर स्व.चन्द्रकांतादेवी नागर

28 अगस्त

23 अगस्त

श्रद्धावनत-

अ.सौ.सरला-पं. ओमप्रकाशजी नागर, उज्जैन

अ.सौ. सावित्री-पं. लक्ष्मीकांतजी मेहता, इन्दौर

अ.सौ. सरोज-पं. कैलाशजी नागर (गुरुजी), इन्दौर

अ.सौ. ललिता-पं.दिनेश नागर, अरोलिया, आष्टा

अ.सौ. रजनी-शैलेन्द्र नागर,

ऋतु नागर, निवाई

अ.सौ.नविता-पं.विवेक मेहता, शाजापुर

आकाश-सौ.परा, अन्तरिक्ष, अभिज्ञान नागर

एवं समस्त नागर परिवार अरोलिया (आष्टा), इन्दौर

**29 वी पुण्यतिथि
पर शत-शत नमन**



नन्दी माँ

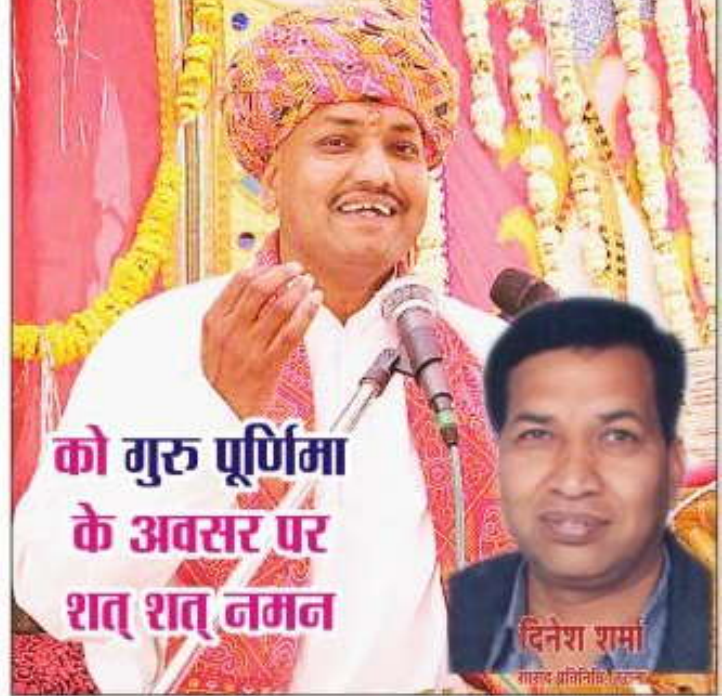
धर्मपति-स्व. श्री गणपतजी शर्मा
देहवसान : 24-08-1986

श्रद्धावन्त : प्रकाश शर्मा, कुसुम शर्मा, भावना शर्मा,
गीरव शर्मा, मेघा-विशाल जोनी, दिव्यांशु शर्मा, कृति शर्मा
एवं भीरसा मायका परिवार



मेघाश्री मेडिकोज परिवार
स्टेशन रोड, राऊ (इन्दीर)
मो. : 98932-57273

**मालव माटी के लाल
पं. श्री राजेश्वरजी नागर**



**को गुरु पूर्णिमा
के अवसर पर
शत् शत् नमन**

दिनेश शर्मा
साक्षर प्रतिनिधि राऊ

पुण्य स्मरण



स्व. श्रीमती मणीबाई गोपालजी मेहता

हर दम हमें अहसास है,
आप दूर रह कर भी हमारे पास हैं
आशीर्वाद दो कि हम चलते रहें,
आपके दिग्वाए पथ पर बढ़ते रहे।
आपके द्वारा दिए गए उज्ज्वल संस्कार एवं
प्रेरणा ने सम्पूर्ण परिवार को एकता के सूत्र में बंधे रहें।

पुज्यनीय माताजी

स्व. श्रीमती मणीबाई गोपालजी मेहता

की पुण्यतिथि पर सादर नमन

26 अगस्त 2011

श्रद्धावन्त : संतोष-सौ. इन्दू मेहता (पुत्र-पुत्रवधू), विश्वास-सौ. निशा मेहता (पौत्र-पौत्रवधू)
पंकज-सौ. प्रतिक्षा मेहता (पौत्र-पौत्रवधू), पूजा मेहता, अनूज मेहता (पौत्री-पौत्र)
रितिक मेहता, श्रेयस मेहता (प्रपौत्र) एवं समस्त मेहता परिवार
मकोड़िया आम, उज्जैन, मो. 89825-63959



**जन्मदिन की
हार्दिक बधाई**

मोनिता शैलेश जोशी
(पूर्व पार्षद नगर पंचायत, राऊ)
20 अगस्त, 2012

जोशी परिवार, राऊ,
नागर परिवार, नागदा
मो. 9754237237

ॐ श्री श्री धारेश्वर महादेवाय नमः

जन्मदिन की बधाई

15 अगस्त 2015
**जयंतीलालजी
नागर**

9879095513

शुभेच्छुः
दीपक नावेल्टीझ परिवार
बड़ों का आशीर्वाद छोटों का प्रणाम
हम सभी सदस्यों की तरफ से
अहमदाबाद



www.NvisTech.com



आओ मिलकर हाथ बढ़ाएँ
Nvis के साथ पर्यावरण बचाएँ



सौर उत्पाद की उपयोगिता:

- स्वच्छ व प्राकृतिक ऊर्जा
- चलाने की लागत नहीं
- सौर पैनल की आयु लगभग 20 वर्ष
- बिना चिड़ मिर्गिरता के

एलईडी उत्पाद की उपयोगिता:

- एलईडी उत्पाद की तुलना में 80% ऊर्जा बचत
- कम की बचत
- अधिक टिकाऊ
- लंबे समय तक चले (आयु >30000 Hrs.)
- अलपूर एवं टिकाऊ

 एल.ई.डी. बल्ब	 एल.ई.डी. ट्यूब लाइट	 एल.ई.डी. डाउनलाइट	 एल.ई.डी. स्ट्रिप लाइट	 एल.ई.डी. गार्डन लैम्प
 एल.ई.डी. प्लेट लाइट	 एल.ई.डी. सीटिंग लाइट	 एल.ई.डी. स्टीट लाइट	 एल.ई.डी. हार्डि लाइट	 एल.ई.डी. फ्लैमपूफ लैम्प
 एल.ई.डी. टेबल लैम्प	 मॉल्टीटी ट्रेप	 सौर एलईडी पोर्टे लैम्प	 सौर पॉवर बैंक	 सौर एलईडी टॉर्च

सौर उत्पाद



Designed and Manufactured in India by -
Nvis Technologies Pvt. Ltd.
141-A, Electronic Complex, Pardesipura, Indore - 452 010 India
Tel.: 91-731-4211500, Telefax: 91-731-4202959, E-mail: info@nvistech.com

Dealer Enquiry Solicited
Nitin Nagar - 99265-95626

जन्मदिवस पर बधाईयाँ

प्रिशा

(चुशु)

सुपुत्री-डॉ.पियुष-पुर्णिमा व्यास

29 अगस्त

शुभेच्छु :

व्यास परिवार,

भोपाल

नागर परिवार

जयपुर

